साबरमती गुरुकुलम्
की
ऐतिहासिक सफलता

उज्जैन में अंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का आयोजन

*** सम्मेलन के उद्घाटक ***

माननीय डॉ. मोहनराव भागवतजी

सरसंघचालक - राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (R.S.S.)

*** सम्मेलन के संरक्षक ***

माननीय प्रकाश जावडेकरजी

मानव संसाधन विकास मंत्री/शिक्षा मंत्री-भारत सरकार

*** सम्मेलन के आयोजक ***

भारतीय शिक्षण मंडल (नागपुर) अंतर्गत - गुरुकुल प्रकल्प

साबरमती गुरुकुलम् के उत्तम प्रयास का परिणाम

– आचार्य डॉ. दीपक कोईराला
एशोसिएट प्रमुख (गुरुकुल प्रकल्प–भारतीय शिक्षण मंडल)

आप सभी को विदित है कि देश स्वतंत्र तो हुआ परंतु स्व का तंत्र नहीं मिला। अतः आज तथाकथित आजादी के 70 वर्ष के पश्चात् भी इस देश में भ्रष्टाचार, भूखमरी, बीमारी, सामाजिक अस्थिरता, संवेदन हीनता, अपराध आदि दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं एवं संस्कारों का सतत पतन हो रहा है। इन सब विषयों को हम ध्यान से देखें तो कहीं–न–कहीं शिक्षा में पुनर्विचार की आवश्यकता दिखाई पड़ती है। क्योंकि हम सभी जानते हैं व्यक्ति, समाज, राष्ट्र वैसा ही होता है, जैसी उस देश की शिक्षा होती है।

आज की शिक्षा से शिक्षित भारत के कुछ राज्य 100 प्रतिशत साक्षर माने जाते हैं। जिन राज्यों में यह स्थिति है, वहाँ अधिकतम अनुपात में अपराध हो रहे हैं। कई समाचार पत्रों के सर्वे के अनुसार आज के शिक्षित युवा रोजगार एवं नौकरी के योग्य नहीं हैं। आज देश में सूचना–जानकारी के आधार पर शिक्षा दी जाती है और उसी को ज्ञान समझा जाता है।

साबरमती गुरुकुलम् पारंपरिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति कर रहा है

आज समाज शिक्षा का विकल्प तलाश रहा है। समय की मांग के अनुसार वर्तमान शिक्षा के विकल्प के रूप में साबरमती गुरुकुलम् पारंपरिक शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति कर रहा है और भारत की अपनी शिक्षा पद्धति अर्थात्, गुरुकुल शिक्षा पद्धति को देश भर में समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का अभूतपूर्व प्रयास कर रहा है। इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति के विषय में समाज के साथ–साथ सरकार ने भी चिंतन प्रारंभ किया है। केवल भारत ही नहीं, भारत के पड़ोसी राष्ट्र– नेपाल, भूटान, बर्मा आदि देशों ने भी इस पद्धति का सम्मान करते हुए इस शिक्षा के आंदोलन में हर प्रकार से सहयोग करने हेतु अपने आपको कटिबद्ध बताया है।

उज्जैन में अंतर्राष्ट्रीय विराट गुरुकुल सम्मेलन के आयोजन में संरक्षक : माननीय प्रकाशजी जावड़ेकर –(मानव संसाधन विकास मंत्री/शिक्षा मंत्री–भारत सरकार), उद्घाटक – माननीय सरसंघ चालक : डॉ. मोहनरावजी भागवत (आर.एस.एस.) एवं मध्यप्रदेश सरकार के सहयोग में सम्पन्न होने जा रहा है।

उपरोक्त कार्यक्रम एवं शिक्षा के आंदोलन में साबरमती गुरुकुलम् का प्रेरणा स्रोत के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

उद्देश्य

विराट गुरुकुल शिक्षा सम्मेल का उद्देश्य गुरुकुल शिक्षा को युगानुकुल रूप में पुनः समाज में प्रस्थापित करना एवं गुरुकुल शिक्षा को एक बार फिर से मुख्य धारा की शिक्षा बनाना है।

इस सम्मेलन में अब नेपाल, भूटान, बर्मा, इन्डोनेशिया, श्रीलंका आदि विभिन्न देशों ने भी सम्मिलित होने की अभिलाषा व्यक्त की है। यह हमारे लिए अत्यंत गौरव की बात है।

मुख्य मार्गदर्शक

मा. मुकुलजी कानिटकर

अखिल भारतीय संगठन मंत्री – भारतीय शिक्षण मंडल–नागपुर

सहयोग

आचार्य डॉ. दीपक कोईराला

प्रधानाचार्य – गुरुकुलम् – साबरमती

दिनांक : 28-29-30 अप्रेल 2018 (त्रि-दिवसीय कार्यक्रम) वैशाख पूर्णिमा

स्थल : महर्षि सांदीपनि वेद प्रतिष्ठान, उज्जैन, (मध्यप्रदेश)

- अक्षय जैन : तंत्री-संपादक - दाल-रोटी प्रकाशन

गुरुकुलम् की इस अपार और असाधारण
उपलब्धि का श्रेय भारत की
प्राचीन शिक्षा प्रणाली को जाता है।

उत्तमभाई के जज्बे को सलाम

जिनके कारण
एक सुनहरे भारत के
निर्माण का रास्ता
दिखाई दे रहा है।

'मेकॉले-पुत्र' नहीं 'महर्षि-पुत्र' का निर्माण

हाहाकारी विश्व को एक संदेश

साबरमती का गुरुकुल विनाशकारी मैकाले की विरासत के विरुद्ध जबरदस्त चुनौती बन गया है।

देश को वैकल्पिक शिक्षा का रास्ता दिखाने का श्रेय उत्तमभाई को जाता है।

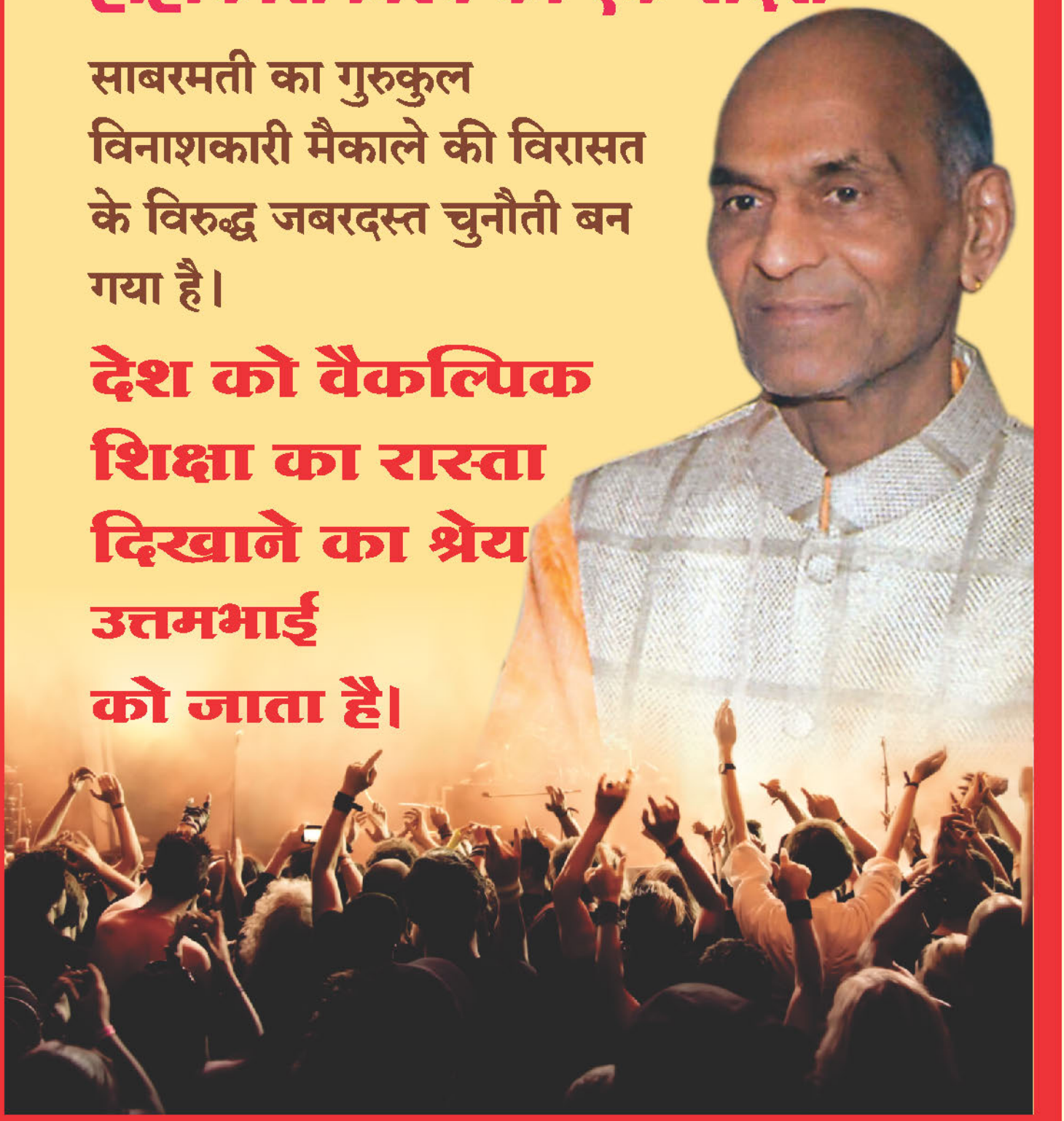

केन्द्रिय शिक्षामंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी के साथ शुभेच्छा मुलाकात...

श्री प्रकाश जावडेकरजी को गुरुकुलम्-साबरमती पधारने हेतु सांगानेरी कागज में हस्त लिखीत आमंत्रण पत्र प्रस्तुत करते हुए संचालक श्री अखिल उत्तमभाई शाह

श्री हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठाशाला - साबरमती गुरुकुलम् के संस्थापक एवं कुलपति श्री उत्तमभाई जवानमलजी शाह के सुपुत्र संचालक श्री अखिलभाई शाह, प्रधानाचार्य डो. दिपकभाई कोईराला, भारतीय शिक्षण मंडल के संगठन मंत्री श्री मुकुलजी कानिटकर एवं शिक्षा क्षेत्र के नामांकित विद्वानो की भारत सरकार के केन्द्रिय मानव संसाधन विकास मंत्री (शिक्षामंत्री) श्री प्रकाश जावडेकरजी के साथ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का भारत वर्ष में विस्तार एवं पुनः प्रतिष्ठा हेतु शुभेच्छा मुलाकात...

।। सा विद्या या विमुक्तये ।।

।। गुरुकुलम् ।।

हेमचन्द्राचार्य संस्कृत–पाठशाला

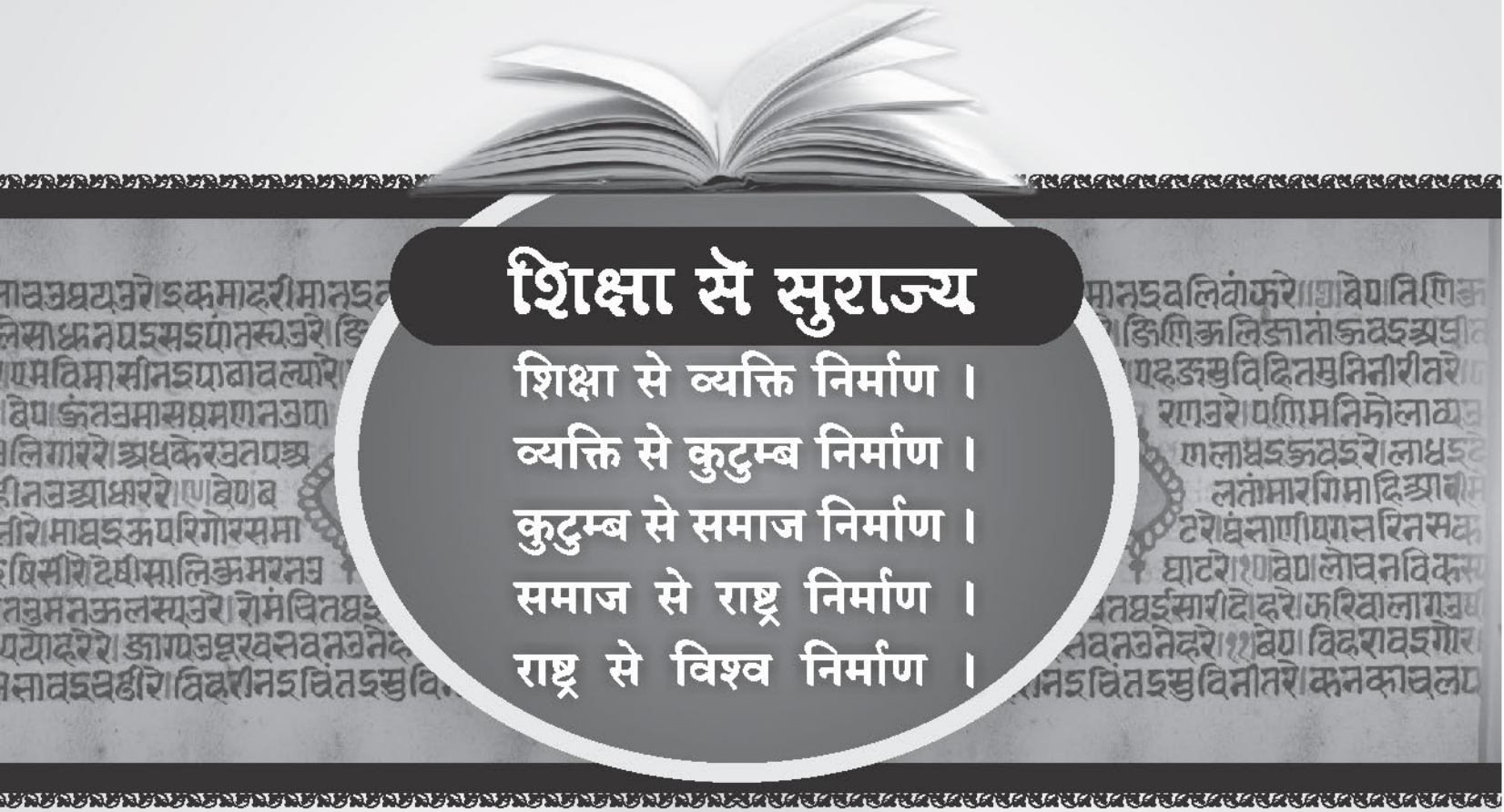

शिक्षा से सुराज्य

शिक्षा से व्यक्ति निर्माण ।
व्यक्ति से कुटुम्ब निर्माण ।
कुटुम्ब से समाज निर्माण ।
समाज से राष्ट्र निर्माण ।
राष्ट्र से विश्व निर्माण ।

संस्कारी, समृद्ध एवं सुखी राष्ट्र-निर्माण के
महायज्ञ में आप भी सहभागी बन सकते हैं।

प्रकाशन मिति : आश्विन शुक्ल १५, दि. ५-१०-२०१७, गुरुवार, षष्ठम् आवृत्ति : प्रतियाँ ५०००

हीरा जैन सोसायटी के पास, रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद – ३८०००५
दूरभाष : 079-27501944, 9033543543, 8866020402
/gurukulamshiksha +91-7046435144 #gurukulamshiksha
www.gurukulamshiksha.org info@gurukulamshiksha.org

२०० वर्ष पूर्व
अंग्रेजो द्वारा नष्ट की गई
प्राचीन-गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का
पुनः उदय

हमारा संकल्प

भारत-पुनर्निमाण

गरीबी एवं महंगाइ बेकारी एवं बीमारी
भय एवं भ्रष्टाचार व्यसन एवं प्रदूषण
व्यभिचार एवं बलात्कार
हिंसा एवं ऋण
से मुक्त

श्रेष्ठ भारत-समर्थ भारत

अनुक्रमणिका

क्रम	विगत	लेखक	पृष्ठ
१.	भूमिका	– संचालक गण	०५
२.	हमारा प्रयोजन...	–	०९
३.	गुरुकुलम् मे अध्ययन और प्रशिक्षण	–	१०
४.	गुरुकुलम् मे शिखाये जानेवाली कला	–	११
५.	गुरुकुलम् मे शिखाये जानेवाली कुशलता	–	१२
६.	गुरुकुलम् की दिनचर्या	–	१३
७.	गुरुकुलम् की झलक	–	१४
८.	भारतीय शिक्षण मण्डल नागपुर द्वारा आयोजित आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि	– डॉ. दीपक कोईराला	१६
९.	अपने ही हाथों अपना नाश ! (शिक्षा पुस्तक की प्रस्तावना में से)	– पू. पंन्यास चंद्रशेखरविजयजी	२०
१०.	शिक्षा (पुस्तक का अंश) अंग्रेजों के जूठ	– श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु	२१
११.	नीति, धर्म और अध्यात्म विहीन शिक्षा पद्धति भीषण अभिषाप है।	– श्री शंकराचार्यजी (पुरी – उडीसा)	२९
१२.	श्री कृष्णामाचार्यजी महाराज का एक पत्र	– श्री कृष्णमाचार्यजी	३०
१३.	अखबारों एवं विविध कलाओं की सचित्र प्रस्तुति...		३३-६४
१४.	प्रवचन	– डॉ. वेद प्रताप वैदिकजी	६५
१५.	प्रवचन	– डॉ. प्रविणभाई तोगडियाजी	६८
१६.	अपना बचपन भूल गए बच्चे जब स्कूल गए...	– दाल-रोटी में से साभार	७१

१७.	शिक्षा को धर्मानुसारी बनाने की आवश्यकता है...	– इन्दुमतिबेन काटदरे	७२
१८.	प्राच्य विद्या के नए पंडित	– 'इंडिया टुडे' से साभार	७३
१९.	आधुनिक शिक्षा को कडी चुनौती	– विनीत नारायण	७५
२०.	पूरे भारत में शिक्षाविदों और प्रवासी भारतीयों के आकर्षण का केन्द्र बनी 'हेमचंन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला'	– मनोज भारत (शिरसा–हरियाणा)	७६
२१.	अंग्रेजी शिक्षण–पद्धति को आईना दिखाता – गुरुकुलम्	– मनोज ज्वाला, (रांची–झारखंड)	७८
२२.	पढ़–लिख करके क्या करेगा ओ मूरख नादान ?	– अक्षय जैन	८०
२३.	भाषा अंग्रेजों की ! शिक्षा अंग्रेजों की	– अक्षय जैन	८१
२४.	ऐसे माँ–बाप, माँ–बाप कम दुश्मन ज्यादा होते हैं...	– मुनि श्री प्रसन्न सागरजी	८१
२५.	तुफ्रान आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है,	– नंदकिशोर राजगढ़िया	८२
२६.	आज तो जो विद्या की अर्थी उठा दे, वही विद्यार्थी	– अनंत श्रीमाली	८२
२७.	न्यूयार्क का अब्राहम लिंकन स्कूल	– जे. के. संघवी	८३
२८.	स्कूल में बाजार...	– अक्षय जैन	८४
२९.	अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा लूट मचाने वाली...	– अक्षय जैन	८५
३०.	स्वाभिमान और समृद्धि की कुंजी है स्थानीय संसाधन और स्थानीय कौशल	– अतुल जैन	८८
३१.	बापूजी का गुरुकुलम् सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनोखी पहचान बनायेगा	– आदित्य प्रसाद	९०
३२.	भारतवर्ष में गुरुकुल कैसे खत्म हो गए ?	–	९१
३३.	कम पढ़े तो गाँव छोड़ दे, ज्यादा पढ़े तो देश छोड़ दै।	–	९२
३४.	वेंटीलेटर पर हिन्दी	–	९३
३५.	सुराज्य के महाअभियान में शामिल होइए	–	९४
३६.	संपर्क सूत्र	–	९६

भारत अपने उद्‌गम के उषःकाल से ही ज्ञान की साधना में व्यस्त और 'रत' (मग्न) रहा है। कदाचित्, इसी कारण से ही उसका नाम 'भा' यानी 'प्रकाश' (ज्ञानरूपी प्रकाश) में 'रत' अर्थात् 'भारत' पड़ गया ।

भूमिका...

अपनी विलक्षण शिक्षापद्धति के बलबूते पर ही भारत ने हजारों वर्षों तक विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व किया है। तदुपरांत उद्योग–व्यवसाय, कला–कौशल्य और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में भी वह अग्रगण्य रहा है।

भारतीय ऋषियों ने पदार्थ की रचना का विश्लेषण किया और आत्मतत्त्व का भी साक्षात्कार किया। उन्होंने तर्क, व्याकरण, खगोलशास्त्र, दर्शनशास्त्र, तत्त्वज्ञान, औषधिविज्ञान, शरीर–रचना–विज्ञान और गणित जैसे गहन विषयों की रचना की। भारतीय शिक्षा का वटवृक्ष उन्होंने धर्म, नीति और ज्ञान के खाद और जल से सींचा था। इसलिए ही तत्कालीन समाज धार्मिक, नीतिमान् और बुद्धिमान् बन सका था। भारतीय समाज के नैतिक गुणों के विषय में ई. स. पूर्व ३०० में ग्रीक राजदूत मेंगस्थनीज ने लिखा है, 'कोई भी भारतीय असत्य बोलने का अपराधी नहीं है। सत्यवादिता और सदाचार उनकी दृष्टि में अतीव मूल्यवान वस्तु है।' इस प्रकार भारतीय शिक्षापद्धति द्वारा भारत ने केवल ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं, परंतु नीतिमत्ता, प्रामाणिकता और सदाचार की दृष्टि से भी नेत्रदीपक विकास किया था।

हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रूप में गुरुकुलम् एवं पाठशालाएँ केन्द्र स्थान पर थे। सांदीपनि ऋषि के तपोवन में श्रीकृष्ण और सुदामा ने शिक्षा प्राप्त की थी। वशिष्ठ और विश्वामित्र ऋषि के विद्याश्रम भी प्रसिद्ध थे। तप–स्वाध्याय में निरत ऐसे ऋषि ही बच्चों को शिक्षा प्रदान करते थे। उन ऋषियों के संस्कारित जीवन की महक गुरुकुल के सभी विद्यार्थियों के जीवन को सुगंधित कर देती थी। ऐसी शिक्षा पद्धति के विकसित उदाहरण थे; विश्वप्रसिद्ध नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्व विद्यालय ! इसके अलावा वल्लभी, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी, मिथिला, काशी, कश्मीर और उज्जैन आदि विश्वविद्यालय भी विख्यात शिक्षा केन्द्र थे।

तत्कालीन राजा–महाराजा – श्रेष्ठिजनों ने अपनी विपुल सम्पत्ति का अनुदान दे कर भारत के ऐसे विराट सरस्वती मंदिरों की स्थापना करने में अपना सहयोग प्रदान किया था। ऐसे विश्वविद्यालयों में हजारों की संख्या में विद्यार्थी विविध विषयों का अभ्यास करते थे और विश्वविद्यालय की कीर्तिपताका समूचे विश्व में लहराते थे।

भारत के विश्वविद्यालयों में भारत के ही नहीं बल्कि तिबेट, चीन, जापान, कोरिया और श्रीलंका जैसे देशों के भी ज्ञान–इच्छुक विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे।

हमारे प्राचीन भारत में शत-प्रतिशत साक्षरता थी। भारत के हर गाँव में एक पाठशाला थी, जहाँ पर सभी वर्ण के बालक एवं बालिकाएँ प्राथमिक अक्षरज्ञान और धर्मनीति की शिक्षा प्राप्त करते थे।

पाठशाला चाहे वह गुजरात की हो या बंगाल की, काश्मीर की हो या तमिलनाडु की, सभी पाठशालाओं की शिक्षा का एकमेव विशिष्ट उद्देश्य था- 'मानव के व्यक्तित्व का उच्चतम विकास' । भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में भारतीय विद्यालयों ने ऐसे ज्ञान का आविष्कार किया की जिस के आगे समूचे विश्व के दार्शनिकऔर वैज्ञानिक भी नतमस्तक थे।

हमारे गुरुकुलों में ऋषि-महर्षिओं ने पुरुषों की ७२ कलाओं एवं स्त्रीओं की ६४ कलाओं का प्रशिक्षण देकर भौतिक क्षेत्र में भी सभी को सामर्थ्यवान् बना दिया था। सिर्फ इतना ही नहीं, उन कलाओं को धर्मकला से नियन्त्रित करके उन्हें आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर भी किया था।

आज से २०० वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी भी देश में नहीं दी जाती थी। अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या प्रचार के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी माना जाता था।

लेकिन मनुष्य के आंतरिक गुणों को उजागर कर के उस के दोषों का निर्मूलन करनेवाली महान् भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा। मुसलमानों के शासनकाल के दौरान भारत के शिक्षाकेन्द्र, गृहशाला, पाठशाला, विद्यालय इत्यादि नष्ट-भ्रष्ट कर दिए गए। फिर भी मुस्लिम शासक-बाबर से लेकर औरंगजेब तक - भारतीय शिक्षण व्यवस्था को इतना नुकसान नहीं पहुँचा सके, जितना अंग्रेजों ने पहुँचाया। अंग्रेजों ने मुसलमान शासकों की तरह न तो पाठशाला जलाई, न विद्यालय गिरा कर ध्वस्त किये, परंतु जैसे कोई गुप्तचर गुप्त वेष में शत्रु राज्य में जासूसी करने के लिए प्रवेश करता है, वैसे ही भारत की शिक्षाप्रणाली में प्रविष्ट हुए।

अंग्रेजों की इस कुटिलनीति का प्रधान चालबाज खिलाड़ी था मेकोले। उस की अनर्थकारी आधुनिक शिक्षाप्रणाली की सफलता के परिणाम दिखाते हुए उसने कहा था कि, 'अंग्रेजी शिक्षापद्धति द्वारा भारतीय केवल नाम का ही भारतीय रहेगा, शरीर से ही भारतवासी होगा, किन्तु मन से, विचार से, वचन और आचरण से वह पूरा अंग्रेज ही बन जायेगा। 'इस विचार को, पद्धति को, क्रियान्वित करने के लिए प्राचीन पाठशाला (गुरुकुलम्) पद्धति का विनाश करना अनिवार्य था। इसलिए शकुनी नीति से-गाँव गाँव में चल रहे विद्यालय बंद करवा दिए। प्राचीन शिक्षा का सामाजिक एवं राजकीय मूल्य ही नष्ट कर दिए। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षा पद्धति नष्टप्रायः हो गई। फलतः भारत में उत्तम मनुष्य, राष्ट्रभक्त, नीतिमान्, प्रामाणिक व्यक्ति दुर्लभ हो गये और अंग्रेजी शिक्षापद्धति के ढाँचे में ढले हुए निकृष्ट, व्यसनी, व्यभिचारी, आलसी, रोगी और अप्रामाणिक व्यक्ति, जो परोक्ष रूप से अंग्रेजीयत के समर्थक थे, ऐसे लोग देश का, समाज का नेतृत्व करने लगे तो रही-सही प्राचीन शिक्षाप्रणाली भी नेस्तनाबूत हो गई।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असम्भव है।

अतः इस परम्परा को पुनः प्रस्थापित करनी ही चाहिए। तभी, मेकोले–शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारे देश में आज जो दुर्दशा हुई है, उस से हम भारत को बचा पाएंगे।

वर्तमान की सभी समस्याओं का मूल आधुनिक शिक्षा–प्रणाली ही है। इस शिक्षा को लेने वाले जैसे–जैसे बढ़ते गए... वैसे–वैसे गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, महंगाई, अनीति, अपराध, आत्महत्याएं, भष्टाचार, व्यभिचार, अनाचार और बलात्कारों की संख्या बढ़ती गई। वायु, जल, जमीन, जंगल और जानवर सभी आज दूषित हैं। ऐसी भयावह दुर्दशा के सूत्रधार प्रायः मेकोले–शिक्षण प्राप्त शिक्षित ही होते हैं।

गुरुकुलम् का मंगल आरंभ–

मूल बेड़ा (राजस्थान) निवासी एवं हाल साबरमती (अहमदाबाद) में रहनेवाले श्री उत्तमभाई जवानमलजी शाह ने आधुनिक शिक्षा की भयंकरता एवं आर्य शिक्षण की कल्याणकारिता के विषय में सद्गुरुदेवों के द्वारा मूल्यवान् मार्गदर्शन प्राप्त किया।

और... राजनगर (अहमदाबाद)में प्रकाशपुंज समान गुरुकुलीय आर्यशिक्षापद्धति का पुनः उदय हुआ। पाश्चात्य जीवनशैली के कातिल जहर से संतानों को बचाने के लिए, पुरुषों की ७२ एवं स्त्रीओं की ६४ कलाओं पर आधारित आर्यशिक्षण ही श्रेष्ठ उपाय है, बस... इस पवित्र उद्देश्य और शुभ संकल्प के साथ, श्री उत्तमभाई ने आज से २३ वर्ष पहले अपने और अपने भाईओं के परिवार के पुत्र–पुत्रिओं को घर में ही रखकर आर्य–प्रशिक्षण देना प्रारंभ किया। उसमें सफलता प्राप्त हुई, तो एक कदम आगे बढ़कर वर्षों तक 'सिद्धाचल–वाटिका' (साबरमती) में अपने घर में २५–३० बच्चों को गुरुकुल–शिक्षापद्धति के अनुसार प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। इसके फलस्वरूप सुरत, मुंबई और अहमदाबाद में भारतीय संस्कृति को प्रकाशमान करने वाले अन्य गुरुकुलों का शुभारंभ हुआ।

और, पिछले ९ साल पहले निवासी एवं निःशुल्क 'हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्)' का सिर्फ १३ विद्यार्थिओं की संख्या के साथ, वि. सं. २०६५, मृगशीर्ष सुद त्रीज, रविवार, (दि. ३०–१२–२००८) के शुभ दिन पर साबरमती (अहमदाबाद) में प्रारंभ किया गया था। आज इस गुरुकुलम् की प्रेरणा व मार्गदर्शन से देश के विभिन्न क्षेत्रो में अनेक गुरुकुल शुरु हो चुके है।

'गुरुकुलम्' द्वारा 'मेकोले–पुत्र' नहीं 'महर्षि–पुत्र' का निर्माण –

'हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला' (गुरुकुलम्) आर्यशिक्षण प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ विकल्प है। यह संस्था आधुनिक विनाशकारी मेकोले शिक्षा–पद्धति से देश को मुक्त करवाने के लिए प्रयत्नशील है। व्यक्ति–निर्माण से कुटुम्ब–निर्माण, कुटुम्ब–निर्माण से समाज निर्माण, समाज निर्माण से राष्ट्र–निर्माण एवं राष्ट्र–निर्माण से विश्वनिर्माण करने में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है।

हम मानते हैं कि इस पाठशाला में से प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए विद्यार्थी 'मेकोले-पुत्र' नहीं किन्तु 'महर्षि-पुत्र' बनकर भारत को जगद्गुरु बनाने में अपना योगदान करेंगे।

'गुरुकुलम्' (हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला) का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी के चारित्र्य निर्माण के साथ-साथ सर्वतोमुखी विकास करने का है, उसके लिए उसे ऋषि-महर्षियों द्वारा प्रस्थापित पुरुषों की ७२ कलाओं और महिलाओं की ६४ कलाओं पर आधारित प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी 'ज्ञानी', 'गुणीयल', 'सक्षम', 'बुद्धिमान्' और 'चारित्र्यवान्' बनता है।

'गुरुकुलम्' द्वारा श्रेष्ठ प्रशिक्षण-

विद्यार्थीओं को इस पाठशाला में तत्वज्ञान, ईशभक्ति के संस्कारों के साथ-साथ संस्कृत-व्याकरण, न्याय शास्त्र, प्राकृत भाषा, गुजराती, अंग्रेजी, प्राचीन वैदिक गणित, आधुनिक गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, इतिहास, भूगोल, चित्रकला, रंगोळी, हस्त-लेखन कला, संगीत कला (गीत-नृत्य-वादन), नाट्यकला, वक्तृत्व-कला, जादु-कला, माटी-कला, पाक-कला के साथ-साथ शारीरिक कला-कौशल, योग-कराटे-जूडो-कुश्ती, लाठी-दाँव, जिम्नास्टीक, रोप मलखम, पोल-मलखम, स्वदेशी खेल, घोड़ा गाड़ी, घुड़सवारी आदि सिखाया जाता है।

इस प्रकार, इस पाठशाला में शिक्षा-विद्या प्राप्त करके प्रशिक्षित हुए विद्यार्थी जीवन का सर्वतोमुखी विकास पा कर इस देश के लिए एक प्रखर राष्ट्र-भक्त और संस्कृति-भक्त बनकर बाहर आएंगे।

धर्म-रक्षा, संस्कृति-रक्षा और राष्ट्र-रक्षा के श्रेष्ठ धर्मयज्ञ तुल्य हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला की प्रत्यक्ष मुलाकात लेने के लिए हमारा भावपूर्ण निमंत्रण है।

इस गुरुकुलम् को प्रत्यक्ष देखने के बाद आपकी.....

आँखें अहोभाव और आश्चर्य से सभर हुए बगैर नहीं रह पायेगी.....

लि. - संचालकगण

❖ हेमचन्द्राचार्य संस्कृत-पाठशाला (गुरुकुलम्) ❖

मानवजीवन के मूलाधार एवं विकास के प्रधान अंगरुप शिक्षा के बीज को बचाने जैसा पुण्यकार्य, सामाजिक कार्य एवं आध्यात्मिक कार्य अन्य नहीं हो सकता। क्योंकि शिक्षा से ही मानव में सदगुणों की पूर्णता पायी जाती है।

हमारा प्रयोजन...

- आधुनिक शिक्षा प्रणाली के सभी हानिकारक, बुरे और नकारात्मक पहलुओं से नई पीढ़ी को सुरक्षित बनाना है।

- वर्तमान शिक्षा पद्धति का भारतीयकरण और अध्यात्मकरण इस विद्याधाम का मुख्य उद्देश्य है।

- जैन दर्शन और भारतीय आर्य संस्कृति उनके मूल्य और प्रबंध के अनुसार विद्यार्थिओं का बौद्धिक, शारीरिक, वैचारिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं बहुमुखी विकास हो सके, ऐसी अध्ययन-अध्यापन-प्रणाली का संरक्षण, विकास, संवृद्धि एवं विनियोग इस विद्याधाम के महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं।

- अध्ययन-अध्यापन कार्य में गुरु की प्रमुखता और समाज में गुरूओं के गौरव को पुनः संस्थापित करना है।

- पुरुषों के लिये ७२ और महिलाओं के लिए ६४ कलाओं की शिक्षण पद्धति के माध्यम से धीरता, वीरता, विद्वत्ता, प्रज्ञाशीलता, चारित्र्यशीलता, राष्ट्रप्रेम, धर्मप्रेम, स्वनिर्भरता, साहसिकता, पराक्रमिता, नीडरता, स्वास्थ्य, उदारता, परोपकारिता, जीवदया, विनय, विवेक, व्यवहार-कुशलता, औचित्य, शीघ्र प्रत्युत्तर-क्षमता, शीघ्र निर्णय-शक्ति, नेतृत्व-क्षमता, दूरदर्शिता एवं श्रेष्ठ, समर्थ व्यक्तित्व धारण करने वाले नर-नारी का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है।

तक्षशिला व काशी विश्वविद्यालय के लिए किसी समय पहचाना जाने वाला हमारा देश अब अपने कत्लखानों के लिए विख्यात होने पर गर्व करेगा। ग्लोबलाईजेशन नये रोजगार देने के नाम पर हमारे बच्चों के हाथों में कसाई का छुरा थमा रहा है।

अध्ययन और प्रशिक्षण

विद्या

भाषाएँ	:	संस्कृत, प्राकृत, गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी।
जैन दर्शन और जैनाचार	:	षट् दर्शन, तत्त्व ज्ञान, आवश्यक सूत्र-अर्थ-रहस्य एवं क्रिया।
गणित	:	गणना की सरल और शीघ्र पद्धतियाँ, व्यवहारिक गणनाएँ।
आयुर्वेद	:	स्वस्थवृत्त (दिनचर्या-ऋतुचर्या-जीवनचर्या), चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांग हृदय, भाव प्रकाश इत्यादि ग्रंथों का अध्ययन।
ज्योतिष शास्त्र	:	ऋतु ज्ञान, पंचांग, राशि काल, मुहूर्त, चौघड़िये, होरा, प्रहर, चंद्र, योगिनी, सन्मुख काल, कुंडली, फलादेश, शगुन-स्वप्न संकेत विद्या, शारीरिक मुद्राओं का प्राथमिक ज्ञान, अष्टांग निमित्त इत्यादि का अध्ययन।
कौटिल्य का अर्थशास्त्र	:	संचालन (मेनेजमेन्ट) और नेतृत्व की प्रशिक्षण।
इतिहास	:	रामायण, महाभारत, जैन धर्म का इतिहास विभाग १ से ४ सहित और विश्व की सर्व परम्पराओं का ज्ञान।
आन्वीक्षिकी विद्या	:	न्याय विद्या (बुद्धि कथाएँ, शतरंज की क्रीडा, पहेलियाँ)
नीतिशास्त्र	:	चाणक्य का नीतिशास्त्र एवं विभिन्न नीतिकथाएँ।
वास्तुशास्त्र	:	गृहवास्तु, नगरवास्तु, मंदिरवास्तु, आधारवास्तु।
पदार्थ ज्ञान और सामान्य ज्ञान	:	द्रव्य, परमाणु, स्कन्ध, द्रव्य और स्कंध का रुपांतरण, द्रव्य के विभिन्न गुण और विश्व की वर्तमान गंभीर समस्याएँ।
विविध शास्त्र	:	शिल्प शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, रत्न शास्त्र, भूगर्भ-जल विद्या, तन्त्र शास्त्र, मन्त्र शास्त्र, यन्त्र शास्त्र, धातु शास्त्र, कृषि व पशु शास्त्र, कृषि इत्यादि १०० शिल्प, क्षेत्र विद्या (विश्व दर्शन-भूगोल) बृहद्क्षेत्र समास।
अध्यात्म विद्या	:	पतंजली योग दर्शन, अन्य योग-दर्शन, ध्यान, आत्मा का विकास क्रम, सम्यक्त्व व मुक्ति।
व्यवसाय विद्या	:	लेखांकन (हिसाब), लेन-देन, क्रय-विक्रय, उत्पादन व निर्माण, व्यवस्था व संचालन, प्रचार-प्रसार।

♦ अक्षर ज्ञान न तो शिक्षा का आरंभ है और न अंतिम लक्ष्य। वह तो उन अनेक उपायों में से एक है, जिनके द्वारा स्त्री-पुरुषों को शिक्षित किया जा सकता है। फिर सिर्फ अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना गलत है। – गांधीजी

कला

चित्रकला	:	रेखा–चित्र, आकृतियाँ, वास्तविक चित्र, चार्ली चित्र, व्यंग चित्र, छाया चित्र, रंगीन चित्र।
संगीतकला	:	गायन–विभिन्न रागों का ज्ञान व प्रशिक्षण।
		वादन – सितार, ढोलक–तबला, हार्मोनियम, डफ, मंजीरा, पखवाज, संतूर, वेणुवादन, वायलिन, सारंगी, जलतरंग, इत्यादि।
अभिनय /नाट्यकला	:	नृत्य (कत्थक, रास, दीवानृत्य, बांबुनृत्य, भांगडानृत्य, चामरनृत्य, झांझनृत्य इत्यादि) नाटक, एकांकी नाटक, संवाद, मुखमुद्राएँ और शारीरिक चेष्टाएँ।
संभाषण	:	वक्तृत्व, भाषण, कथन।
जादू कला	:	मूलभूत सिद्धांत व विभिन्न खेल।
पाक कला	:	उबालना, तलना, सेंकना, तडका लगाना, स्वास्थ्य अनुकूल भोजन बनाना।
सृजनकला	:	विविध चीज–वस्तुएँ बनाना एवं सर्जन करना।
सिलाई	:	विविध टांकों का ज्ञान, कांतना, चरखा चलाना।
शृंगार	:	शरीर–शृंगार, मंडप–शृंगार, गृह–शृंगार, मंच – शृंगार।
पठन	:	शीघ्र और प्रभावी पठन का अभ्यास।
लेखन	:	हस्तलेखन, लेख, निबंध कहानी, अहेवाल, योजनापत्र, भाषण, काव्य, नाटक , संवाद।
अन्य कला	:	गहूली, रंगोली, अतिथि सत्कार।

♦ आधुनिकता की इस दौड़ में आज समाज के पेशेवर अपराधियों से ज्यादा खतरा सफेदपोश अपराधियों से है। इस देश को चोरों, डकैतों से ज्यादा रईस और पढ़े–लिखे लोग लूट रहे हैं।

कुशलता -

साक्षरता विषयक– कुशलता	:	लेखन, पठन, श्रवण
शरीर संतुलन व प्रशिक्षण और क्रियाएँ	:	लाठीदाव, कुस्ती, जूडो, कराटे। रोप–मलखम, पोल–मलखम, जिम्नास्टिक क्रीडा सवारी– घुड सवारी, बैलगाड़ी, घोडागाड़ी इत्यादि चलाना।
सुश्रूषा विषयक	:	उपचार करना, मालिश करना, शेक करना, पट्टी बांधना, लेपन करना, पगचंपी, शरीर दबाना।
बंधन विषयक	:	विभिन्न किस्म की गांठ बांधना, फंदा बनाना, नाडा बांधना, बक्सा या बंडल बांधना, पैकेट बांधना, दवाई का पैकेट मोडना, इत्यादि।
रोज–ब–रोज की बातें	:	वस्त्र धोना, आसन बिछाना, आलमारी – पेटी को सजाना इत्यादि।
गौशाला विषयक	:	गौ दोहन, गौबर–थोपन को थेपना इत्यादि।
भक्ति विषयक	:	आरती उतारना, दिया तैयार करना, दिया जलाना, धूप करना, भगवान की अंगरचना करना इत्यादि।
आयोजन	:	संचालन विषयक – नेतृत्व, खरीदना, देखभाल करना, यात्रा प्रवास, कार्यक्रम–महोत्सव इत्यादि का आयोजन करना।
अन्य कुशलताएँ	:	स्वयं सेवक के लिए प्रशिक्षण (आफत–भूकंप–आग–बाढ़–बीमारी–मृत्यु के समय) आपातकालीन उपचार की तालीम, विविध राष्ट्रीय–सामाजिक–धार्मिक पर्वों की जानकारी–समझ, बाल–मेलों का आयोजन, अखबारों की जानकारी, उद्यापन–कार्य, मिट्टी–कार्य, जल संचय, ऐतिहासिक स्मारकों का प्रवास।

♦ शिक्षा से मेरा मतलब है - बच्चे या मनुष्य की तमाम शारीरिक और आत्मिक शक्तिओं का सर्वतोमुखी विकास। – गांधीजी

दिनचर्या

दिनचर्या आधुनिक विकृतियों से दूर जैन परम्पराओं के आचार–पालन के साथ और रासायनिक–जंतुनाशक रहित आहार के साथ व्यवस्थित की गई है।

- उत्तिष्ठ = ब्रह्म मुहूर्त में उठना।
- संस्कृत व धार्मिक पठन।
- प्रार्थना, ध्यान व प्राणायाम।
- शारीरिक कुशलताएँ (योग, व्यायाम, लाठी, दौड़ इत्यादि।)
- दर्शन एवं पच्चक्खाण।
- दंतमंजन, त्रिफलांजन, नवकारशी, गौ–दोहन, धारोष्ण दुग्धपान।
- अभ्यंग, स्नान व जिन पूजा।
- धार्मिक अध्ययन– सूत्रपाठ–सामायिक।
- मध्याह्न भोजन एवं वामकुक्षी।
- ज्योतिष, संस्कृत, गणित, चित्रकला, संगीत इत्यादि विभिन्न विषयों का अध्ययन।
- विभिन्न शारीरिक तालीम एवं क्रीडा।
- सायं भोजन– स्वैर विहार इत्यादि।
- दर्शन, संध्याभक्ति, आरति–मंगल दीपक।
- गायन–वादन, नाट्य, वक्तृत्व इत्यादि कला–कुशलताओं का प्रशिक्षण।
- शयन।

अंग्रेज चालबाज मेकोले ने ऐसी शिक्षण प्रणाली प्रस्थापित की जिसको आज तक कोई बदल नहीं सका। उसकी शिक्षा पद्धति के कारण भारत के लोग अपनी संस्कृति, धर्म एवं अपनी उत्तम समाज व्यवस्था से आप ही आप विमुक्त हो गए हैं। देश में आज अनेक देशी अंग्रेजी पैदा हो रहे हैं, जो कि श्वेत प्रजा के चालबाजों के हाथ के खिलौने बन गए हैं।

झलक

- निःशुल्क आवासीय प्रशिक्षण।
- बोझ रहित शिक्षा।
- मेकोले शिक्षा का प्रभावशाली विकल्प।
- सक्षम, सशक्त, अडिग, सौम्य, प्राज्ञ, नीडर, विनम्र, विवेकी, धैर्यवान् एवं चारित्रवान् व्यक्तित्व का निर्माण।
- विद्या, कला व कौशल का त्रिवेणी संगम।
- समग्र और सर्वांगी विकास।
- शुद्ध, विष से मुक्त (रसायनों और कीटनाशकों से रहित) संपूर्ण निर्दोष बल एवं स्वास्थ्य दायक आहार।
- खान–पान के लिए वर्षा ऋतु में प्राप्त दिव्य जल, वर्षा कालीन जल संचयन के लिए एक लाख लीटर क्षमता की टंकी।
- पात्र, वस्त्र, आसन, बैठक, शिक्षा, शयन आदि सभी की संपूर्ण भारतीय पद्धति से सुव्यवस्था।
- घुड सवारी, घोड़ा गाडी इत्यादि की प्रशिक्षण।

और अन्य बहुत कुछ.....!

- प्रत्येक समस्या आज की गलत शिक्षा की उपज है। आज देश–दुनिया की कोई भी समस्या ऐसी नहीं है, जिसको गंभीर बनाने में इस पैशाचिक स्कूली शिक्षा की बुनियादी जिम्मेदारी न हो।

मनुष्य जन्म से
अज्ञानी होता है,
लेकिन **मूर्ख**
नहीं होता।

मूर्ख
उसे आधुनिक
शिक्षा
बनाती है।

अक्षय जैन – संपादक – 'दाल–रोटी' पत्रिका से साभार।

"भारतीय शिक्षण मण्डल" - नागपुर

द्वारा आयोजित

International Conference
Research for Resurgence

(आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि)

ता. ११-१२-१३ फरवरी २०१६

उद्घाटन

श्रीमति स्मृति इरानी
Union Minister, Human Resource & Development
युनीयन मिनिस्टर ह्युमन रीसर्च एन्ड डेवलपमेन्ट,

Guest of Honour	Guest of Honour
श्री. देवेन्द्र फडणवीस	श्री अनिरुद्धजी देशपांडे
chief Minister of maharastra	Senior Educationist

समापन

श्री नीतिन गडकरी
Union Minister, Road Transport Highways & shipping

Guest of Honour	Guest of Honour
डो. बी. के. सारस्वत	श्री चंद्रशेखर बावनकुले
Member of Niti Ayog	Minister of Energy Maharashtra

उपरोक्त विषय पर नागपुर में हुए आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठि के अवसर पर **हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्)** का प्रतिनिधित्व करते हुए निम्नलिखित विषय प्रस्तुत किया ।

विषय : गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ध्रुवीकरण एवं फलश्रुति

"प्रस्तावना – डॉ. दीपक कोईराला" आचार्य "गुरुकुलम्"

आज हमारे देश की संकटपूर्ण अवस्था है । आतंकवाद, बेरोजगारी, असुरक्षा, अनाचार, भ्रष्टाचार, गरीबी जैसे अनिष्ट दिनोंदिन बढते जा रहे हैं । अनेक उपाय करने पर भी इन संकटों से मुक्ति नहीं मिलती है ।

इस स्थिति में हमे शिक्षा के बारे में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है । यह सर्वस्वीकृत सत्य है कि देश या समाज या व्यक्ति वैसा ही होता है जैसी उस देश की शिक्षा होती है । आज यदि देश संकटों से ग्रस्त है तो संकटों से मुक्ति का मार्ग हमें शिक्षा में ही खोजना होगा ।

युगों से भारत में ज्ञान, विद्या, शिक्षा के विषय में चिंतन एवं प्रयोग होते रहे हैं। भारत ज्ञान का उपासक रहा है। भारत में कहा गया है, 'नास्ति विद्या समं चक्षुः'। शिक्षा के बारे में एक सर्वस्वीकृत सूत्र है 'सा विद्या या विमुक्तये'। विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान करे। परंतु आज हम देखते हैं कि विद्या स्वयं मुक्त नहीं है। विद्या बाजार के बंधन में है, विद्या अर्थ के बंधन में है, विद्या शासन के नियंत्रण में है। इन नियंत्रणों से मुक्त नहीं होगी तो शिक्षा शिक्षार्थी को कभी भी मुक्त नहीं कर सकती, इसलिए प्रथम आवश्यकता है शिक्षा को ही बंधनों से मुक्त करने की।

गुरुकुलम् इस दिशा में प्रयास कर रहा है। गुरुकुलम् एक ऐसा शिक्षा केंद्र है जो समग्रता में विचार कर भारतीय शिक्षा का प्रतिमान विकसित करने हेतु प्रयासरत है। विगत २२ वर्षों से कुलपति माननीय उत्तमभाई शाह के द्वारा अपने ही चार बच्चों के साथ यह प्रारंभ किया। और आज समाज में इस शिक्षा का विस्तार संभवतः ५०० बच्चों तक पहुंच गया है। शिक्षा के क्षेत्र में विगत ७ वर्ष में अध्ययन, अनुसंधान, पाठ्यक्रम निर्माण आदि कार्य चल रहा है। इस कार्य के साथ साथ परिवार शिक्षा, शिक्षक शिक्षा, विद्वानों, संघ, संस्था, एवं सभी धर्माचार्यों (संतो)का ध्रुवी करण के क्षेत्र में प्रयास चल रहे हैं।

शिक्षा को ठीक करने के कई प्रयास व्यक्तिगत स्तर पर हो रहे हैं। उसी प्रकार छोटे छोटे पैमाने पर भी अनेकानेक प्रयास हो रहे हैं। ऐसे सभी प्रयासों को संकलित करने का प्रयास भी इस गुरुकुलम् द्वारा ध्रुवीकरण के दौरान करना है।

आज भारतीय शिक्षा यूरोपीय जीवनदृष्टि से पूर्ण रूप से ग्रस्त हो गई है। इसलिए भारतीय ज्ञानधारा का प्रवाह क्षीण हो गया है। भारतीय ज्ञानधारा आज अधिकृत नहीं मानी जाती है। परंतु वह सुरक्षित है देश के सामान्य जन के पास। यह सामान्य जन तुलना में अशिक्षित या कम शिक्षित है। वह पिछडा माना जाता है। उसका ज्ञान अधिकृत नहीं माना जाता क्योंकि उसके पास कोई प्रमाणपत्र नहीं है। ऐसे भारतीय ज्ञान को प्रतिष्ठित करने की आवश्यकता है ताकि समाज इससे लाभान्वित हो सके।

आज शिक्षा से कोई भी संतुष्ट क्यों नहीं है ? शिक्षा के बाजारीकरण से कौनसे भीषण संकट पैदा हुए हैं ? शिक्षित मनुष्य सुसंस्कृत भी होना चाहिए ऐसी अपेक्षा क्यों नहीं रखी जाती है ? वर्तमान शिक्षा से ज्ञान के क्षेत्र में कौन से संकट निर्माण हुए हैं ? वर्तमान शिक्षा में किस प्रकार के परिवर्तन की आवश्यकता है ? शिक्षा का दायित्व समाज का है या सरकार का ? शिक्षा में उद्योगों की क्या भूमिका है ? शिक्षा में सामान्य जन की क्या भूमिका है ? क्या शिक्षा आज भी समाज के लिए लाभदायी हो सकती है ?

यहां विद्या, कला, कौशल, शौर्य एवं पराक्रम की

हमारी भारत वर्ष की ज्ञानार्जन की अपनी सशक्त परंपरा रही हैं। और इसका लोहा पूरे विश्व ने माना है। यह आधुनिक शिक्षा प्रणाली विकास रूपी आडंबर हैं। बेरोजगारी, भूखमरी का पर्याय बन रही है। वहीं गुरुकुलम् (साबरमती, अहमदाबाद) की शिक्षा-पद्धति मूलतः सर्वांगी विकास हेतु प्रभावशाली मॉडल के रूप में उपलब्ध है।

जब यह गुरुकुलीय शिक्षा-पद्धति भारत के गाँव-गाँव और शहर-शहर में स्थापित होगी, तभी भारतीय संस्कृति के मूल्यों को हम पुनःस्थापित कर पाएगें।

शिक्षा से प्रशिक्षित कर बच्चों के जीवन को संस्कारित किया जाता हैं । प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थी अपनी योग्यता को अपने जीवन का मूलाधार बनाता हैं । यहाँ ऋषि परंपरा के अनुसार, बिना किसी सरकारी योग्यता प्रमाणपत्र के विद्यार्थीयों को शिक्षित किया जाता हैं ।

शिक्षा ऐसी हो जो राष्ट्रीयता का बोध कराए, राष्ट्र प्रेम का पाठ पढाए, ऐसा न हो कि इन महत्वपूर्ण तत्त्वों को जीवन से विलुप्त कर दिया जाए । मुख्यतः हमारी शिक्षा मस्तिष्क, हाथ, और हृदय तीनों अवयवों का समग्र विकासोन्मुख शिक्षा-प्रणाली होनी चाहिए । जो गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली ही दे सकती हैं । शिक्षा कला-कौशल एवं पराक्रम से परिपूर्ण हो, जीवन के लिए मोक्ष साध्य होनी चाहिए । ''सा विद्या या विमुक्तये'' की भावना से ओतप्रोत हो ।

गुरुकुलम् में भोजन-व्यवस्था

गोबर के कंडे और लकडी के चुल्हे पर भोजन पकाया जाता है। बारिश का पानी भोजन बनाने एवं पीने में उपयोग किया जाता है। भोजनालय में पीतल व मिट्टी के बर्तनो में भोजन पकाया जाता है। कहा जाता है कि जैसा आहार वैसा विचार और जैसा अन्न वैसा मन।

यहां पर आधुनिक इलेक्ट्रोनिक साधन का कमसे कम उपयोग किया जाता है। फ्रीज, ओवन, कुकर, गैस आदि का उपयोग नहीं होता है।

अतः विद्यार्जन के साथ-साथ में विद्यार्थिओं के आहार पर भी विशेष ध्यान रखा जाता हैं । भोजनालय एवं संपूर्ण गुरुकुल के प्रांगण में गोबर और मीट्टी से लिपाई पोताई द्वारा स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता है । भोजनालय में आसन पर बैठा कर चौकी के ऊपर थाली रख कर पित्तल-कांस्यपात्र में भोजन कराया जाता है । आरोग्य शास्त्र, धर्मशास्त्र, और नीतिशास्त्र की दृष्टि से भोजन बैठकर करने का विधान है । कारण है कि आरोग्य का मूल आधार हम कैसा भोजन करते है और कितना भोजन ग्रहण करते है और कैसे पचा सकते है इसी के उपर रहा है । अतः योग्य आहार, योग्य समय में और योग्य पद्धति से ही लेना चाहिए । अधिकतर रोग पाचन तंत्र के कमजोरी से ही होते है । खडे खडे भोजन करने से पाचन तंत्र निर्बल होता है । आहार का पाचन प्राण वायु, समानवायु, और अपानवायु की मदद से होता है । और प्रत्येक वायु की गति बैठकर भोजन करने से जठराग्नि की तरफ होने से पाचन क्रिया सही होती है । लकडी के चूल्हे पर बनाया हुआ भोजन अत्यंत स्वादिष्ट होता है । भोजनालय में रासायणिक वस्तुओं का उपयोग नहीं होता है । किसी भी प्रकार का रंग, नींबू का फूल, बेकींग पाउडर जैसी वस्तुओ का उपयोग नहीं होता है, शाक भाजी से लेकर अनाज तक सभी खाद्य वस्तुए जैविक विधिसे उपजायी हुई प्रयोगमें लाई जाती है । भोजन सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से पहले कराया जाता है जो पूर्ण वैज्ञानिक है । प्रत्येक विद्यार्थीयों को प्रतिदिन सुबह भारतीय गायों

यह गुरुकुलम् मूल रूप से प्राचीन शिक्षा-व्यवस्था को पुनर्स्थापित कर भारतीय संस्कृति, परंपरा को अक्षुण्ण बनाने तथा सम्पूर्णतया भारत पूर्णोदय की तरफ अग्रसर हैं ।

हमारा संकल्प शिक्षा द्वारा भारत पुनर्निमाण का है । जो मुख्य रूप से गरीबी एवं महंगाई से, बेकारी और बीमारी से, भय और भ्रष्टाचार से, दुर्व्यसन और हिंसा से मुक्त भारत का निर्माण करें ।

का उष्णोधार दुग्धपान सारस्वत चूर्ण के साथ (जिससे बालक मेधावी और प्रतिभा सम्पन्न होता है) कराया जाता है। प्रतिदिन स्थानीय लोगों को निःशुल्क छाछ का वितरण किया जाता है। सदैव ऋतु अनुकूल एवं आयुर्वेदिक नियमों को ध्यान में रखते हुए भोजन की व्यवस्था की जाती है। भोजनोपरांत पाकशाला की बर्तनो की सफाई उपलों के राख द्वारा की जाती है।

आधुनिक परिवेश में शिक्षा का भारतीयकरण हो इस उद्देश्य के साथ वर्षों से विद्वज्जन, संस्था, संगठन अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के विस्तार हेतु देशभर में विभिन्न संस्थाये, संगठन एवं विद्वज्जनों, तथा साधु-संतो से संपर्क करके ध्रुवीकरण का प्रयास किया जा रहा है।

(१) 'भारतीय शिक्षा करणीय कार्य एवं हमारा कर्तव्य' ऐसे विषयों पर सेमिनारों का आयोजन।

(२) 'भारतीय संस्कृति, संरक्षण एवं समृद्धि' हेतु त्रि-दिवसीय सेमिनारों का आयोजन।

(३) देश की विभिन्न संस्थाओं, संगठनो एवं विद्वानो की संगोष्ठि द्वारा गुरुकुलीय शिक्षा विस्तार विषयक चर्चा विमर्श।

(४) देश के सभी धर्म एवं संप्रदाय के अग्रणियों (जिस में सभी धर्माचार्यों)को बुलाकर गोष्ठि का आयोजन करना।

(५) विभिन्न राज्यों एवं शहरों में आयोजित सेमिनार एवं गोष्ठिओं में गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली का प्रचार-प्रसार।

उपरोक्त कार्यों की फलश्रुति के रूप में अधिकांश महानुभावो ने गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के पक्ष में समर्थन देते हुए गुरुकुलम् के प्रकल्प का सहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार के प्रकल्प का विस्तार राष्ट्रीय स्तर पर करने का संकल्प लिया एवं स्वयं कटिबद्ध होने का शुभभाव भी प्रगट किया।

पूज्य संत, महंत, धर्माचार्यों ने ऐसे प्रकल्प के लिए अपने अंतर के शुभाशिष दिए।

समाज के सभी अग्रगण्य शिक्षा-प्रेमीजन एवं राष्ट्रवादी लोग भी उत्साहपूर्वक सहयोग दे रहे हैं। जिसमें राजकीय एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने भी इस प्रकल्प को भी समझने का प्रयास किया और सराहा।

भारतीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, वैसी होनी चाहिए, बहुत लोगों ने बहुत कुछ पढा-लिखा-सुना परंतु व्यवहारिक, प्रायोगिक रूप से समाज के समक्ष प्रस्तुत यह अद्भुत गुरुकुलीय शिक्षा प्रकल्प एक सराहनीय कार्य हैं ऐसा सभी का अभिप्राय रहा।

प्रस्तावना...

अपने ही हाथों अपना नाश !

अंग्रेज तो इस देश से चले गये, लेकिन जाने से पहले विश्वविद्यालयीन शिक्षा द्वारा हजारों देशी अंग्रेज उन्होंने तैयार कर दिये थे। इस देश की धरती पर निरंतर अपना स्वामित्व बनाए रखने के लिए इनके पास एक ही उपाय था कि 'देश की प्रजा को हर तरह से बरबाद कर दो, और इसके लिए उनकी संस्कृति का सर्वनाश करो!'

यह कार्य यदि विदेशी लोग करने जाएं तो यहाँ की प्रजा क्रुद्ध होकर विप्लव कर बैठेगी, इसलिए इस देश के लोगों के हाथों ही इस सर्वनाश के कार्यक्रम पर अमल करवाना अनिवार्य था। इसलिए देशी अंग्रेजों को तैयार किया गया। आज तो इन उपाधिधारक (डीग्रीवाले) पश्चिम – परस्त देशी अंग्रेजों की संख्या लाखों–करोड़ों तक पहुँच गई है।

इन देशी अंग्रेजों ने जाने–अनजाने प्राप्त हुए शैक्षिक पश्चिमी उत्तराधिकार के कारण संस्कृति के सभी क्षेत्रों के मूल पर आघात कर दिया है। मोक्षलक्षी संस्कृति–वृक्ष से सभी अंगों को उन्होंने जड़ से हिला दिया है।

श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु इस विषय की अच्छी जानकारी रखते हैं। उनका प्रत्येक विचार भिन्न–भिन्न विषयों पर आरपार प्रकाश डालता है।

श्री वासु बताते हैं कि सांस्कृतिक तत्वों को पश्चिम–परस्त रहस्यमय और अनपढ़ नीति–रीति के वर्तमान वेग से भी नष्ट करने का कार्य चालू रखा जाय तो भारतीय प्रजा के सांस्कृतिक अस्तित्व की आयु शायद सौ–दो सौ वर्ष से अधिक नहीं रहेगी।

श्री वासु की विचारधारा भारतीय प्रजा के किसी भी स्तर के नेताओं के रूप में गिने जानेवाले सभी भाइयों तक पहुँचे तो मुझे लगता है कि उनके मस्तिष्कों में विदेशी एजेन्टों ने जो गलत विचार भर दिए हैं, वे सब जड़ मूल से उखड़ जाएँगे और वे इस देश व समाज के उत्थान में अमूल्य योगदान देने में सक्षम होंगे।

–पंन्यास चंद्रशेखरविजयजी

(श्री वासु के पुस्तकों की प्रस्तावना में से)

(उपर्युक्त विषयों पर विस्तृत जानकारी श्री वासुजी ने 'शिक्षा' नामक पुस्तक में आधारभूत तथ्यों के साथ दी है, जिसमें से कुछ बिन्दु आपकी जानकारी के लिए यहाँ पर प्रस्तुत कर रहे हैं)

"शिक्षा"

(पुस्तक में से)

लेखक – श्री वेणीशंकर मुरारजी वासु

अंग्रेजों ने पाठ्य पुस्तकों द्वारा इस प्रकार भ्रामक इतिहास की परम्परा बनाकर तथाकथित देशी अंग्रेजों के एक वर्ग को पैदा कर, जाने से पहले यहाँ छोड़ दिया। इस गलत इतिहास के बल पर, इस देश के दो टुकड़े कर दिये गए, इतना ही नहीं भविष्य में ज्यादा टुकड़े होते रहें।'

अंग्रेजों के झूठ

***आर्य प्रजा का उद्‌भव इसी देश में हुआ था। "आर्य लोग उत्तरी ध्रुव की ओर से भारत में बंजारा जाति के रूप में आए थे और द्रविड़ प्रजा को पराजित कर, इस पर उन्होंने अपना प्रभुत्व जमा दिया," ये अंग्रेजों की कपोलकल्पित बातें हैं, मनगढंत बातें हैं। ऐसे करने के पीछे उनका ध्येय यह था कि 'कभी भी आर्य प्रजा उनसे कहे कि आप लोग विदेशी हैं, अतः भारत छोड़कर चले जाएँ,' तो उन्हें कह सकें कि 'तुम लोग भी विदेशी हो, इस देश के मूल निवासी तो वास्तव में द्रविड़ ही हैं।'

आर्य प्रजा लाखों वर्षों से यहीं की निवासी है। उसका क्रमबद्ध इतिहास भी है। लेकिन उन तमाम बातों को दबाकर, अंग्रेजों ने भ्रामक प्रचार शुरु कर दिया कि 'आर्य, उत्तरी ध्रुव की ओर से आई बंजारा टोलियों के ही वंशज हैं,' अंग्रेजों ने पाठ्य-पुस्तकों द्वारा इस प्रकार भ्रामक इतिहास की परम्परा बनाकर तथाकथित देशी अंग्रेजों के एक वर्ग को पैदा कर, जाने से पहले यहाँ छोड़ दिया। इस गलत इतिहास के बल पर, इस देश के दो टुकड़े कर दिये गए, इतना ही नहीं भविष्य में ज्यादा टुकड़े होते रहें।

अंग्रेजों ने १५० वर्षों से भी कम समय में गलत इतिहास और भ्रामक शिक्षा द्वारा हिन्दुओं की भव्यता, धर्म, संस्कृति, चरित्र और गौरव का खंडन कर, अंग्रेजी संस्कृति के आराधक वर्ग को तैयार कर लिया। यह अल्पसंख्यावाला वर्ग ६० करोड़ जैसी विराट बहुसंख्यक प्रजा के सिर पर विदेशी संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, रुचि-अरुचि, विचारशैली और अर्थ-व्यवस्था थोप देने के लिए रात-दिन प्रयत्नशील रहा। इससे बढ़कर और क्या अत्याचार हो सकता है? स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद यह आसुरी प्रवृत्ति अधिक बढ़ पाई है क्योंकि स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद भी अंग्रेजों ने हमारा सत्यानाश करने के उद्देश्य से शिक्षा नामक जो सुरंग दाग दी है, उसने शिक्षा क्षेत्र में से भारतीयता का नामोनिशान मिटा दिया है।

शिक्षा का ध्येय

***देश की सही प्रगति का मूलाधार शिक्षा है। शिक्षा में चरित्र निर्माण करने की, मोक्षलक्ष्यी होने की और आसुरी बलों पर विजय पाने की क्षमता होनी चाहिए। वर्तमान सरकार के लिये प्रगति का मापदंड हिंसा, भ्रष्टाचार और शोषण द्वारा साध्य विशिष्ट वर्ग की आर्थिक उन्नति ही है।

इतिहास शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। इतिहास द्वारा प्रजा का चरित्र निर्माण होता है। गलत इतिहास से

हीनग्रंथि पैदा की जा सकती है। प्रजा विदेशियों की मुहताज ही बनी रहे, उसे इतनी कायर भी बनायी जा सकती है। हमारी प्रजा भी इसी बात का दृष्टान्त है।

भाषा द्वारा मानस परिवर्तन

***ट्रेवेलियन के मतानुसार अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से मुक्त रहे हिन्दू और मुसलमान भी अंग्रेजों को अपवित्र राक्षस समझते थे और उन्हें हटा देने के षड्यन्त्र बनाते थे। लेकिन जहाँ-जहाँ अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव फैलता गया वहाँ-वहाँ भारतवासियों का मानस परिवर्तन होता गया। वे अंग्रेजों को अपने महान उपकारक, उद्धारक और बलवान मित्र समझने लगे हैं। उन्हें संकीर्णता के अंधकार से बाहर निकाल कर उनका उद्धार करने के लिए अंग्रेजों के प्रति वफादारी और भक्तिभाव रखने लगे हैं। देश का नसीब केवल अंग्रेजों की सहायता और रक्षा से ही उदीयमान होगा, ऐसी मान्यता का प्रचार करते हैं।

आगे चलकर सर चार्ल्स ट्रेवेलियन बताते हैं कि जो युवक हमारी शाला में शिक्षा लेते हैं, वे अपने पूर्वजों और अभिभावकों का तिरस्कार करने लगे हैं। तदुपरांत वे अपनी राष्ट्रीय संस्थाओं को अंग्रेजियत का स्वरूप दिलाने के लिए कटिबद्ध होने लगे हैं। अंग्रेजों को उखाड़ कर समुद्र में फेंकने के बजाय भारत के लिए अंग्रेजों की शिक्षा और रक्षा दोनों बातें अनिवार्य बन गई हैं, ऐसी मान्यता के समर्थक बन गये हैं।

ट्रावेलियन कहते हैं – 'मैंने हिन्दुस्तान के ऐसे प्रदेश में वर्षों का समय गुजारा है, जहाँ अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का प्रारंभ नहीं हुआ। वहाँ के लोग अंग्रेजों को कट्टर दुश्मन मानते हैं और उन्हें खत्म कर देने के उपाय सोच करते हैं।'

'परंतु मैं जब बंगाल में गया तब वहाँ हमने अंग्रेजियत से रंग देने के कारण वहाँ के शिक्षित भारतवासी अंग्रेजों का गला घोटने के बदले अंग्रेजों के साथ ज्यूरी में बैठने में और बैंच मजिस्ट्रेट बनने में धन्यता का अनुभव करते हैं।'

पुरानी प्रणालियों की ताकत का भय

आगे ट्रेवेलियन लिखते हैं कि 'यदि भारत की प्राचीन रीतियाँ व नीतियाँ एवं उनकी शिक्षा और साहित्य के अस्तित्व को यथाशीघ्र नामशेष न कर दिया तो संभव है कि कभी क्षणमात्र में ही भारत से हमारा अस्तित्व मि

शोध समिति के अध्यक्ष ने ट्रेवेलियन से पूछा था कि 'आप की योजना का अंतिम ध्येय भारत और इंग्लैण्ड के बीच राजनैतिक संबंध का विच्छेद करना है या हमेशा के लिये उसे सुदृढ़ करना है?'

ट्रेवेलियन ने इसका उत्तर दिया था कि, 'मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतवासियों को अंग्रेजी शिक्षा देने से आखिरी परिणाम यह निकलेगा कि उनके इंग्लैण्ड से अलग हो जाने का काम अनंतकाल तक असंभव बन पाएगा।'

'इसके विपरीत मेरा दृढ ख्याल यह है कि यदि भारतवासियों की शिक्षा प्रणाली को यथावत् छोड़ दिया जाए तो किसी भी दिन हम यहाँ से बहुत जल्द खदेड़ दिये जायेंगे।'

'मैंने बारह साल तक भारत में निवास किया है। प्रथम छह साल उत्तर भारत में गुजारे, जहाँ अंग्रेजी शिक्षा का इतना बोलबाला न था, लेकिन उनकी प्राचीन परंपराएं और शिक्षा कार्य जारी थे, जिससे वे अंग्रेजों को अपना जानी दुश्मन मानते और उन्हें हटा देने के लिये षड्यन्त्रों का आयोजन करते । जहाँ तहाँ भारत में से हमें खदेड़ देने की ही बातें सुनाई देती।'

'लेकिन मैं कलकत्ता आया। वहाँ अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण दूसरे ही हालात देखने को मिले। लोग हमें उखाड़ फेंकने के बजाय, स्वतंत्र अखबार

निकालने का, नगरपालिकाओं की स्थापना और अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार कर अधिकाधिक सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने आदि के बारे में ही सोचते थे। वे वास्तव में पूरे अंग्रेज-परस्त बन गये थे।'

(Sir Charles Trevelian before Parliamentary Committee of 1853)

वह प्रसिद्ध पत्र –

***ई. स. १८५३ की इस सर्वांगीण सोच विचार के बाद इस कंपनी के नियामकों ने १९ जुलाई, १८५४ के रोज 'एज्युकेशनल डिस्पेच' के नाम से प्रसिद्ध हुआ पत्र गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी पर भिजवाया।

इस पत्र में नियामकों ने लिखा था कि 'शिक्षा की इस नई योजना का आशय शासनतंत्र के प्रत्येक विभाग को विश्वसनीय और काबिल नौकर-क्लर्क दिलवाने का है। उसका दूसरा हेतु यह है कि इंग्लैण्ड के उद्योग-धंधों के लिए जिन अनेक कच्चे मालों की आवश्यकता है और जिनकी इंग्लैण्ड के प्रत्येक वर्ग के लोगों में बहुत खपत है, वे सभी पदार्थ अधिक मात्रा में और पूरी निश्चिंतता के साथ हमेशा इंग्लैण्ड पहुंचाते रहे और उसके साथ इंग्लैण्ड के तैयार माल की भारत में लगातार मांग बनी रहे, उसके लिए योग्य परिस्थिति और उसका अमल करने वाले लोगों को तैयार करना है'।

१५० वर्षों से चूर-चूर हुआ भारत

***आज से दो सौ साल पूर्व तक जो देश विश्व में शिक्षित माने जाने वाले देशों में अग्रसर था, जो विश्व का अग्रगण्य कृषिप्रधान और प्रथम स्तर का उद्योगप्रधान देश था, वही अंग्रेजों के १५० साल के शासन के बाद शिक्षा की दृष्टि से सबसे पिछड़ गया। औद्योगिक रूप से वह टूट गया, बेकारों और बीमारों से भरा देश बन गया। हम अपनी मातृभाषा में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलाने में गौरव महसूस करते हैं। अपने प्रदेश की भाषाओं की लड़ाई में एक दूसरे का गला घोंटने या भारत संघ में से अलग हो जाने के लिए उतारू हो गए हैं। विदेशियों से प्राप्त कर्ज आदि को विदेशियों की सहानुभूति, सद्भावना और सहायता के रूप में स्वीकृत करते हैं। विदेशियों की सहायता बिना कुछ भी कर पाने में असमर्थ प्रमाणित हुए हैं।

परिस्थिति को पलटने के दो रास्ते

***इस अत्यंत शोचनीय परिस्थिति को पलटने के केवल दो रास्ते हैं, या तो विशाल समुदाय के अशिक्षित भारतवासी विद्रोह कर इस अल्पसंख्यक शिक्षित सेक्युलरिस्टों को शासन के पदों से हटा दें अथवा जो थोड़े बहुत शिक्षित हैं, जो अंग्रेजी शिक्षा, विचारधारा या अर्थव्यवस्था से भ्रमित चलित नहीं हुए हैं, अपितु उन्हें आपदा या बाधा समझते हैं और भारत के प्राचीन ज्ञान, साहित्य और विचारधारा में अनंत श्रद्धा रखते हैं, वे खुले मैदान में आकर भारतीय विचारधारा, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और मोक्षलक्षी विज्ञान को आगे बढ़ाकर गाँव-गाँव उसकी ज्योति प्रज्वलित करें।

दूसरा रास्ता ज्यादा स्वीकार्य और कार्यक्षम है।

स्वाधीन भारत में शिक्षा के उद्देश्य, विषय और पद्धति, तीनों में परिवर्तन लाने की आवश्यकता थी। उसके बदले मैकॉले की परंपरा को जारी रखकर शिक्षा को संपूर्णतया नौकरीलक्षी, पश्चिम परस्त और विदेशी प्रभाव से चकाचौंध वाली बना दी गई है।

सबसे करुण घटना तो यह है कि अंग्रेजों द्वारा लिखे गए झूठे इतिहास को भी चालू रखा गया। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जो स्वाधीन होने के बाद भी विदेशियों द्वारा लिखित झूठा और भारतीय प्रजा के बीच अन्दरूनी द्वेषभाव पैदा करे, ऐसा इतिहास अपने बच्चों को पढ़ाता है। इसका कारण शायद यह भी हो

कि विदेशियों ने भारतीय शासन को इतिल्ला दे रखी हो कि वे इतिहास में परिवर्तन न करें। भारत एक ऐसी सार्वभौम प्रजा है, जो अपने निजी व घरेलू मामलों में भी विदेशी सलाह स्वीकार करती है और विदेशी दबाव के वश में बनी रहती है।

निश्चिंत मन से वापस गया आयोग

***भारत स्वतंत्र हुआ उसके तुरंत बाद 'यू.एन.ओ.' का एक आयोग यह जाँच करने आया था कि मैकॉले द्वारा तैयार किये गए शैक्षणिक ढांचे से बाहर निकलकर, कहीं हम हमारी उत्तम प्राचीन प्रणाली को पुनः आरंभ तो नहीं कर रहे। कमिशन के सदस्य सभी स्थानों पर घूम-फिर कर पूरी छानबीन कर के इस संतोष के साथ वापस लौट गए कि भारत अपनी निजी गौरवशाली संस्कृति के प्रति प्रयाण करने को सावधान या तत्पर नहीं हुआ है। वह अब भी अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति वापस लौट कर पाश्चात्य संस्कृति के साथ जो संबंध जुड़े हैं, उन्हें काट कर अपनी भव्यता के प्रभाव से, विश्व को चकाचौंध कर दे, ऐसी हालत में नहीं है। इस विश्वास के साथ निश्चिंत होकर कमिशन वापस लौट गया।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी न हमने अपनी शिक्षा का ढाँचा बदला, न ही अपने सही इतिहास का पुनर्लेखन किया, न ही विद्यार्थियों में अपनी मातृभाषा के प्रति भाव पैदा किया। वास्तव में हम जिस तेज रफ्तार से पश्चिम की हिंसक और शोषक अर्थव्यवस्था के प्रति आँख मूंद कर दौड़ गए और अरबों रूपयों का खर्च कर कारखाने खड़े करने लगे, उतनी ही तेजी से कारखानों को चलाने के लिए, मूलभूत कच्चे माल जितने ही आवश्यक हिसाबनबीश, संशोधक, खरीदी और बिक्री करने वाले अधिकारी और तकनिकी ज्ञान वाले कारीगर पैदा हो पाएं, ऐसे परिवर्तन भी शिक्षा में किए।

छोटी उम्र के बच्चों पर क्रूरता से थोपा गया शिक्षा का बोझ

***हम ऐसी शोषक और हिंसक अर्थव्यवस्था के प्यादे बन पायें, ऐसे विद्यार्थी जल्द तैयार करने के लिए बच्चों की शक्ति की परवाह किए बिना उनका पाठ्यक्रम बढ़ा दिए। अभ्यास के समय में कांट-छांट कर कम समय में ज्यादा विषय सीखने का बोझ उनके दिमाग पर लाद कर बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर बना दिए।

हमारा खंडित गौरव

*** कारखाने बढ़ते गए, ग्राम्य उद्योग टूटते चले गये, जानवर कटते रहे, शिक्षार्थियों और विद्यार्थियों की तादात बढ़ती गई, परंतु सभी का समावेश हो सके, उसके लिए पर्याप्त शालाएँ नही बना सके। उन्हें शिक्षा देने के लिए आवश्यक योग्य शिक्षक भी तैयार न कर पाए। परिणामस्वरूप शालाएँ मानो औद्योगिक फैक्टरियाँ हों, इस प्रकार उनमें पहली पाली, दूसरी पाली, तीसरी पाली की रचना कर शालाओं के गौरव को खत्म कर दिये।

अंग्रेज इतिहासकार का प्रमाण

***अंग्रेज इतिहासकार लडर्लान 'भारत का इतिहास' नामक अपनी पुस्तक में जिक्र करता है कि - 'जिस गाँव में पुराना संगठन (पंचायतें) टिका हुआ है वहाँ

प्रत्येक बालक लेखन, पठन और गणित कार्य अच्छी तरह जानता है लेकिन जहाँ-जहाँ हमने पंचायतों को बरबाद की हैं वहाँ ग्राम पंचायतों के साथ शालाओं का भी विनाश हो गया है। वहाँ बच्चों की लेखन, पठन और गणित कार्य सीखने की सुविधाएं नष्ट हो गई हैं।'

भारत पर विजय पाने से पूर्व अंग्रेजों ने हमारी समाज व्यवस्था, अर्थ व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, राज्य पद्धति, युद्ध पद्धति, धार्मिक व्यवस्था, प्रजा के रीति रिवाज, वैद्यकीय व्यवस्था, कृषि यातायात व्यवस्था आदि तमाम प्रकार के विषयों का भिन्न-भिन्न अधिकारियों द्वारा अध्ययन किया-कराया था। हमारी इन तमाम व्यवस्थाओं को कैसे तहस-नहस कर दी जाए, समग्र राष्ट्र पर अधिकार प्रभुत्व स्थापित कर इस देश की अपार सम्पत्ति का किस प्रकार शोषण किया जाय और समूची प्रजा कैसे ईसाई बना दी जाए, उसकी व्यवस्थित योजनाएं तैयार की गई थीं। इन योजनाओं के षड्यन्त्रों में हम फंस गए और हमारी अधोगति हुई।

क्या सबको एक ही शिक्षा ?

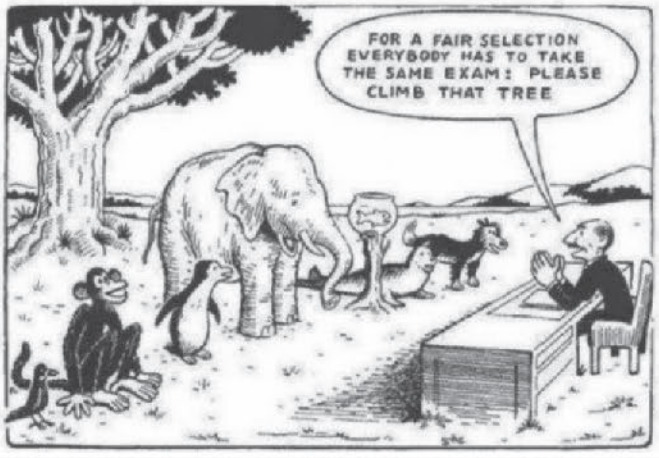

एक विश्व की रचना में तथाकथित देशी अंग्रेजों का सहयोग

***अंग्रेज यहाँ से विदा हुए इससे पूर्व अंग्रेजी शिक्षा द्वारा जिन तथाकथित अंग्रेजों को तैयार करते गए, उनके हाथों हमारे धर्म, संस्कृति, समाज व्यवस्था आदि का सत्यानाश बड़ी तेजी से होता जा रहा है। भारतीयों को यथाशीघ्र, शराब, मांसाहार और विदेशी रहन-सहन के प्रति प्रवृत्त किए जाते हैं, जिससे उनका **'One world'** यानी 'एक ही विश्व' (गोरों का राज्य) और **'One religion'** अर्थात् 'एक ही धर्म' (ईसाई धर्म) का स्वप्न पूरा हो पाए। **'One world'** यानी किसी एक ही सत्ता का समस्त विश्व पर शासन नहीं, लेकिन वर्तमान युग की बदली हुई परिस्थिति में विश्व बैंक तमाम अश्वेत प्रजाओं पर, सहायता के नाम पर कर्ज का बोझ लाद कर अपना प्रभुत्व जमा दे। अर्थात् एशिया और अफ्रीका की तमाम प्रजाओं पर विश्व बैंक का प्रभुत्व स्थापित हो जाए। गोरी ईसाई राज्य सत्ताएँ इस विश्व बैंक की साझेदार हैं। विश्व की तमाम अश्वेत प्रजाओं पर प्रभुत्व स्थापित कर उनके **'One world'** यानी 'एक विश्व' राज्य के लक्ष्य के प्रति बड़ी तेजी से गति किये जा रहे हैं।

आज विश्व बैंक की सबसे मजबूत पकड़ विश्व के दूसरे नंबर के बड़े गैर-श्वेत और गैर-इसाई देश भारत पर है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। अंग्रेजी शिक्षा देकर तैयार किए गए तथाकथित भारतीय अंग्रेज ही इस स्थिति के सर्जक हैं।

अंग्रेज भले ही यहाँ से चले गए हों, लेकिन उन्होंने अंग्रेजी भाषा, शिक्षा, रहन-सहन, आचर-विचार आदि के जो विषैले बीज बोये हैं, उसका परिणाम हम आज भुगत रहे हैं।

भारतीय शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम थी

***भारतीय शिक्षा पद्धति सर्वोत्तम और मोक्षदायिनी थी। उसका प्रसार प्रत्येक घर में था। हमारी शिक्षा के विषय में पूरी जानकारी इकट्ठा करने के बाद, उसे खत्म कर, उन्होंने हिंसक, जुगुप्साप्रेरक, शोषक और विकासलक्षी शिक्षारूपी शस्त्र का हम पर एक प्रयोग किया है जिसे 'मोहास्त्र' कह सकते हैं। हम उससे

मोहित होकर उसके चक्कर में फँस गए हैं फिर भी उसमें गौरव मानते हैं।

प्राचीन भारत के निवासियों की शिक्षा-संस्थाओं के बारे में ई. स. १८२३ के कंपनी शासन के एक विवरण में बताया गया है कि 'शिक्षा की दृष्टि से भारत के अनेक गाँवों की जो उन्नत स्थिति है, वैसी स्थिति दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं।'

(Report of select committee on the affairs of the East India Co. Vol. 1. page 409, Published in 1832)

इस रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों ने भारत पर अपना प्रभुत्व जमाने से पूर्व की हमारी शिक्षा व्यवस्था की पूरी जानकारी प्राप्त कर ली थी।

इंग्लैण्ड द्वारा अपनायी गई हमारी शिक्षा-पद्धति

***डॉ एण्डबेल नामक एक प्रसिद्ध अंग्रेज शिक्षाशास्त्री ने भारत की शिक्षा व्यवस्था का अभ्यास कर इंग्लैण्ड में उस पद्धति का अमल किया था। उसके अच्छे परिणाम देखकर ईस्ट इण्डिया कंपनी के नियामकों ने ३ जून १८१४ के रोज बंगाल के गवर्नर - जनरल को एक पत्र लिखा कि 'शिक्षा की जिस पद्धति का प्रयोग भारत के आचार्यों द्वारा पूर्व से जारी है, उसी पद्धति के आधार पर हमारी शालाओं में भी शिक्षा दी जानी चाहिए, क्योंकि उससे शिक्षा-पद्धति अति सरल और सुगम हो पाती है।'

(Letters from the Court of Directors of Governor General in Council of Bengal, dated 3rd, June 1814.)

शिक्षा की यह व्यवस्था इतनी सुदृढ थी कि भारत में हजारों वर्षों से शासनों का उलटफेर होते रहने पर भी इन शिक्षा-संस्थाओं को कोई हानि नहीं पहुँच पाई, क्योंकि सल्तनतों के उलटफेर के पीछे हिन्दू धर्म और संस्कृति के विनाश का उद्देश्य नहीं था, अपितु राजसत्ता की लालसा थी। यदि हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति के विनाश की भावना भी हो तो उसके लिए पशुबल के उपयोग के सिवा अन्य कोई चारा न था।

लेकिन भारत के जिन इलाकों पर अंग्रेजों ने अपना प्रभुत्व जमाया, वहाँ उनकी घुसपैठ बल प्रयोग द्वारा न थी, बल्कि भेदी षड्यन्त्रों के साथ धोखाधड़ी और भारतवासियों की वफादारी के गलत इस्तेमाल के कारण हुई थी। सत्ता-प्राप्ति के बाद हमारे धर्म-संस्कृति के सर्वनाश के लिए और हमारी शिक्षा-संस्थाओं एवं शिक्षा-पद्धति को खत्म कर, लोगों को अनपढ़ और निरक्षर रखना उनका उद्देश्य था।

पोषक बलों का खात्मा कर दिया

***भारत की सुव्यवस्थित प्रख्यात विद्यापीठों और गाँवों की शिक्षा संस्थाओं का देखते-ही-देखते खात्मा कर दिया गया। तलवार से नहीं, बल्कि जहाँ से उनका पोषण प्राप्त करने के स्रोत बह रहे थे, वहीं सुरंगें दाग दी। इसका सही खयाल हमें तत्कालीन बेलारी जिले के कलेक्टर ए.डी केम्पबेल के ई. स. १८२३ के एक विवरण से होता है। वे लिखते हैं कि 'इस समय ऐसे असंख्य परिवार हैं, जो अपने बच्चों को जरा भी शिक्षा नहीं दे पाते।..... मुझे यह बताते हुए दुःख होता है कि देश क्रमशः निर्धन होता जा रहा है।'

भारतवासियों को शिक्षा देने के विरुद्ध उग्र विरोध

***किसी भी प्रजा का सर्वनाश करना हो तो उसे उसके धर्म, संस्कृति और भाषा से अलग कर देना चाहिए। भाषा ही तो धर्म और संस्कृति की वाहक है। अतः भाषा के विनाश द्वारा धर्म और संस्कृति अपने आप ही नष्ट हो जाती है। भाषा का नाश करने के लिए विद्या-अध्ययन, पठन-पाठन कराने वाली संस्थाओं और साधनों का नाश कर देना चाहिए।

इस सिद्धान्त के आधार पर ई. स. १७५७ से ही अंग्रेज शासक भारतवासियों की शिक्षा संस्थाओं को

खत्म करने के लिये प्रयत्नशील थे।

हिन्दवासियों के शिक्षा देने के सवाल पर ब्रिटिश शासकों द्वारा उग्र विरोध किए जाने के बाद उनमें से कुछेक को ही अपने (ब्रिटिश) प्राचीन साहित्य और विज्ञान की जानकारी दी जाए, ऐसे प्रस्ताव के समर्थन में उसने कहा– 'अंग्रेजी शिक्षा द्वारा हिन्दू समाज में एक ऐसे वर्ग का निर्माण करना चाहिए, जो जिन पर हम शासन करते हैं ऐसे असंख्य भारतीय लोग और हमारे बीच समन्वय का काम करे। वह वर्ग ऐसा होना चाहिए कि जो हमारी शिक्षा प्राप्त करने के बाद केवल वर्ण और खून से ही भारतीय हो, लेकिन रुचि, भाषा, विचार और भावना की दृष्टि से अंग्रेज बन गया हो।'

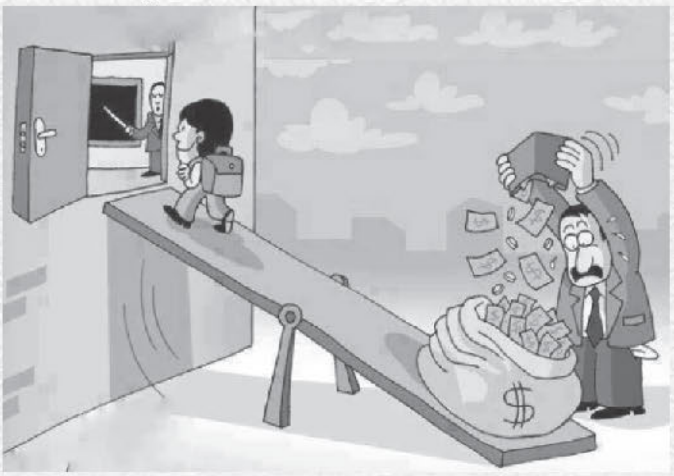

तन–मन और धन की बरबादी

***चौथी पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिए ७ अरब ८३ करोड़ ३१ लाख रूपये निश्चित किए गए थे। जिससे निम्नानुसार विद्यार्थी संख्या उस योजना की समयावधि में होगी, ऐसा अंदाज लगाया गया था।

कक्षा	एक से पाँच	६८९	लाख
कक्षा	छह से आठ	१७६	लाख
कक्षा	नौ से ग्यारह	९८	लाख
कक्षा	विश्वविद्यालय अभ्यास	२७	लाख
	कुल संख्या	**९९०**	**लाख**

(India 1974, Pages 49/50)

उपर्युक्त विवरण के अनुसार प्रथम कक्षा में दाखिल हुए ६९८ लाख विद्यार्थियों में से केवल २७ लाख विद्यार्थी कालेजों में प्रवेश पा सकते थे। वे नौकरी के अलावा शायद ही दूसरा कोई काम कर सकते थे। सरकार और बड़ी–बड़ी औद्योगिक कंपनियाँ, दोनों साथ मिलकर भी इन लाखों उपाधि–धारकों को नौकरी दे नहीं पाती।

तो फिर उद्योगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए गिनती के शिक्षितों को पाने हेतु लाखों युवकों को कालेजों और शालाओं में खींच कर उनके मन, तन एवं उनके मां–बाप के धन की बरबादी ही की जाती रही है। वास्तव में यह शिक्षा नहीं है, लेकिन राष्ट्र के उत्तम बुद्धिधन का उद्योगों द्वारा किया जानेवाला अपहरण ही है।

पाँचवी कक्षा तक पहुँचते पहुँचते ही ५१३ लाख बच्चों को पढ़ाई छोड़कर मजदूरी के लिए भटकना पड़ता है। यह प्राप्त नहीं होती तो अधिकतर संख्या बेकार होकर पूरक मजदूरी की खोज में भागदौड़ मचाती रहती है। थोड़े से लोग समाजविरोधी प्रवृत्तियों में भी लग जाते हैं।

शिक्षा क्षेत्र के इस षड्यंत्र को बंद करो।

शिक्षा के इस समूचे षड्यंत्र पर रोकथाम लगाकर, यदि इसमें परिवर्तन न लाया गया तो भयानक परिस्थिति से देश बरबाद हो जाएगा। १८५३ में अंग्रेजों को अनपढ़ भारतवासियों की ओर से जो खतरा महसूस हो रहा था, वही खतरा अब अर्धशिक्षित भारतवासी देश की सुरक्षा के लिए पैदा कर रहे हैं।

हम ऊपर देख चुके हैं कि चौथी पंचवर्षीय योजना में शिक्षा के लिये ७ अरब रूपये अलग निकाले गए थे, जबकि उद्योगों में १९७१–७२ तक, सार्वजनिक क्षेत्र में कारखाने खड़े करने के पीछे ५५२ अरब रुपये लगाए गए, जबकि निजी क्षेत्र में ९८६४ करोड़ रूपयों की लागत से १३०८४ फैक्टरियाँ स्थापित की जा चुकी थीं, जिनके पीछे केवल ४१ लाख लोगों को रोजगार मिला।

देश में ५,७५,७२१ गाँव हैं, उनमें ३,१८,१६११ गांवों में ५०० से भी कम आबादी है। १,३२,८७३ गाँवों में १००० से भी कम लोग बसते हैं। १० हजार से अधिक आबादी वाले नगर तो केवल १८०० ही हैं।

उद्योग बेकारी दूर करने में सहायक नहीं बन पाए हैं।

***हमारा देश आजाद हुआ, तब देश में ४० लाख लोग बेकार थे। उसके बाद लोगों को रोजगार देने के नाम पर १४,९१६ करोड़ रुपयों की लागत से कारखाने बनाए गए। बेकारों की संख्या ४० लाख से बढ़कर ४ करोड़ तक पहुँच गई। इन फैक्टरियों में मानव संसाधन पूरा करने के लिए समग्र प्रजा पर शिक्षा का राक्षसी और निरर्थक बोझ डाला गया। देश के लाखों आशावान् युवकों को आज भी हताश बनाकर बेकारी, बीमारी, अपराध और महंगाई से पीड़ित समाज में धकेल दिया जाता है।

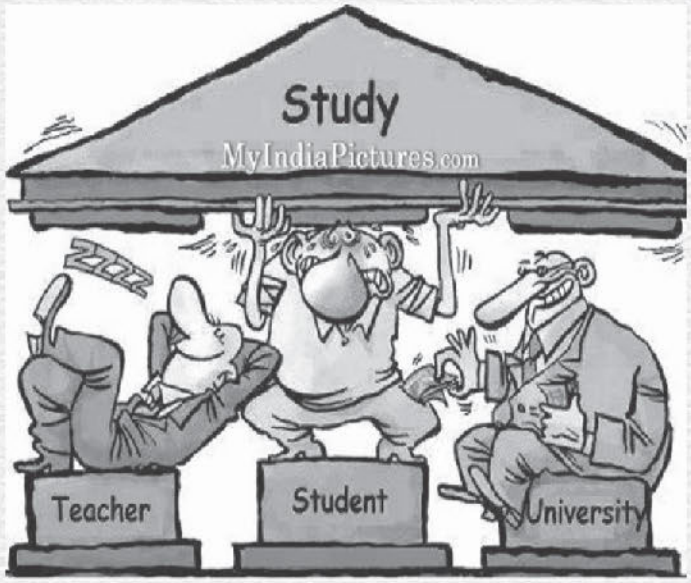

बढ़ती हुई बेकारी के इस प्रवाह का कारण जनसंख्या वृद्धि बताकर आत्म-प्रवंचना करना सरकार का पुराना शगल है। क्योंकि आबादी में बढ़ावा ५० प्रतिशत है जबकि पब्लिक सैक्टर के ही औद्योगिक कारखानों में पूंजी लगाने का वृद्धि प्रमाण ३५८ प्रतिशत और बेकारी की वृद्धि ९०० प्रतिशत है।

और, फिर वर्तमान शिक्षा द्वारा प्रजा के चारित्र्य का स्तर भी ऊँचा नहीं उठा है। भ्रष्टाचार और सामाजिक अपराधों में जिस प्रकार लगातार वृद्धि होती जा रही है, वह हमारी नैतिक गिरावट की सूचक है। बेकारी बेहद बढ़ी है। जो वर्ग मानसिक रूप से भारत विरोधी था, उसके दिमाग को हम भारत-उन्मुख नहीं बना पाए। देश में जगह-जगह पर होने वाले कौमी दंगे इसके सबूत हैं। स्वाधीनता के पच्चीस सालों तक जो राष्ट्रीय भावना थी उसका बहुत जल्द बाष्पीकरण हो गया और उसके स्थान पर प्रादेशिक भावना बलवती होने लगी है। राष्ट्रीय एकता को हड़प कर लेने वाली इस स्थिति का कारण है- अंग्रेजों द्वारा लिखित भारत का बेहद झूठा, आधारहीन परिकथाओं जैसा कल्पित इतिहास। इस इतिहास ने विभिन्न कौमों और प्रान्तों के बीच वैमनस्य पैदा किया है। इसी जहर के कारण प्रत्येक राज्य में और केन्द्र में भी कुर्सी-युद्धों का अंत नजर नहीं आता।

यह परिस्थिति किसी भी सयाने आदमी को चिंतित बना दे ऐसी है।

ग्रामीण बच्चों को डिग्रियों के पीछे न दौड़ाएं

***

ग्रामीण बच्चों का अधिकांश वर्ग किसानों, पशुपालकों और ग्रामीण कारीगरों द्वारा बना हुआ है। उन्हें अपने पैतृक धंधे करने होते हैं। इन धंधों को छोड़कर वे उन उपाधियों के पीछे दौड़ेंगे तो बेकारी का बोलबाला हो जाएगा और कृषि, पशुपालन और ग्रामीण उद्योग नष्ट हो जाएँगे, जो अंधेरगर्दी में परिणत हो सकता है और राष्ट्र की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। राष्ट्र को पालने, पोषने और प्रजा की जीवन-जरूरतें पूरी करने का कर्तव्य इन बच्चों को ही निभाना होगा। इस कार्य में उन्हें कालेज की उपाधियाँ किसी काम में की नहीं आती।

उन्हें कृषि और पशुपालन सीखना हो तो **B. Ag.** या **Veterinary Surgeon** की उपाधि लेने की कोई आवश्यकता नहीं है।

नीति, धर्म और अध्यात्म विहीन शिक्षा पद्धति भीषण अभिशाप है।

मान्य महानुभाव,

सप्रेम स्मरण तथा अभिनन्दन।

विदित हो कि भारत सहित समस्त विश्व विकास के नाम पर मृत्यु, अज्ञान और दुःख के चपेट में पड़कर व्यथित है। मनुष्य अपने लिए ही नहीं, बल्कि अन्य प्राणियों के लिए भी घातक सिद्ध हो रहा है। व्यक्ति तथा वस्तु में विकृति और उनका विलोपन इस यान्त्रिक युग की सहज परख है। कृषि योग्य भूमि, बीज, अन्न, वन, ग्राम, पर्वत, नद-नदी-निर्झर-सागर, शिक्षण संस्थान, तीर्थ, आश्रम, पुरी, पृथ्वी, अग्नि-सूर्य-चन्द्र-विद्युत्, पवन तथा प्रतिभा को प्रगति के नाम पर विषाक्त बनाना आधुनिक दिशाहीन व्यापारतन्त्र तथा शासनतंत्र का व्यसन बन चुका है। विषयलोलुपता तथा बहिर्मुखता की पराकाष्ठा के कारण दुःखमय अशान्त जीवन महायान्त्रिक युग का उपहार है। नीति, धर्म और अध्यात्मविहीन शिक्षा पद्धति तथा जीवन-यापन की विद्या व्यक्ति तथा समाज के लिए भीषण अभिशाप है। वर्तमान शिक्षा पद्धति तथा जीविका पद्धति के कारण संयुक्त परिवार का विलोप परिलक्षित है। इसके फलस्वरूप सनातन कुलधर्म, कुलाचार, कुलवधू, कुलपुरुष, कुलदेवी, कुलदेवता, कुलगुरु, आदि का द्रुत गति से विलोप भीषण सन्ताप है। कम समय में कम सहयोगियों के द्वारा, कम परिश्रम से अधिक उपलब्धि और उसके उपयोग तथा उपभोग से सुख-शान्ति की मान्यता महायान्त्रिक युगका मापदण्ड है। उक्त मापदण्ड के कारण पृथ्वी के धारक गोवंशादि का विलोप, व्यग्रता, विस्मृति, बीमारी, बेरोजगारी, तथा विश्वयुद्ध की विभीषिका प्रति क्षण परिलक्षित है। नीति के साथ प्रीति का, स्वार्थ के साथ परमार्थ का, मेधा के साथ श्रम का, स्वच्छता के साथ शुद्धि का तथा कला के साथ विद्या का सामञ्जस्य न होने के कारण मानवोचित शील से सुदूर मानव स्वयं के लिए तथा अन्यों के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहा है।

'पृथ्वी से उपलक्षित चतुर्दश भुवनात्मक ब्रह्माण्ड सहित सर्व प्राणी सगे संबंधी हैं', 'सबका मङ्गल हो', 'विश्व का कल्याण हो', 'दूसरों के द्वारा किये हुए जिस वर्ताव को अपने लिये नहीं चाहते, उसे दूसरों के प्रति भी न करें', और सब प्राणियों के हित में रत' - का आदर्श विलुप्त हो चुका है। अतएव अयथावत् तथा सर्वथा विपरीत बोधका परिमार्जन कर धर्मनियन्त्रित- पक्षपातविहीन शोषणविनिर्मुक्त सर्वहितप्रद व्यापार तथा शासनतंत्र की स्थापना के उद्देश्य से स्वस्थ व्यूह रचना नितान्त अपेक्षित है।

श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी - निश्चलानन्द सरस्वती, (पुरी ओडिशा)

जिस संविधान के अनुरूप शासनतंत्र होता है, वही क्रियान्वित हो पाता है। धर्म तथा अध्यात्मविहीन अदूरदर्शितापूर्ण यान्त्रिक विकास तक सीमित संविधान के अनुरूप शासनतन्त्र देहात्मवाद का पोषक होने के कारण वर्णसङ्करता तथा कर्मसङ्करता का, तद्वत् बहिर्मुखता तथा विषयलोलुपता का उद्दीपक होता है। अत एव वह मनुष्य को मात्र भोजन करने तथा संतान उत्पन्न करने वाला यन्त्र बनाने तक सीमित होता है। उसके फलस्वरूप मानवोचित शीलादि से विहीन मनुष्य अन्य मनुष्यों तथा स्थावर-जङ्गम प्राणियों के सहित स्वयं का भी विघातक सिद्ध होता है।

श्रीमज्जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी - निश्चलानन्द सरस्वती, (पुरी ओडिशा)

(मूल हस्तलिखित पत्र की टाईप की गई नकल)

।। श्री रामानुजाय नमः।।

उत्तराखण्ड पीठाधीश्वर जगद्गुरु
रामानुजाचार्य श्री श्री १००८ स्वामी
श्री कृष्णामाचार्यजी महाराज

पत्राचार का स्थाई पता –
श्री कृष्ण कुंज
श्री रामानुज मार्ग, मावाकुण्ड, ऋषिकेश (दैहरादून)

श्री अरविन्द एम. पारेखजी, जय श्रीमन्नारायण।

आपको, आपके संपूर्ण परिवार एवं सभी स्वजन, प्रियजन, आत्मीय जन, इष्ट मित्र तथा आपके प्रेरणास्रोत, मार्गदर्शक, शुभचिंतक, विचारक, बुद्धि एवं विवेक संपन्न साथियों को भगवान वेणूगोपाल का कृपा प्रसाद एवं श्री स्वामीजी महाराज का मंगलाशिष।

यूनाईटेड नेशन्स के तत्वाधान में धार्मिक / आध्यात्मिक नेताओं की सहस्राब्दि विश्व शांति शिखर परिषद द्वारा जारी उद्घोषणा के अनुच्छेदों की ''पोस्ट मोर्टम'' (शल्य क्रिया) करने के पूर्व परिषद में उपस्थित रहने वाले धर्मगुरुओं से जो सारगर्भित प्रश्न पूछे गये हैं, वे सभी अपने आप में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली, बाह्य रुप से किंचित् कठोर किन्तु यथार्थ वास्तविक एवं यथावत् सत्य चित्र उपस्थित किया है। प्रश्न अपने आप में अद्वितीय है।

(१) यह सत्य है कि जिन व्यक्तियों ने इस परिषद का आयोजन किया है, न तो उन्हें इसका अधिकार है, न सही मायने में वे विश्वशांति का अर्थ समझते है, बल्कि जानबूझकर सत्य से कोसों दूर जाकर अपनी स्वार्थसिद्धि की कामना पूर्ण कर रहे है।

(२) यह भी सत्य है कि तद् – तद् धर्म के अधिकृत धर्मगुरुओं को आमंत्रित नहीं किया गया। यह एक स्वार्थपूर्ण अनधिकार चेष्टा थी।

(३) यह भी कठोर सत्य है कि भारतीय आदर्श की विश्वशांति और यू.एन.ओ के आदर्श की विश्वशांति में जमीन – आसमान का अंतर है, एक जातिवादी है,तो दूसरी मानव कल्याणकारी वास्तविक विश्वशांति है... जिसमें सभी जातियों,

यदि सच्चे मन से शुद्ध हृदय से मानवजाति को संकटपूर्ण स्थिति से उबार कर विश्व को शांति और कल्याणकारी, मंगलमयता प्रदान करना है, तो भारतीय ऋषि-मुनि-महात्माओं द्वारा मोक्ष के लक्ष्य के साथ सुस्थापित, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चार पुरुषार्थों की सनातन संस्कृति को आत्मसात् करना होगा। जिसके आधार पर यह विश्वशांति, मानवता का कल्याण एवं मंगलमय स्वरुप टिका हुआ है, यह शाश्वत सत्य है।

प्राकृतिक सिद्धांतो का गला घोंटकर, न्याय को दफना कर, गरीबी, भूखमरी और अनीति का ताण्डव कर, वायु, जल, जमीन, वातावरण को दूषित कर, चारों ओर प्रदूषण फैला कर जीना असंभव बनानेवाली यूनो की अनीति द्वारा पुरुषार्थ की संस्कृति के विनाश की योजनाओं को कदापि सफल नहीं होने देना चाहिए । भारत के विवेकशील संत महात्माओं, सारस्वतीपुत्रों को यह सत्य संदेश संसार के कोने कोने में जन - जन के हृदय में बीजारोपण कर, अंकुरित कर एक सुंदर कल्पवृक्ष शांति के महासागर को लहराना चाहिए ।

प्रजाओं, धर्मों, सभी रंगो की प्रजाओं का अस्तित्व स्वीकार किया गया है और इस संसार में सबको अपना स्थान सम्मान देते हुए 'जिओ और जीने दो' को चरितार्थ किया गया है।

(४) इस उद्घोषणा के अवलोकन मात्र से यह स्वयं सिद्ध हो जाता है कि, यह पहले से ही तैयार थी, कतिपय धर्मगुरुओं ने अपने हस्ताक्षर कर उसी प्रकार स्वीकृति दे दी, जिस प्रकार लाल बहादुर शास्त्रीजी ने ताश्कंद में दे दी थी। क्योंकि जगत में मात्र एक ही ईसाई धर्म, एक ही श्वेत रंग के साम्राज्य को कदापि मान्यता प्रदान नहीं की जा सकती।

IMP :- यह नग्न सत्य है कि आज मानवजाति संकटपूर्ण स्थिति में सिसक रही है। किंतु इसके लिये उत्तरदायी कौन है? द्विअर्थी शब्दों और कपटपूर्ण भाषा से यह संकट दूर होने वाला नहीं । तालीबान पर बमवर्षा करना, टैंको से लाशों के ढेर लगाना, हिंसा का क्रूर ताण्डव करना जो उचित ठहराता है, वही कश्मीर में मानवता को कुचलते, नृशंस हत्योओं को देख-समझ रहा है, फिर भी मौन! इससे विश्वशांति कैसे संभव है?

मानवजाति को संक्रामक कैंसर हुआ है। वेटिकन चर्च के हिंसक, शोषक, बेक्टेरियाज के विषैले आमानुषिक चिंतन से - अनार्य जीवन व्यवस्था द्वारा आर्य जीवन व्यवस्था पर सांघातिक प्रहार करने से। अतः रोग की जड को छोड कर डाल - डाल पत्ती पत्ती पर लटकने से हकीकत को छुये बिना, संक्रामक रोग का सही निदान नहीं हो पायेगा। तथा कथित ''नई दिशा'' तय करना संसार को भ्रमित कर मूर्ख बनाना है।

नई दिशा के मायाजाल बनाम वेटिकन-दूषित संक्रामक रोग के विषैल चिंतनको विश्व भर से तत्काल समाप्त कर आर्य जीवन व्यवस्था को रचनात्मक, क्रियात्मक स्वरूप प्रदान करने की आवश्यकता है। इसी भगीरथ प्रयास से मानव कल्याण एवं विश्वशांति संभव है।

अतः भारत के धर्मगुरु अपना पुनीत कर्तव्य समझ कर वेटिकन के विष से निजात दिलाकर भारतीय संस्कृति-चिंतन का अमृतपान कराएं ।

धर्मगुरु हमारे मार्गदर्शक हैं, पूज्य है। उन्हे नेता कहना न्यायसंगत नहीं है, क्योंकि आज के युग में नेता और नगरवधू के चरित्र में समानता होने से भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

''दिशा-शून्य'' नई दिशा के गहरे गर्त की ओर जा कर संकटों को आमंत्रित करने की आवश्यकता कदापि नहीं है। प्रत्युत आवश्यकता है अध्यात्मवाद की नींव पर खडी विश्व कल्याणकारी, मानवता का मंगल करने वाली ''आर्य संस्कृति'' की पुनः स्थापना की - आर्य जीवन व्यवस्था को पुनः प्रतिष्ठित करने की।

धार्मिक नेता और आध्यात्मिक नेता अलग नहीं है। दोनों ही एक है, मानव के आध्यात्मिक विकास के लिये ही धर्म की उत्पत्ति हुई है।

यूनाईटेड नेशन्स नामक संस्थाको मानव जाति के गौरव, न्याय की रक्षा और संसार की सच्ची शांति स्थापनमें कोई रुचि नहीं है - प्रत्युत युरोपियन राजनेताओं ने इनके अस्तित्व पर कुठाराघात किया है। यूनो हिंसा, शोषण, ईसाईयत, भौतिकवादी तत्वों और अपना उल्लू सीधा करने वाली व्यवस्थाओं को संपूर्ण जगत में व्याप्त करने में रुचि रखता है। अंदर के विष वमन को वाणी पर शहद लगा कर अभिव्यक्त किया जा रहा है। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये भारत के धर्मगुरुओं को औजार बना कर दुरुपयोग करने की दुर्भावना से प्रेरित है - यह नई दिशा का भौतिकवादी प्रयास। भारत के संत सतर्क रहे, भुलावे में भटके नहीं।

यूनो भौतिकवादी बल का पोषक है और भारतीय संस्कृति - संत अध्यात्म बल के स्तंभ है। इन दोनों का मेल संभव नहीं। यह केर - वेर का साथ निभ नहीं सकता। एक शोषक है, दूसरा पोषक महान है। अतः भारत के मनीषी, विवेकी, धर्मगुरुओं को यूनो की असलियत पहचान लेना चाहिये। वेद, शास्त्र, धर्मनिष्ठ अध्यात्मवाद की नींव पर खडी धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, राजकीय, मानवकल्याणकारी व्यवस्थाओं को नष्टकर, यूनो के मीठे वाणी विलासपूर्ण आडम्बरों के जाल में फंस कर भौतिकवाद, स्वार्थवाद का साथ देकर मानवता का अमंगल न करें। दिशा विहीन नई दिशा अनैतिकता के गहरे गर्त में गिराने वाली है। विश्वशांति वेटिकन विष से नहीं, भारतीय चिंतन, मनन, परोपकार, सहानुभूति, करुणा, दया, अनुकंपा, क्षमा, उदारता आदि सद्गुणों से ही संभव है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को चरितार्थ करने, स्वयं के समान ही जीवों को मानने, अहिंसा को आत्मसात् करने से ही मानवता का मंगल होगा, विश्वशांति का भव्य भवन निर्मित हो सकता है।

zee news में दिनांक ११-६-२०१७ रविवार को

शिक्षा प्रणाली से भारत की तस्वीर कैसे बदलेगी ?

इस विषय में **Transforming India**

कार्यक्रम में भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री

श्री मुकुल कानीटकरजीने कहा...

भारत में एक बहुत बड़ी क्रान्ति शुरु हुई है की गुरुकुलों का पुनः प्रस्थापन युगानुकुल रूप में हो रहा है ।

क्योंकि जहा पर सर्वांगीण और समग्र शिक्षा मिलेगी वही पर बच्चा आगे जाएगा ।

जब तक समाज शिक्षा का दायित्व अपने हाथ मे नही लेता, सरकार चाहकर के भी परिवर्तन नही कर सकती ।

वैदिक गणित में विश्व विजेता बने तुषार तलावट की GSTV चेनल पर एक झलक

भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी के करकमलों से सन्मानि तुषार तलावट

twitter

"Kudos to Tushar Vimalchand Talavat For Winning ALOHA Mental Arithmetic Intl competition 2016 held in indonesia"

@prakashjavadekar

(केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री)

"MHRD thrilled by the achievements of Gurukul Chhatra at International Competition, blessed Tushar and hoped for more"

@Mukulkanitkar

(अ.भा. सह-संगठन मंत्री भारतीय शिक्षण मंडल)

"Like Tushar, other students can really showcase their talent through various competitions"

@HRDMinistry

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री प्रकाश जावडेकरजी के बधाई संदेश के कुछ अंश

चेन्नाई के तुषार तलावट ने अंक गणित की आंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में जिसमें १८ देश के १२०० बच्चो ने भाग लिया था और उन १२०० छात्रों में ये पिछले साल का भारत विजेता इस बार विश्व विजेता बन गया और एक इंटरनेशनल कोम्पिटीशन में उसको ग्रान्ड चैंपियन करार घोषित किया गया।

हमारे छात्रों की केपेबिलिटी पर मुझे बहुत भरोसा है, ये ही देश का भविष्य हे,

तुषार को मैं बहुत बधाई देना चाहता हूं क्योंकि उसने कीर्तिमान स्थापित किया है।

THE TIMES OF INDIA - Student Edition D - 01/08/2016

14-YEAR-OLD WINS INTERNATIONAL maths competition

A student of ahmedabad-based Hemchanracharya Sanskrit Pathshala has brought laurels to the country by winning an international mathematics contest

All photos and videos will be fatured on toistudent.com

Tushar Talawat won the 'International Mathematics Competition', organised by Abacus Learning of Higher Arithmetic (ALOHA) International in Indonesia Yogyakarta on July 24, where more than 1,300 students from 18 countries participated.

"His achievement has not only made the country proud, but also drawn attention towards the Gurukul education system. The ancient field of Vadic mathematics has again shone at the world level with his feat," Mukul Kanitkar, joint organising secretary Bhartiya Shikshan Mandal (BSM), said. At the national-level competition in December last Year in Chennai, He had solved 70 questions relating to addition, subtraction and multiplication of six digits in three minutes

FUN WITH NUMBERS

Abacus: A global technique used in preschools and elementary schools.

Training time : 6-24 months

Math application : Complex addition, subtraction, multiplication, division and square root.

WHAT IS ALOHA?

ALOHA Stands for Advanced Learning of Higher Arithmetic. It is a form of training which will enhance a child's ability to calculate without the aid of any devices, such as a calculator.

Tushar has excelled in similar contests organised in India. During the Gujarat leg of the competition in October last year, he had solved 70 questions in 3 minutes and 30 seconds and defeated 4,300 competitors

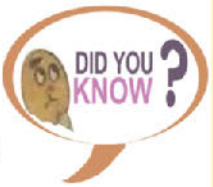

उसकी उपलब्धी ने न केवल देश का गौरव बढाया है, बल्कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ओर सबका ध्यान भी आकर्षित किया है ।

गुजरात राज्य के राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहलीजी के वरद हस्तो से वैदिक गणित में राष्ट्रीय स्तर विजेता तुषार तलावट के सम्मान की एक झलक ।

ऋषिकालीन शैक्षणिक परम्परा का गौरवपूर्ण सम्मान

गुजरात समाचार प्लस | दिनांक ०१-०३-२०१६ | पृष्ठ संख्या -२

ऋषिकालीन शैक्षणिक परम्परा को पुनर्जीवित करने का अप्रतिम कार्य करने के लिये 'हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला' के संचालक श्री उत्तमचंदजी जवानमलजी शाह को 'एज्युकेशन ट्रस्ट' की ओर से महामहिम राज्यपाल श्री ओ. पी. कोहली के करकमलों से सारस्वत अवार्ड से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर अन्य १५ सारस्वतों को भी सम्मानित किया गया ।

पर्यंपराओं का गुरुकुल

अपनी विद्वता से चकित कर देते हैं यहां के बच्चे, वैदिक गणित से लेकर घुड़सवारी तक करते हैं...

पुरातन समय में दी जाने वाली भारतीय शिक्षण पद्धति से कराई जाती है यहां पर पढ़ाई...

भारतीय शिक्षण पद्धति से देश को संगठित करने की कोशिश...

गुरुकुल यानी गुरु का कुल। गुरुकुल का अर्थ बड़ा व्यापक है। सामान्य तौर पर यह समझा जाता है पुराने समय में जब बच्चे घर परिवार से दूर रहकर शिक्षा लेते थे उसे गुरुकुल कहते हैं, लेकिन यह पूरा अर्थ नहीं है। भारतीय शिक्षा पद्धति में गुरुकुल के मायने इससे ज्यादा हैं। गुरुकुल वह जगह होती थी जहां राजकुमार हो या फिर किसी सामान्य घर का बालक। सभी साथ रहकर गुरुकुल में गुरु से एक सामान शिक्षा पाते थे। समाज में उनकी प्रतिष्ठिता इस बात से होती थी कि वह किस गुरुकुल में और किस गुरु के सानिध्य में रहकर शिक्षण लेकर आए हैं। भारतीय शिक्षण पद्धति से शिक्षा देकर अहमदाबाद स्थित आचार्य हेमचंद्र संस्कृत पाठशाला 'गुरुकुलम' वही परंपरा स्थापित करने की कोशिश कर रही है जो कभी हमारी विराट और विशाल संस्कृति की आधारशिला थी। यहां के छात्रों का दिमाग कंप्यूटर से भी तेज गति से काम करता है। गुजरात से लौटकर *पंजाब केसरी के सतेन्द्र त्रिपाठी, आदित्य भारद्वाज और फोटोग्राफर मिहिर सिंह की विशेष रिपोर्ट...*

गुरुकुल का एक मात्र उद्देश्य भारतीय शिक्षण पद्धति को बढ़ावा देना है। हमारा उद्देश्य है आने वाले समय में डिग्री के आधार पर नहीं बल्कि योग्यता के आधार पर लोगों को प्राथमिकता दी जाए। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमने इस गुरुकुल की स्थापना की थी। भारतीय शिक्षण पद्धति और भारतीय ज्ञान विश्वभर में फैले यही हमारा उद्देश्य है। अंग्रेज जब आए तो उन्होंने हमारी शिक्षण पद्धति पर सबसे पहले प्रहार किया। इसी के चलते गुरुकुल बंद होते चले गए और उसकी जगह ऐसी शिक्षा पद्धति आ गई जहां डिग्री को महत्व दिया जाने लगा। हम अपने छात्रों को कोई डिग्री नहीं देते बल्कि उन्हें योग्य बनाते हैं। — **उत्तम भाई शाह**, गुरुकुल के संस्थापक

REVOLTPRESS
Revolt Press Media

गुजरात का ये गुरुकुल टक्कर देता है अमेरिका की हॉवर्ड से लेकर भारत की आईआईटी तक को

6th Mar 2016, 2:58 am

अमेरिका की हॉवर्ड विश्वविद्यालय से लेकर भारत की आईआईटी में क्या कोई ऐसी शिक्षा दी जाती है कि छात्र की आंख पर पट्टी बांध दी जाये और उसे प्रकाश की किरणें भी दिखाई ना दे, फिर भी वो सामने रखी हर वस्तु को पढ़ सकता हो? है ना चौकाने वाली बात? मगर यह चमत्कार भारत में किसी और जगह नहीं बल्कि प्रधानमंत्री के गृहराज्य गुजरात के महानगर में आज साक्षात् हो रहा है।

आधुनिक़ शिक्षा क़ो क़डी चुनौती

Rajiv Dixit
Sunday at 12:12 PM · Rajiv Dixit Ji

इस विधालय को चलाने वाले उत्तम भाई चुनौती देते हैं कि भारत के सबसे साधारण बच्चों को छांट लिया जाए और 10-10 की टोली बनाकर दुनिया के 10 सर्वश्रेष्ठ विद्यालय में भेज दिया जाए 10 छात्र उन्हें भी दे दिए जाएं| साल के आखिर में मुकाबला हो| अगर उत्तम भाई के विधालय के बच्चे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों के विद्यार्थियों के मुकाबले कहीं गुना ज्यादा मेधावी ना हो तो उनकी गर्दन काट दी जाए

इनके आगे आधुनिक शिक्षा ने टेके घुटने !
10,23,000 views
RAJIVDIXITJI.COM

'गुरुकुलम्' के आंगन में पधारे हुए पंचखण्डपीठाधीश्वर आचार्यश्री धर्मेन्द्रजी महाराज के साथ श्री उत्तमभाई शाह (संचालक : गुरुकुलम्)

आर. एस. एस. के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवतजी को 'गुरुकुलम्' के विषय में चर्चा करते हुए श्री जितुभाई बालड (सह संचालक : गुरुकुलम्)

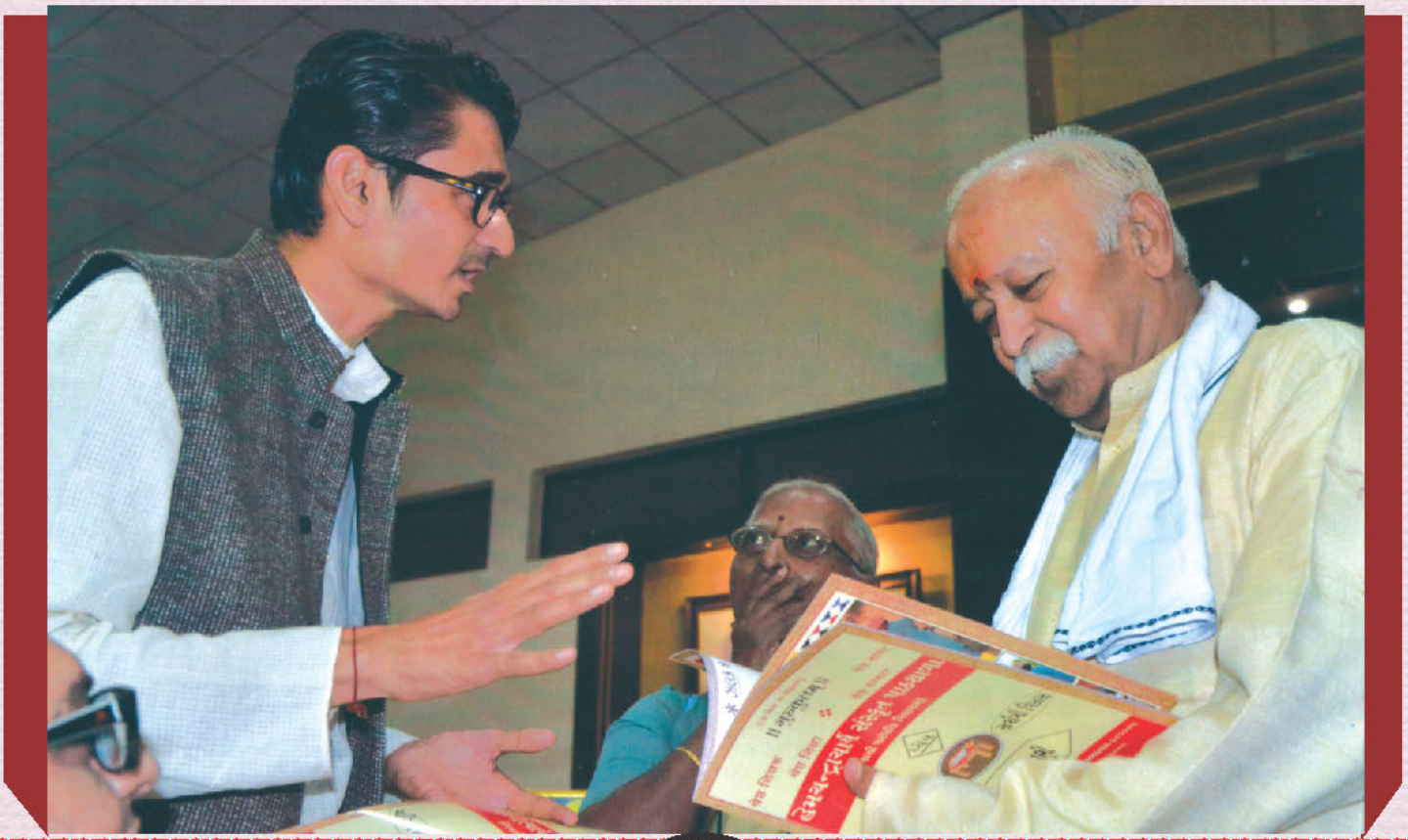

गुरुकुलम में पधारे नेपाल के राजदूत श्री दीपकुमार उपाध्याय

आज हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला, साबरमती अहमदाबाद गुरुकुलम का निरीक्षण भ्रमण करने का अवसर मिलने पर बहुत खुशी लग रही हैं । हम पूर्वीय दर्शन संस्कृत और सभ्यता के अनुयायि राष्ट्र के नागरिकों में हमारी प्राचीन वैदिक दर्शन आधारित गुरुकुल पद्धति का व्यवहारिक प्रयोग के माध्यम से विद्यार्थीओंने की हुई प्रगति अतयन्त प्रशंसनीय है । यह पाठशाला परिकल्पना संचालन व विस्तार में संलग्न सम्पूर्ण महानुभावों को सादर अभिनन्दन के साथ बधाई ज्ञापन करना चाहता हूँ।

इस के बारे में नेपाल में चल रहे क्रियाकलाप के आपसी संपर्क और विषय में समन्वय के लिए हार्दिक आग्रह कहता हूं ।

मनुष्य का सर्वाङ्गी विकास के अभियान में सफलता प्राप्त हो ऐसी हार्दिक शुभेच्छा व्यक्त करता हूँ।

१२ जनवरी २०१७

– नेपाल के राजदूत श्री दीपकुमार उपाध्याय

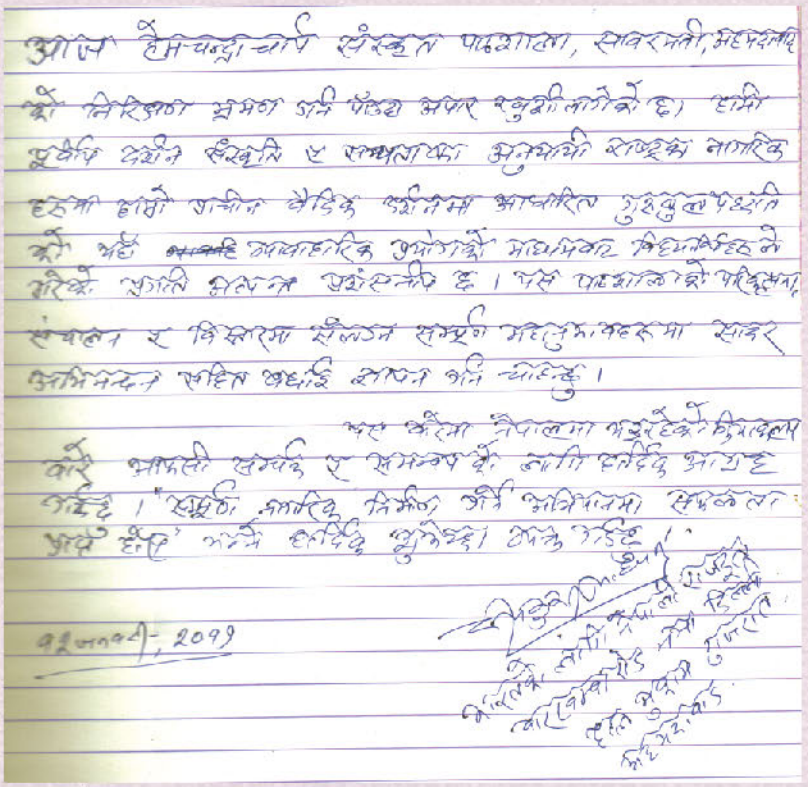

प्रसिद्ध पत्रकार श्री वेदप्रताप वैदिक, विश्व हिन्दु परिषद के अध्यक्ष
श्री प्रवीणभाई तोगडिया, श्री जोरावर सिंहजी जादव,
श्री कुमुदभाई वेलचंद, श्री अक्षय जैन - संपादक (दालरोटी)
मेनेजींग ट्रस्टी - श्री वंशराजजी भणसाली, श्री संजयभाई कोठारी
द्वारा सन्मान प्रात करते हुए छात्र

हेमचंद्राचार्य–संस्कृत पाठशाला–साबरमती की मुलाकात हेतु पधारे हुए

अन्ना हजारे

हेमचंद्राचार्य–संस्कृत पाठशाला–साबरमती की मुलाकात हेतु पधारे हुए

योगगुरु श्री बाबा रामदेव

HINDUSTAN TIMES, NEW DELHI
MONDAY, NOVEMBER 14, 2016

htinsight

Vedic education, organic

CLASS APART Floors are covered with cowdung, walls with lime paste and food is organically made. At this Gurukulam, English is not used and students are taught in Hindi, Sanskrit

Smriti Kak Ramachandran
smriti.kak@hindustantimes.com

AHMEDABAD: Wooden carts and horses in the front yard, mooing cows in the barn, walls with hand painted frescoes and food being cooked on a stove fired by cow dung cakes — this is not a set for a period drama, but a residential school for boys in the heart of Sabarmati in Ahmedabad.

Canada-based Nandini and Rajeev Vishwakarma wanted an education for their two sons that would equip them with life skills, without alienating them from India's spiritual and traditional heritage.

After months of research, they flew down to Sabarmati in Gujarat with their sons, nine-year old Kuber and Shiva who is five. Their stop was the Hemchandra Sanskrit Pathshala, a Gurukulam (residential school) for boys run by a Jain trust. Most of the students here are in the age group of 6 to 18 years.

The Vishwakarmas were convinced that the Gurukulam imparted the holistic education they were looking for. And so, Kuber is now at the Gurukulam with 100 other kids. But what sets the Gurukulam apart is that the 5,000 square yard campus, nestled in a residential pocket of Sabarmati, is a trek back in time.

A UNIQUE CAMPUS

Stone floors are plastered in cow dung as it is supposed to have anti-radiation properties, walls are whitewashed with lime, food is organically produced, milk comes from the 60-odd cows in the barn; in the kitchen, cow dung cake is the cooking fuel and ash works as a detergent. Electricity is the only modern energy source, though its judicious use is underlined several times over. Education is imparted in Sanskrit, Hindi and Gujarati. No fee is charged from students. There are annual holidays and breaks, but no school leaving exams or certification from any school board.

Why then did the Vishwakarmas — Nandini, a nurse and Rajeev, a former journalist — pick the Gurukulam? "The system of education in Canada can only help them earn a living, but we want them to know the essence of life — yoga, meditation and values," says Nandini.

Students attend a class on astrology at the Hemchandra Sanskrit Pathshala in Sabarmati.

The Sharmas from Singapore too picked the Sabarmati Gurukulam for their 11-year old son Krishendu. "The exams were hard, education was expensive and overall I was stressed," says Krishendu about his school in Singapore.

Six months at the Gurukulam, the boy who loved to read and play games on the iPad, says he's happy to be "stress free". "I miss books (English books are not allowed until the students turn 16), but otherwise I don't miss the video games or TV," he says with the composure of a grown-up.

Started in 2008 by Jain businessman and philanthropist, Uttambhai Shah, and run entirely on donations with no affiliation to any school board, the Gurukulam does not follow the pedagogy of the "Macaulay system" says, principal Deep Koirala. The accent here is on ancient Indian learning, the Vedic methods of mastering the arts and sciences; students are taught metallurgy or space science based on what the scriptures say.

SKILLS THAT MATTER

The system of education has endeared the Gurukulam to the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS), which has been pushing for a similar pattern of learning. How relevant or prudent is this learning methodology at a time when students are exposed to computer-aided learning and developments in sciences?

"Students of the Gurukulum are way ahead of their counterparts in private schools," says Mukul Kanitkar, joint organising secretary of RSS-affiliated Bhartiya Shikshan Mandal (BSM).

He says not only can they compete with their counterparts in streams such as maths and science, but have an edge over them when it comes to life-skills. "They can identify herbs, use their hands to create things, weave cloth…they are equipped for the world," Kanitkar says.

The BMS, in the forefront of pushing for a change in India's education policy and removing "western influence" from history, is spearheading the revival of ancient forms of learning rooted in

living and no degrees

Gujarat. SMRITI KAK RAMACHANDRAN / HT PHOTOS

■ In the Gurukulam kitchen, cow dung cake is used as cooking fuel and ash works as a detergent. Milk comes from the 60-odd cows in the barn.

'Indianess'. It has found in the Gurukulam an idea that needs incubation. It mentors the Gurukulam, and plans are underway for propagating the concept.

MODEL SCHOOL

A similar set up has been started for girls a little distance away from the Gurukulam, where 225 girls are enrolled. This too is run by a Jain sect. Gurukuls run by religious trusts have also come up in Maharashtra's Kaneri where there are 100 students and in Rajasthan's Jodhpur which has 50 students. "About 10-15 organisations that have land and resources approached us to set up Gurukuls; some IITs and IIMs have envisaged interest too. But right now, we cannot expand as this is not a commercial enterprise. In Sabarmati we have a student teacher ratio of 100:150. We are now focusing on orienting right Acharyas (teachers)," he says.

Even as Kanitkar holds out the Gurukul model as an answer for "undoing the frailties of western learning concepts" adopted by Indian schools, he is categorical in wanting to keep the government out. "We think sarkar and bazaar (government and businesses) should not have anything to do with imparting education," he says.

For the RSS, implementation of teaching in the mother tongue and a push for revisiting the knowledge in the Vedas, the gurukul system also offers a shot at inculcating nationalism. Though most of the gurukuls are controlled by religious sects, nationalism, bordering on anti-west sentiments is a perspicuous presence.

Take the case of 10- year-old Manjit Singh, a student at the Gurukulam who earlier went to a school in Alwar; he says the Gurukulam is unlike the "vinashkari" (destructive) education system started by the British. "The traditional gurukul system that produced Kings like Lord Ram was destroyed by the British and if we move away from our culture we will also be destroyed," says the aspiring musician with a reasoning that belies his age.

DEGREE OF LEARNING

The lack of certification is not a deterrent for most here; though some students opt to enroll in the National Open School system for a certificate. No students have passed out yet from the Gurukulam, but most want a career in fine arts, music; with some wanting to become monks.

"We do not discourage students from enrolling as private candidates, but a majority is happy with the learning outcome here," says Koirala, himself a product of a gurukul.

The Gurukulam also doubles up as an ecosystem for organic practices, a throwback to what was followed centuries ago.

Jeetu Bhai Balad, a trustee, has converted a portion of the complex into a repository for ancient knowledge. On the top floor of a building are workshops for creating special paper and ink used for writing scriptures. "We are reviving ancient practices that were eco-friendly. We want to cut down on chemicals that are poisoning the environment and life," he says.

AT THE GURUKULAM

- Kautilya's treatise on governance 'Arthashastra', Vedic Maths, music, arts and ayurvedic medicine are part of the curriculum as is astrology
- There are no cramped classrooms, groups of students are taught together based on their mental ability and proficiency. A music class, for instance, could have students from 6 to 16 learning together
- Students from the age group of 6-18 are enrolled
- For recreation there is the traditional gymnastics (Malkhamb) and horse riding

Follow Us : Follow @TheRevoltPress 28-06-2016

REVOLTPRESS
The Press Revolution

ऐसा 'गुरुकुल' जिसके आगे बौने साबित होते हैं दुनिया के सभी 'स्कूल'

28th Jun 2016, 10:04 am

अहमदाबाद (कर्णावती): दिन प्रतिदिन गिरती जा रही भारतीय व्यवस्था पर चिंता करने वाले बहुतों बुद्धिजीवी मिलेंगे लेकिन भारतीय शिक्षा व्यवस्था कैसी हो, उसका स्वरूप कैसा हो, किस प्रकार उसे विकसित किया जाए

ऐसे हर प्रश्नों का जवाब है : गुजरात का यह गुरुकुल, जो आज इक्कीसवीं सदी में भी पूर्णतया भारतीय परंपराओं पर आधारित शिक्षा देता है। अपनी अनूठी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से आज यह दुनिया के बड़े बड़े संस्थानों को टक्कर दे रहा है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए 'आदर्श मॉडल' हे यह 'गुरुकुल'

छात्रों द्वारा बनाई कलाकृतियों की प्रदर्शनी

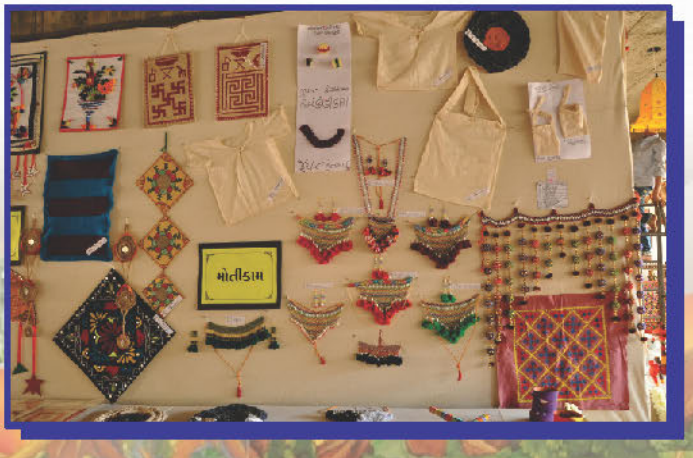

यह गुरुकुलम् शिक्षा-क्षेत्र में उठी पिछले २०० वर्षों की सबसे शक्तिशाली तरंग है, जो सकल भारत को कम्पायमान कर रही है।

देश भर के अभिभावक और विद्वज्जन इस तरंग के प्रभाव से अचंभित तो हुए ही हैं, प्रसन्न और तृप्त भी हुए हैं।

– अभिषेक तिवारी
ललितपुर उत्तरप्रदेश

दाल-रोटी अक्टूबर-दिसम्बर २०१६ में से साभार - अक्षय जैन

भारत के असली नायक उत्तमभाई को आप नहीं जानते

भारत की भूमि सेवा, समर्पण, पुरुषार्थ और निर्माण की भूमि रही है। एक ऐसे ही व्यक्तित्व का नाम है - उत्तमभाई जवानमलजी शाह, जिन्होंने इस देश को गुलाम बनाये रखने वाली विनाशकारी मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का सशक्त और सफल विकल्प दिया है। आज उनके गुरुकुल को देखने देश और दुनिया के कोने-कोने से लोग आ रहे हैं!

राजस्थान के बेड़ा गाँव के एक मारवाड़ी पोरवाल जैन परिवार में जन्म। सरलमना और चेहरे पर ऋषियों-मुनि जैसी चमक। दुबले-पतले उत्तमभाई को देखकर इस बात का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता कि

यह शख्स भारत के पुनर्निर्माण का मार्गदर्शक अध्याय लिख रहा है।

भरा पूरा परिवार जहाँ धार्मिक, आध्यात्मिक और सात्विक जीवन मूल्यों का नजारा देखनें को मिलता है। उनके घर का आंगन गोबर से लिपा-पुता मिलेगा। मुकेश अंबानी और दूसरे उद्योगपतियों ने स्कूल और कॉलेज इसलिए खोले ताकि मल्टीनेशनल कंपनियों के लिए सेल्समेन पैदा हो सकें। उत्तमभाई ने गुरुकुल की स्थापना इसलिए की ताकि चरित्रवान, स्वावलंबी और प्रतिभाशाली देशभक्त पैदा हो सकें।

उत्तमभाई के जीवन में पंन्यास श्री चन्द्रशेखरविजयजी महाराज और मुनि श्री हितरुचिविजयजी महाराज के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। 'विनियोग परिवार' के संस्थापक श्री अरविन्दभाई पारेख और वेणीशंकर वासु उनके आदर्श विचारकों में शामिल हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकर धर्मपालनजी की जीवन-दृष्टि और इतिहास-लेखन के वे प्रबल प्रशंसक है। उत्तमभाई अक्सर कहते भी हैं कि जहाँ डिग्री है; वहाँ अंग्रेज है और जहाँ अंग्रेज है, वहाँ अंधकार है।

उत्तमभाई ने अपना पूरा जीवन शिक्षा को समर्पित कर दिया है। भारत की मौजूदा समस्याओं का मूल आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली है। उत्तमभाई का कहना है कि शिक्षा प्रणाली बदली तो देश बदल जाएगा।

ऐसे कर्मठ, दूरदर्शी और जुझारु व्यक्ति के लिए पद्म पुरस्कार भी छोटे पड़ जाएंगे! उत्तमभाई के जज्बे को सलाम!

नाट्य अभिनय करते हुए छात्रगण

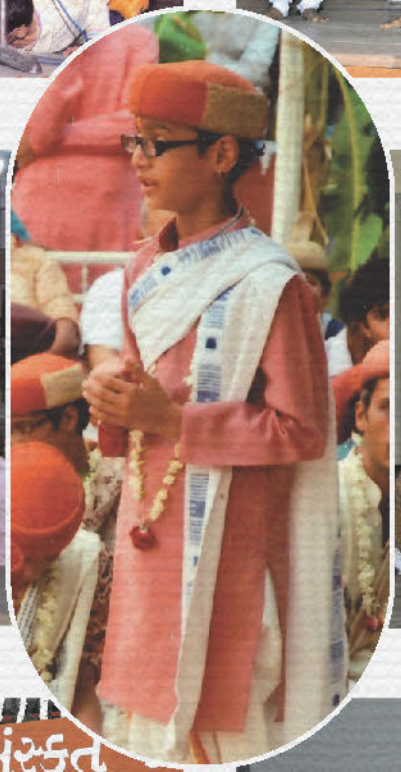

नृत्य की शानदार अभिव्यक्ति

वाद्य यंत्र बजाता हुआ

छात्र गण

पीशमीड एवं योगासन की विभिन्न मुद्राओं में छात्र

पीशमीड एवं योगासन की विभिन्न मुद्राओं में छात्र

घुड़सवारी की विभिन्न मुद्रायें।

घुड़सवारी करता हुआ छात्रगण

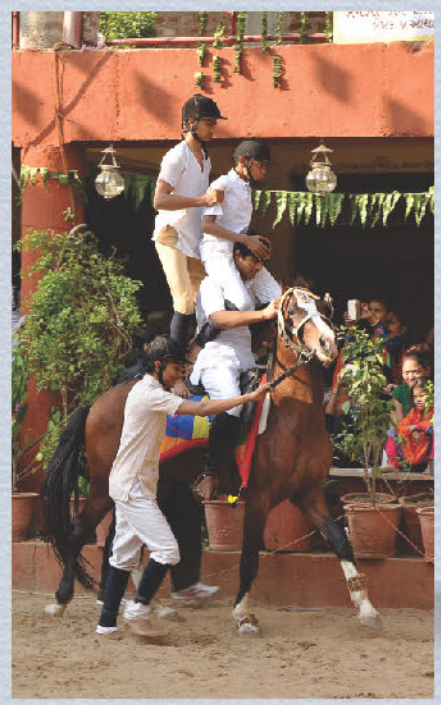

रोप मलखम करता हुआ छात्रगण

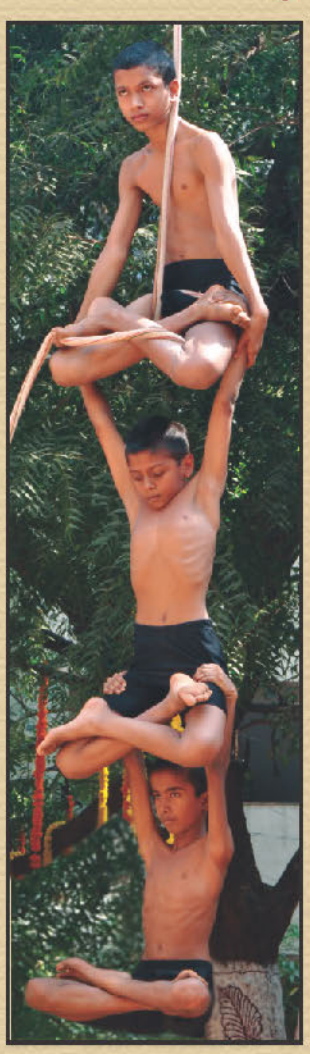

व्यायाम करता हुआ छात्र गण

पोल मलखम करता हुआ छात्रगण

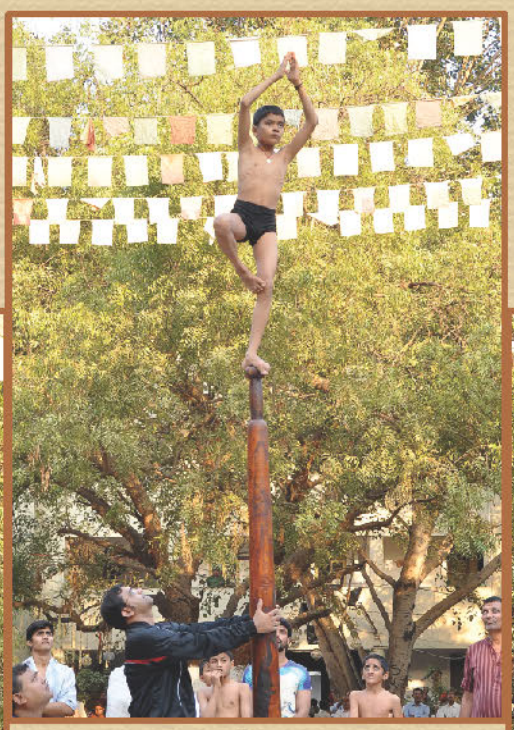

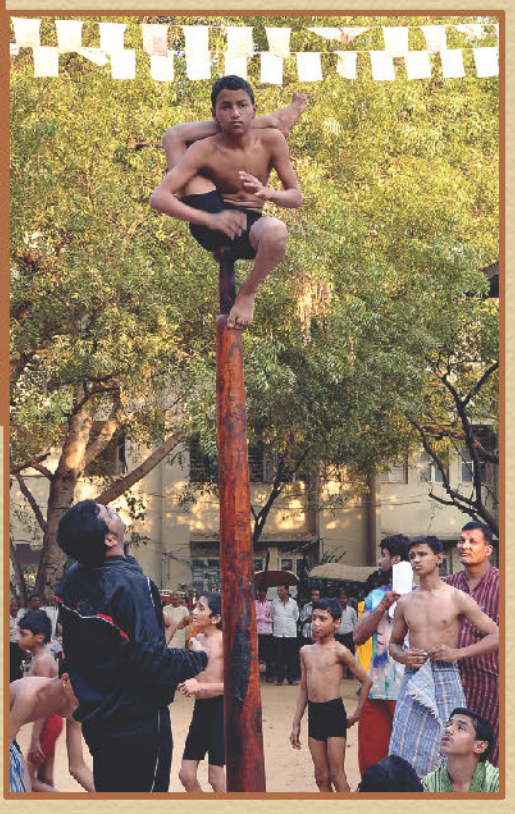

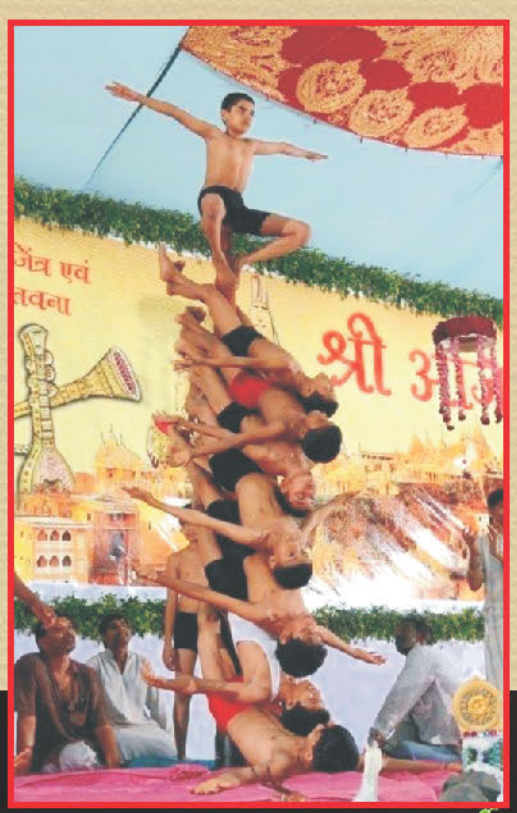

पोल मलखम करता हुआ छात्रगण

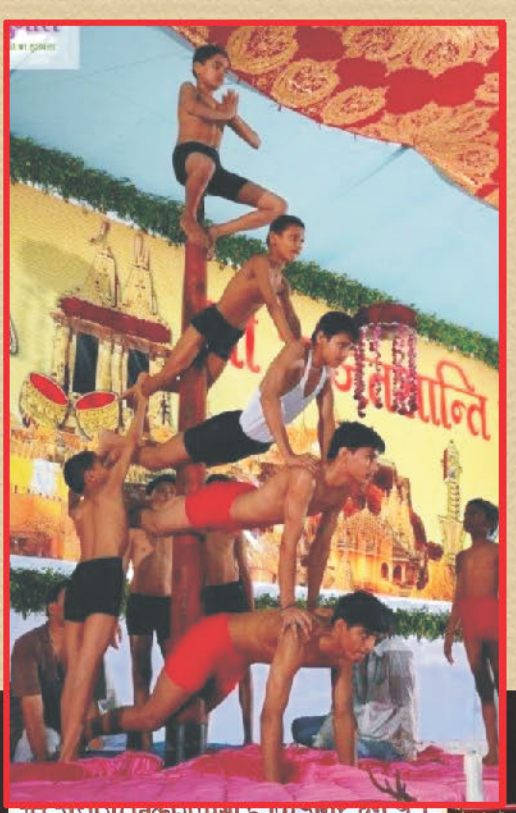

और एक नया कीर्तिमान

तबला वादन स्पर्धा में गुरुकुलम् का छात्र राज्य कक्षा में प्रथम

राज्य के खेल-कुद मंत्रालय द्वारा दिनांक १०-९-२०१७ को आयोजित "कला महाकुंभ, २०१७" मे गुरुकुल के छात्र कुशल विजयभाई शाहने तबलावादन स्पर्धा मे राज्यकक्षा में प्रथम क्रमांक प्राप्त कर के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का गौरव बढाया है।

कुशलने झोन कक्षा एवं जिला कक्षा में प्रथम , प्रदेश कक्षा में द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया था। इस प्रकार कुल चार स्पर्धा में उत्तरोत्तर विजय हांसिल किया है।

वायोलिन वादन स्पर्धा में गुरुकुलम् का छात्र राज्य कक्षा में द्वितीय

राज्य के खेल-कुद मंत्रालय द्वारा दिनांक १०-९-२०१७ को आयोजित "कला महाकुंभ, २०१७" मे गुरुकुल के छात्र वत्सल अमितभाई शाहने वायोलिन वादन स्पर्धा मे राज्यकक्षा में द्वितीय क्रमांक प्राप्त कर के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का गौरव बढाया है।

वत्सलने झोन कक्षा एवं जिला कक्षा में प्रथम एवं प्रदेश कक्षा में द्वितीय क्रमांक प्राप्त किया था। इस प्रकार कुल चार स्पर्धा में उत्तरोत्तर विजय हांसिल किया है।

राज्य में "खेल - कूद युवक सेवा और सांस्कृतिक कला महाकुंभ - २०१७ में हेमचन्द्राचार्य संस्कृत अनेक स्पर्धा में विजेता पद प्राप्त करके गुरुकुल शिक्षा

कुशल विजयभाई शाह
तबला वादन स्पर्धा
झोन कक्षा : प्रथम
जिला कक्षा : प्रथम
प्रदेश कक्षा : द्वितीय
राज्य कक्षा : प्रथम

मित कैलाशभाई शाह
बांसुरी वादन स्पर्धा
झोन कक्षा : प्रथम
जिला कक्षा : प्रथम
प्रदेश कक्षा : प्रथम

वत्सल अमितभाई शाह
वायोलीन वादन स्पर्धा
झोन कक्षा : प्रथम
जिला कक्षा : प्रथम
प्रदेश कक्षा : द्वितीय
राज्य कक्षा : द्वितीय

राज गीरीशभाई शाह
तबला वादन स्पर्धा
झोन कक्षा :
द्वितीय स्थान

मीत जयेशभाई मोदी
वायोलीन वादन स्पर्धा
जिला कक्षा :
द्वितीय स्थान

पंथ भूपेन्द्रभाई शाह
बांसुरी वादन स्पर्धा
झोन कक्षा :
द्वितीय स्थान

विभाग'' - गांधीनगर के उपक्रम में आयोजित पाठशाला - गुरुकुलम्, साबरमती के छात्रों ने पद्धति की शान बढाई है।

श्रेणिक दिनेशभाई चौधरी

बांसुरी वादन,
झोन कक्षा :
तृतिय स्थान

हित संजयभाई बाफना

वायोलीन वादन
जिला कक्षा :
तृतिय स्थान

देव दिपकभाई जैन
पखावज वादन
जिला कक्षा :
द्वितीय स्थान

विश्व जयेशभाई वोरा
अभिनय कला
जिला कक्षा :
द्वितीय स्थान

हेत धर्मेन्द्रभाई शाह
गायन स्पर्धा
जिला कक्षा :
द्वितीय स्थान

दिनांक : १२-९-२०१७

मुख्यमंत्री द्वारा गुरुकुलम् के छात्र का सन्मान

तबलावादन स्पर्धा में राज्यकक्षा में प्रथम विजेता पद प्राप्त करके गुरुकुल का गौरव बढाने-वाला छात्र कुशल (उंमर वर्ष १७) को राज्य के मुख्यमंत्री श्री विजयभाई रूपाणीने सन्मानित किया।

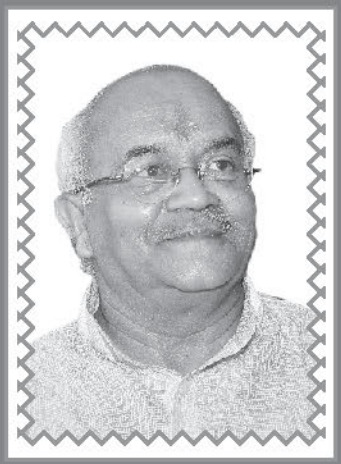

वेद प्रताप वैदिक
भारतीय भाषा संमेलन
२४२, सेक्टर-५५,
गुडगाँव-हरियाणा १२२०११
फोन : ९१-१२४-४०५७२९५
मो. ०९८९१७११९४७

प्रधानमंत्री होना बड़ी बात है, लेकिन अच्छा गुरु होना प्रधानमंत्री से भी बड़ी बात है। प्रधानमंत्री सिर्फ वर्तमान को बनाता है, जबकि गुरु भविष्य का निर्माण करता है, पीढ़ियों का निर्माण करता है, राष्ट्र के भविष्य का निर्धारण करता है। यह गुजरात की भूमि का गौरव है कि प्रधानमंत्री भी यहां के हैं और ये राष्ट्रीय गुरु भी यहाँ के हैं।

– श्री वेद प्रताप वैदिक

(हेमचंद्राचार्य संस्कृत-पाठशाला (गुरुकुलम्) साबरमती के सांतवे वर्ष में मंगल-प्रवेश निमित्तक द्वि-दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव के अवसर पर अतिथि विशेष के रुप में श्री वेदप्रताप वैदिकजी ने दिनांक २३-११-२०१४ के दिन दिया हुआ भाषण।)

मैंने आज से उत्तमभाई का नाम बदल दिया है, मैंने उनका नया नाम सर्वोत्तमभाई रखा है। क्योंकि मैने उनमें एक ऐसे भाई के दर्शन किए हैं, जो देश की शिक्षा-व्यवस्था को सुधारने के लिए सर्वस्व समर्पित किए हुए हैं। उनके द्वारा संचालित यह गुरुकुलम् अपने ढंग का अद्वितीय है। यदि भारत का जैन समाज संकल्प कर ले तो ऐसे गुरुकुलम् भारत के हर जिले में खुल सकते हैं।

मैं खुद गुरुकुलम् में पढा हूँ। स्वामी वृत्तानंदजी मेरे गुरु थे। चित्तोड़गढ़ में गुरुकुल था और मेरी आयु उस समय ७-८ वर्ष की थी। पिताजी ने मुझे वहाँ भेजा था। उसके बाद मैं हरियाणा, उत्तरप्रदेश, दक्षिणभारत, आसाम, बंगाल, चीन, रूस, युरोप और एशिया के कई देशों के गुरुकुलों में गया।

लेकिन आपको सच कहता हूँ कि दो दिन में जिस आनंद की अनुभूति मुझे यहाँ हुई, वो आज तक कहीं नहीं हुई। पिछले ६०-६५ सालों में मैंने ऐसा पूर्ण गुरुकुल कहीं नहीं देखा। कईं गुरुकुल ऐसे देखे हैं कि जिन में कुछ बातों में वो इस गुरुकुल से आगे थे, लेकिन वो सब बातों में कोई गुरुकुल सब मिलाके आगे हो ऐसा यही गुरुकुलम् है। यह मेरे लिए बहुत अद्‌भुत आनंद का विषय है।

मैं गुजरात में कई बार आया हूँ। पांडुरंग शास्त्रीजी आठवले मुझ पर बड़े कृपालु थे। उनके निमंत्रण पर मुझे कई बार गुजरात आने का अवसर मिला, लेकिन सुबह आता था और शाम को चला जाता था। ये उत्तमभाई की कृपा है की पहली बार मालूम पड़ा की गुजरात कितना भव्य है। गुजरात में कितना आनंद है। गुजरात में कितना सौंदर्यप्रेम है और गुजरात के लोग कितने दृढ भारतीय हैं। इसकी जानकारी पिछले दो दिनों में मिली।

इन बच्चों के कार्यक्रम मैंने देखे। मंत्रमुग्ध कर देनेवाला था। चीन में शावलीन की मेनस्ट्रीम में गया, वे शावलीन की मोनेस्ट्री, वे मठ आज से करीब डेढ हजार साल पहले हमारे यहाँ से बौद्ध संत गये और जैन संत भी गये, ये भी आपको बताता हूँ, शांघाई में जो मंदिर है, वो सिर्फ बौद्ध मंदिर नहीं है, वो जैन मंदिर है। वहाँ जैन मूर्तियाँ भी हैं। हिन्दू मूर्तियाँ भी हैं। वहाँ पर मैंने देखा कि वो जो शावलीन के मंदिरों में, मठों में, नवजवानों को ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है

कि तलवारें तोड़ देते हैं। लगभग वेसा ही मैंने यहाँ देखा।

मैने तो उत्तमभाई से कहा कि मौका हो तो चलें चीन मेरे साथ, इन दिनों मुझे चीन में ही रहना था। वह मैंने स्थगित किया। हो सकता है कि अगले महिने जाऊं। आप मेरे साथ शाओलिन चलें। वह हमारी ही विद्या है, जो हमने चीन को दी। उसकी अद्‌भुत फिल्म अमरिका में बनी थी। ३६ चेम्बर ऑफ टाउन। करोड़ों लोगों ने उसको देखा। हमारे ये बच्चे इतने प्रतिभाशाली हैं कि वो शाओलीन को फिर से भारतीय विद्या पढ़ा सके।

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ कि गुरुकुल में एक वैकल्पिक व्यवस्था है, आज जब आधा वाक्य बोला उत्तमभाई ने, तो पूरा मैंने किया। उन्होंने कहा की तुम मुझे लोहा दो, मैं वो नरेन्द्रभाई को दूंगा, तो नरेन्द्रभाई लोहे का लोहपुरुष बना देंगे , तो मैंने कहा उत्तमभाई को लोहा दो, तो ये उसे स्वर्णपुरुष बना देंगे।

प्रधानमंत्री होना बड़ी बात है, लेकिन अच्छा गुरु होना प्रधानमंत्री से भी बड़ी बात है। प्रधानमंत्री सिर्फ वर्तमान को बनाता है, जबकि गुरु भविष्य का निर्माण करता है, पीढ़िओं का निर्माण करता है, राष्ट्र के भविष्य का निर्धारण करता है, यह गुजरात की भूमि का गौरव है कि प्रधानमंत्री भी यहां के हैं और ये राष्ट्रीय गुरु भी यहाँ के हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि दोनों मिले तो उसमें कोई विरोध नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि प्रवीणभाई और हम यहाँ आये हैं, वह आपकी कृपा है। आप यह कृपा नरेन्द्रभाई पे भी कीजिए, उनको बुलाइए। यहाँ वो देखें, यहाँ उनको प्रेरणा मिले, प्रधानमंत्री चाहे और न चाहे तो भी ऐसे गुरुकुल कम से कम भारत के हर जिल्ले में एक स्थापित होना चाहिए। कम से कम ६०० गुरुकुल होने चाहिए। और आप लोग जैन हो, जैन लोग तो अपनी उदारता के लिए जगत् प्रसिद्ध हैं। न्यूयॉर्क में भी सिद्धाचल बना हुआ है, अद्‌भुत है।

जैन तो जहाँ जाते हैं, दान करते हैं। अगर सारे जैन लोग ठान लें, पूरे देश के हर जिल्ले में हम को ऐसा गुरुकुल खड़ा करना है तो सच कहता हूँ मेकोले का नामो निशान मिट सकता है।

मेकोले के खिलाफ कई लोगों ने लिखा है। मैंने भी मेरी पुस्तिका में लिखा है। ३०–४० साल पहले मैंने उस पे बहुत टिप्पणियाँ की हैं। लेकिन टिप्पणियाँ करने से कुछ नहीं होता है। काम करके दिखाना चाहिए। वह काम उत्तमभाई ने करके दिखाया है। ये जो बच्चे हैं वे प्रतिभा की खदान हैं, अगर ऐसे बच्चे हर साल ५–१० लाख भी देश में पेदा हो जाय तो १८–२० करोड़ हमारे जो विद्यार्थी निकलते हैं, उन सबका जीवन प्रकाशित हो जाय।

आप क्या अद्‌भुत काम करते हो, ये गुरुकुल निःशुल्क चलता है। कोई भी गरीब से गरीब आदमी यहाँ आ कर अपने बच्चे को भरती कर सकता है और अमीर से अमीर आदमी भी अपने बच्चे को भरती कर सकता है। मैंने तो आज तक सुना भी नहीं है कि कोई गुरुकुल निःशुल्क चलता है। मैं स्वामी वृत्तानंदजी के गुरुकुल में गया। वह ६०–६५ साल पुरानी बात है। उस समय शायद ३० रुपये प्रति महिना शुल्क था। मेरे पिताजी कहते थे कि हम १०० रुपये देंगे। दूसरे बच्चों के लिए भी देंगे। यह तो मैंने पहला गुरुकुलम् सुना जो निःशुल्क है।

ऐसा गुरुकुलम् याज्ञवल्क्य भी चलाते थे। ऐसा गुरुकुल आचार्य चाणक्य भी चलाते थे। आपकी परंपरा यह महान परंपरा है। याज्ञवल्क्य की परंपरा है। चाणक्य की परंपरा है। कौटिल्य की परंपरा है, की गुरुकुल में गुरुजन अपना सर्वस्व समर्पण कर देते थे। और, उत्तमभाई ! मैं आज आप को सच कहता हूँ, आप यहाँ नहीं होते तो आप के बारे में जरा खुल कर बोलता। आप बैठे हैं, इसलिए मुझे जरा संकोच हो रहा है। आप को देखता हूं तो मुझे गांधीजी की कठोरता और दृढता आपमें दिखाई देती है।

अपने संकल्प के प्रति, अपने लक्ष्य के प्रति सिर्फ लक्ष्य संधान करना और कुछ नहीं करना। आपमें वो बात है। मैं तो दंग रह गया। मुझे लगता है कि आप जैसे लोग को शायद इस गुजरात की पवित्र भूमि ही पैदा कर सकती है। जिस भूमि ने महर्षि दयानंद को पैदा किया, जिस भूमि ने महात्मा गाँधी को पैदा किया वह भूमि ही ऐसे व्यक्ति को पैदा कर सकती है। यह गुरुकुल आपकी महानता को अपरिमित शब्दों में प्रकाशित करता है। कितना समर्पण भाव आप का है!!

मैं समझता हूँ कि अगर ऐसे दस उत्तमभाई भी इस देश में हों, तो इस देश को इक्कीसवीं सदी का जगद्गुरु बनने से कोई रोक नहीं सकता।

बस... मेरी समस्या इतनी ही है कि इस गुरुकुल से निकलने वाले बच्चों का भविष्य आगे जाके क्या होगा? उनका व्यक्तिगत भविष्य तो सुनिश्चित प्रायः है, कोई शंका नहीं है, लेकिन एक ही शंका है कि पूरी व्यवस्था आपके खिलाफ है, भारत की सामाजिक व्यवस्था, भारत की सरकार, शिक्षा संस्थाएँ, लोकशाही आपके खिलाफ हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि सिर्फ गुरुकुल चलाना ही काफी नहीं है। गुरुकुल के साथ-साथ देश का परिवर्तन करनेवाला एक जबरजस्त आंदोलन चलाने की जरुरत है और ये जरुरत देश के नेता लोग पूरी नहीं कर सकते । यह कहने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

देश के सभी दलों के शीर्ष नेताओं से मेरा ५०-६० साल से घनिष्ठ संबंध है। चाहे वह कांग्रेसी हो, जनसंघी हो, चाहे समाजवादी हो, सबसे मेरी समान निकटता है। सबकी शक्तियों और सीमाओं को मैं खूब जानता हूँ। यह उनके बस का काम नहीं है। यह काम आप करेंगे। मैं समजता हूँ की जो गुरु का स्थान है, सबसे ऊंचा है। परमात्मा के बाद अगर कोई है तो वह गुरु ही है और सब गौण है। इसीलिए आप उठिए, संकल्प कीजिए, पूरे देश का जैन समुदाय, जो श्रेष्ठ समुदाय है, उसे संस्कृत में बोलते हैं- श्रेष्ठ-सबसे श्रेष्ठ लोग। आर्य हैं, आर्य का मतलब भी 'श्रेष्ठ' होता है। तो उठिए ! 'उतिष्ठ, जागृत, वरान् वृणु' (उठो, जागो और वर को प्राप्त करो।) यही आपसे आज मेरा निवेदन है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आपको शतायु करें, स्वस्थ रखें, प्रेरणा दें और आप पूरे देश को जागृत करें।

बहुत हार्दिक शुभकामनाएँ.....

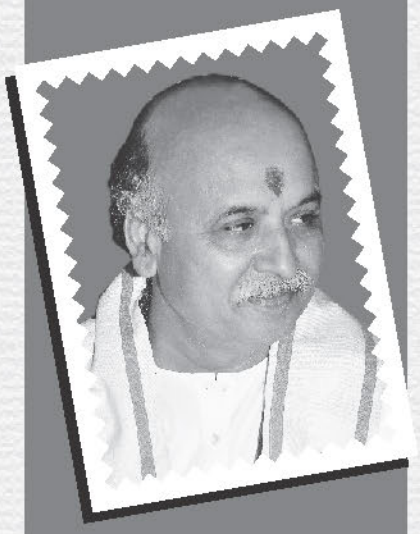

(हेमचंद्राचार्य संस्कृत-पाठशाला (गुरुकुलम्) साबरमती के सांतवे वर्ष में मंगल-प्रवेश निमित्तक द्वि-दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव के अवसर पर अतिथि विशेष के रुप में श्री प्रवीणभाई तोगड़ियाजी द्वारा दिनांक २३-११-२०१४ के दिन दिए हुए भाषण के कुछ अंश)

- **इस देश की बहुत बड़ी विशेषता रही है कि मानवजीवन के लिए जो अनिवार्य है, वह निःशुल्क था। शिक्षा अनिवार्य है तो वह निःशुल्क थी। वैदकीय सेवाएँ निःशुल्क थी।**

- **राजा का बेटा जहाँ पढ़ता था वहाँ किसान का बेटा भी पढ़ता था। हमारा सांस्कृतिक पतन भी हुआ और मेकोले ने हमारा ब्रेनवाश करने का काम किया। अंग्रेज तो चले गये पर 'काले अंग्रेज' यहाँ छोड़कर गये, जिनका चिंतन, जिनकी सोच मूलतः इस देश की संस्कृति और मानव-सभ्यता एवं विश्वकल्याण के साथ सुसंगत नहीं है। दुर्भाग्य की बात है कि आज का समाज-जीवन इतना कम्पलेक्ष (जटिल) बन चुका है, कि व्यक्ति उस रास्ते पे नहीं चलेंगे तो जी नहीं पायेंगे। ना आर्थिक दृष्टि से, ना सामाजिक दृष्टि से।**

- **कहते हैं कि प्रलय आता है तब ईश्वर पुनः सृष्टि निर्माण के लिए कुछ बचाकर विध्वंस करता है ताकि प्रलय के बाद पुनः सृष्टि निर्माण प्रारंभ कर सके। वैसे ही संस्कृति के महाप्रलय काल कि में उत्तमभाई ने पुनः निर्माण की प्रक्रिया यहाँ प्रारंभ की है। पुनर्निर्माण कठिन होता है। मुश्किल होता है। क्योंकि इन्सान अकेला निकलता है, दुनिया हँसती है, तो भी विचार को दृढ रखकर जो आगे जाता है, वह अपना मूल रास्ता लोगों को स्वीकृत कराने के लिए अपने चारित्र से और दृढता से प्रयत्न करता है। ऐसी एक बड़ी प्रतिकृति-शिक्षा की यहाँ खड़ी होगी। आगे जा कर अनेक लोगों से चर्चा के आधार पर उन्हें विकसित करते जायेंगे।**

- **पैसे नहीं है तो पानी नहीं मिलेगा। अब तो लगता है कि पैसे होंगे तो सांस ले पाओगे, वरना सांस भी नहीं ले पाओगे। इतना व्यापारीकरण दुनिया के इतिहास में कभी नहीं हुआ था।**

- **चालीस साल पहले मैं गाँव में रहता था, हमारे गाँव में दूध नहीं बिकता था। लोगों को मुफ्त में देते थे। जिस देश में दूध नहीं बिकता था, घी नहीं बिकता था, उस देश में १२ रुपये में पानी की बोटल बिकने लगी है। फिर तो स्त्री और पुरुष बिकेंगे। उसमें आश्चर्य क्या है। आप पानी बेच सकते हो तो अपना शरीर भी बेच सकते हो, अपना ईमान बेच सकते हो, अपने मूल्य बेच सकते हो, अपना इतिहास, अपने पुरखों, अपने धर्म को और देश को भी बेच सकते हो।**

हमने जो विकास का रास्ता लिया है, वह विकास नहीं है, वह तो रावण की सर्वनाश करनेवाली लंका का रास्ता है। अगर देश को बदलना हो तो गुरुकुलम् चलाना ही चाहिए।

– डॉ. प्रवीण तोगडिया

- इसलिए हमें शास्त्र की रक्षा करनी चाहिए, परंतु शास्त्र की रक्षा करने के लिए, शांति के लिए, अहिंसा की रक्षा के लिए इस देश में पुनः महान आर्य परंपरा की स्थापना जरूरी है। हमारे दिल की कामना है कि भारत में हमारी आर्य परंपरा पुनः स्थापित हो।

- मेकोले ने हमारी शिक्षा बदल दी। इस देश में १८वीं सदी में अंग्रेज आये। भारत की शिक्षा-व्यवस्था का अध्ययन किया। उन्होंने लिखा की हिन्दू कैसे लोग हैं, जो अपने बच्चों को 'क, ख, ग, घ' नहीं सिखाते हैं। प्रत्येक के साथ एक श्लोक होता है, जो उनमें चारित्र का निर्माण करता है। हम सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं देते थे, अक्षरज्ञान के साथ उनमें चारित्र भी देते थे। आज की ये आधुनिक शिक्षण पद्धति ने प्रवीण तोगडिया को एक डॉक्टर बना दिया। मेरी पूरी मेडिकल शिक्षा में नैतिक मूल्यों का एक भी पेज पर उल्लेख नहीं है। ये आधुनिक शिक्षा पद्धति है। मेकोले ने हमारी जो मूल्य युक्त शिक्षा पद्धति थी, उनका अध्ययन करने के बाद उसका सर्वनाश करने का काम किया। कैसे किया ? शिक्षा निःशुल्क थी, लिखते हैं कि, '१.५ लाख शिक्षा संस्थाएँ, गुरुकुल अकेले दक्षिण भारत में मद्रास में थे , जो मुफ्त पढ़ाते थे। तो इनकी व्यवस्था चलती कैसे थी ? हर एक के पास जमीन थी, राजा एक हिस्सा देता था और श्रेष्ठि एक हिस्सा देता था।' अंग्रेजों ने हमारे सभी गुरुकुलों की जमीन समाप्त कर दी। राजाओं को खतम कर दिया। इससे हमारी गुरुकुलों को टिकाने की व्यवस्था खत्म हो गई। जो भारत ने दुनिया को '०' शून्य दिया, एक से नौ का अंक दिया, वह भारत आज निरक्षर हो गया है और भारत में अंग्रेजों का शासन चलाने के लिए और क्लर्क पैदा करने के लिए जो शिक्षण पद्धति आई, उनके हम शिकार बन चुकेहै और उसीके द्वारा आगे ले जाने में लगे हुए हैं। वे भारत को आगे नहीं ले जाएँगे, भारत को सर्वनाश की ओर ले जाएँगे।

- हमें आर्थिक समृद्धि चाहिए, पर सांस्कृतिक मूल्यों के अधिष्ठान पर चाहिए। आज विकास का मापदंड क्या है, पता है ? मानव मूल्य नहीं है, प्रमाणिकता नहीं है, सत्य नहीं है। कितने फोर ट्रेक हाईवे है, कितने लोगों के हाथ में मोबाईल है, कितनी कार और स्कूटर हैं। इस देश में मानव का मूल्यांकन मानवीय मूल्यों के आधार पर बन्द हो गया है। इसीलिए, जो विकास का रास्ता हमने लिया है , वह विकास का नहीं है, यह तो रावण की-सर्वनाश करनेवाली लंका का रास्ता है।

- अगर देश को बदलना है, तो गुरुकुल की शिक्षा अनिवार्य है। और जैसे वैदिक जी ने कहा, 'संस्कृति का देशव्यापी अभियान चलाकर इस देश में सांस्कृतिक जागरण का महायज्ञ भी साथ में करना चाहिए और हमें लगता है कि हमारे उत्तमभाई का प्रयास भारत को भारत बनाकर रहेगा।'

हमारी सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अद्‌भुत, अनुपम विरासत को समेटे-सहेजे हमारी चिरंजीवी महान भारतीय संस्कृति आज भी अक्षुण्ण है। विदेशी आक्रमणों के थपेडे झेलकर, विजातीय दुर्व्यवहारों, दुर्भावनाओं, द्वेष-द्वन्द्वों, अत्याचारों, अनाचारों, पापाचारों के शिकार होकर भी हम मिटे नहीं हैं। लुटे-पीटे-कटे एवं छंटे-बंटे होकर भी हमारी भारतीय संस्कृति आज भी अखण्ड है। हमारे स्वयं के प्रमादों एवं अविचारों से हमारा क्षरण, पतन, विस्मरण, अवमूल्यन अवश्य हुआ है, किन्तु फिर भी अभी भी सब कुछ मौजूद है। हमारी स्वदेशी चेतना और राष्ट्रीय स्वाभिमान के जागरण से इन सब का क्षरण दूर होकर आर्य संस्कृति के इन अंग प्रत्यंगों को पोषण मिलेगा। अतः स्वाभिमान का जागरण एवं स्वदेशी चेतना का अभिवर्द्धन करना परम आवश्यक है।

-डॉ. देवकरण शर्मा 'देव' उज्जैन

कभी **नोटों** के लिये मर गए।
कभी **वोटों** के लिए मर गए।
कभी आपस में **दो गज जमीन**
के लिए मर गए।

होते आज भगत सिंह तो कहते-
यार सुखदेव !
हम भी किन **कमिनों**
के लिए मर गए।

अक्षय जैन – संपादक – 'दाल–रोटी' पत्रिका से साभार

अपना बचपन भूल गए बच्चे जब स्कूल गए...

दुनिया में सबसे ज्यादा बेरहम और अमानवीय माँ–बाप आपको कहाँ मिलेंगे? जाहिर है, ऐसे माँ–बाप आपको हिन्दुस्तान में मिलेंगे और सरप्लस में मिलेंगे।

इन माँ–बापों के पास ढेर सारा पैसा है और ढेर सारी मूर्खताएँ हैं। ये माँ–बाप अगर दुनिया में किसी चीज के बारे में सबसे कम जानते हैं, तो अपने बच्चों के बारे में।

जैसे, माँ–बाप नहीं जानते कि उनके बच्चों के लिए धूप में रहना बहुत जरूरी है। विटामिन, टॉनिक या सिरप से नहीं, कुदरत से मिलता है और मुफ्त मिलता है।

बच्चा मिट्टी में नहीं खेलेगा, तो बड़ा कैसे होगा ? स्वस्थ कैसे रहेगा? बच्चे के शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का निर्माण मिट्टी से होता है। बच्चों को मिट्टी से दूर रखना, बच्चों के साथ दुश्मनी निभाना है।

मौजूदा लाइफ स्टाइल का मंत्र है–बच्चे को धूप से दूर रखिए, हवा से दूर रखिए, मिट्टी से दूर रखिए। जी हां, अब तो दो साल के बच्चों के लिए जिम खुल गए हैं।

बच्चे को किस उम्र में स्कूल भेजना चाहिए? अपने बचपन के सबसे बेहतरीन चार–पाँच साल, बच्चों के खेलने, मस्ती करने और खाने–पीने के होते हैं। बच्चों का सबसे अनमोल समय उनके माँ–बाप उनसे छीन लेते हैं। प्ले ग्रूप, नर्सरी, जूनियर केजी, सीनियर केजी, स्कैटिंग, डान्स क्लास, चित्रकारी यानी लिस्ट बहुत लम्बी है। तीन साल के बच्चे को गर्मागर्म खाने के बदले टिफिन का खाना ?

प्ले ग्रूप से फर्स्ट स्टैंडर्ड तक की पाँच साल की यह कवायद बच्चे को कहाँ ले जाती है? बच्चे गिनती या पहाड़े नहीं सीख पाते, लेकिन टीवी पर आने वाला हर विज्ञापन उन्हें याद रहता है। उन्हें पता चल जाता है कि रोटी–सब्जी नहीं, पीजा–बर्गर उनका भोजन है।

लड़कियाँ 'कांटा लगा' फेम शेफाली बनना चाहती है और लड़के प्रभू देवा। चार साल का बच्चा मेक्डोनल्ड में जाने के लिए घर सर पर उठा लेता है। पाँच साल की स्वीट बच्ची अभी से फेयर और लवली की डिमांड करती है।

किताबों का बोझ, ट्यूशन, बर्थ–डे पर हर रोज मिलने वाली चॉकलेट, कभी मदर्स डे, तो कभी फादर्स डे, वन डे पिकनिक, चक्करदार फैशन प्रतियोगिताएँ और ऐसी ही ढेर सारी चीजों का अंबार लगा है बच्चों की दुनिया में। सिर्फ एक चीज गायब है – 'बचपन'।

कागज की कश्ती नदी में बहाने नहीं ले जाता कोई। छत पर चाँद दिखाने नहीं ले जाता कोई। लोरी गाकर नहीं सुलाता कोई। गुड़ का गर्म शीरा नहीं खिलाता कोई। न नानी की कहानियाँ याद रहीं और दादाजी के भूने हुए चने खाने की आदत छूट गई। बच्चे समय की रफ्तार से तेज भाग रहे हैं। बहुत तेज, अपने माँ–बाप की पकड़ से दूर।

('दाल–रोटी' में से साभार)

शिक्षा को धर्मानुसारी बनाने की आवश्यकता है...

– इन्दुमती काटदरे
संयोजक, पुनरुत्थान विद्यापीठ, अहमदाबाद

मनुष्य वैसा ही होता है जैसी शिक्षा उसे मिलती है। समाज भी वैसा ही होता है जैसी उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। समाज यदि संकटग्रस्त है, मनुष्य यदि दीन–हीन, दुर्गुणी और दुराचारी है और समाज के लिए कंटक समान है तो समझना चाहिए कि उस समाज की शिक्षाव्यवस्था ठीक नहीं है।

आज ऐसी ही स्थिति है। समृद्धि और संस्कृति दोनों ही क्षेत्र में केवल हमारे ही देश की नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व की स्थिति चिन्ता करने योग्य है। कितने ही देश भुखमरी की अवस्था में पहुँच गए हैं। संस्कारो का ह्रास हो रहा है। स्वतंत्रता, मानवीय गौरव, सुरक्षा, समृद्धि, सद्‌गुण आदि मनुष्य–जीवन को गौरवान्वित करने वाले तत्त्वों का अभाव चारों ओर दिखाई दे रहा है। इन सभी संकटों से यदि मानव–समूह को मुक्त करना है तो शिक्षा के विषय में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

पुनर्विचार करते समय ध्यान में रखने की बात यह है कि सुसंस्कृत समाज का निर्देशन, नियमन और नियन्त्रण करने वाला तत्त्व धर्म है। 'धारणाद्धर्म इत्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः।' सम्पूर्ण लोक को धारण करता है इसीलिए वह धर्म है। आज भले ही अनेक प्रकार के निहित स्वार्थों तथा अज्ञान के कारण धर्म को उलटी सुलटी व्याख्याओं से उलझा कर उसके अर्थ का अनर्थ कर दिया गया हो, धर्म के बिना प्रजा की सुस्थिति हो ही नहीं सकती। समाज जीवन धर्मानुसारी होना चाहिए यह निर्विवाद सत्य है।

जीवन को धर्मानुसारी होने के लिए शिक्षा को धर्मानुसारी होना चाहिए। शिक्षा ज्ञानसत्ता है। धर्मसत्ता और ज्ञानसत्ता मिलकर ही समाजजीवन को सही दिशा देते हैं।

हम देख रहे हैं कि आज की शिक्षा धर्मानुसारी नहीं रह गई है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष लक्ष्य है और धर्म अधिष्ठान है। अर्थ और काम को धर्म के अविरोधी होना चाहिए। यह सुसंस्कृत और समर्थ समाज की रीति है। परंतु आज सब कुछ अर्थ के नियन्त्रण में चलता है । धर्म को अर्थ के आगे गौणत्व प्राप्त हुआ है। जब अर्थ सब से अधिक प्रभावी होता है और शेष सब उसके गौणत्व में होते हैं तब समाज में असंस्कृति की प्रतिष्ठा होती है और समृद्धि भी क्षीण होती है।

समाज को इस संकट से बचाने के लिए शिक्षा धर्मानुसारी बने इस बात की चिन्ता करनी चाहिए। यह चिन्ता शिक्षकों को करनी चाहिए; यह तो ठीक है, परंतु इसका सही अधिकार धर्माचार्यों का है। संपूर्ण समाज का और शासन का भी मार्गदर्शन करने का अधिकार धर्माचार्यों का है।

वर्तमान में इस परंपरा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। वास्तव में इसकी आवश्यकता निरंतर होती ही है क्योंकि धर्म पर चलने वाला समाज ही श्रेष्ठ और चिरंजीवी समाज होता है।

भारत को धर्मनिष्ठ बनकर विश्व का मार्गदर्शन करना है। यह उसका ईश्वरप्रदत्त कर्तव्य है। इस कर्तव्य को निभाने के लिए उसे समर्थ बनना होगा। यह सामर्थ्य ज्ञान का, प्रेम का और तप का होगा। ऐसा सामर्थ्य प्राप्त करने के लिए भी धर्मानुसारी शिक्षा की आवश्यकता है।

('इंडिया टुडे' ता. ७-५-२००३ के अंक से साभार)

प्राच्य विद्या के नए पंडित

एक परिवार ने प्राचीन भारतीय इतिहास को शिक्षा का माध्यम बनाया!

सबके बस का नहीं, यही कि कोई आपके बेटे को तयशुदा तौर पर बड़ी हस्ती बना देने का प्रस्ताव रखे और आप ठुकरा दें, इसीलिए राजनैतिक रसूख वाले तांत्रिक चंद्रास्वामी ने जब अपना 'विद्यापुत्र' बनाने के लिए उत्तमभाई शाह से उनके 20 वर्षीय पुत्र, ज्योतिष के मेधावी छात्र अखिल को मांगा और उन्होंने नकार दिया तो इस पर खाली बहस छिड़ गई।

ऐसा नहीं कि शाह ने चंद्रास्वामी के रोज-रोज खड़े किए जाने वाले बखेड़ों के कारण बेटे को उन्हें न देने का निर्णय किया, असल में दक्षिणी गुजरात में किम गाँव के सरपंच रहे और शानो-शौकत की जिंदगी जी चुके अखिल के पिता के दिलो-दिमाग में बेटे के भविष्य को लेकर बड़ी स्पष्ट योजना थी। वे पूरी गंभीरता के साथ कहते हैं कि अखिल के ज्योतिष ज्ञान से एक दूसरा ही उद्देश्य पूरा करना है, यह मेधा की कोई स्फुट परंपरा नहीं बल्कि भूली-बिसरी भारतीय शिक्षण प्रणालियों को पुनर्जीवित करने और उन्हें आज के जीवन में अहम स्थान दिलाने की कोशिशों का एक हिस्सा है। अचल संपत्ति के धंधे में लगे नामी कारोबारी शाह के लिए यह एक पारिवारिक मिशन रहा है। उनके परिवार का हर सदस्य ज्योतिषशास्त्र और संगीत से लेकर वास्तुशास्त्र और विधि जैसी विद्याओं तथा संस्कृत से लेकर प्राकृत जैसी भाषाओं पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

भारतीय शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए इस अभियान की शुरुआत 1994 में एक खास संयोग से हुई। शाह ने मुनि हितरुचिविजयजी का भारतीयों पर पाश्चात्य शिक्षण के असर को रेखांकित करने वाला एक लेख पढ़ा। हितरुचिविजयजी मुंबई के एक बड़े हीरा व्यापारी परिवार से थे और दो-एक साल पूर्व उन्होंने सब कुछ छोड़कर मुनि का चोला धारण किया था। उनके उच्च विचारों से प्रभावित शाह उनसे जाकर मिले। मुलाकात तो केवल आधे घंटे की ही रही, लेकिन इसका न सिर्फ शाह बल्कि पूरे परिवार पर अमिट प्रभाव पड़ा। एक माह के अंदर ही शाह और उनके तीन भाइयों ने परिवार के सभी 7 बच्चों को उनके स्कूलों से निकाल लिया। कुछ बच्चे हाईस्कूल में तो कुछ प्राथमिक कक्षाओं में थे। उनके लिए अहमदाबाद में गुरुकुल खोल उनके शिक्षण के लिए विभिन्न भारतीय विद्याओं के विद्वानों को नियुक्त किया गया।

साबरमती में एक बहुमंजिली इमारत की पूरी एक मंजिल पर चलने वाला महाजनम् नाम का 'गुरुकुल' एक दशक के अंदर प्राच्य विद्या के अध्ययन का लोकप्रिय केन्द्र बन गया। और इसके आदर्शों के साक्षात् प्रमाण शाह परिवार के छात्र ही हैं जो संस्कृत और प्राकृत तथा गुजराती और अंग्रेजी में समान दक्षता से बोलते हैं और अपने-अपने विषयों में प्रकांड पंडित बनने की दिशा में अग्रसर हैं। अखिल हस्तरेखा, फलादेश, मुहूर्त शास्त्र, अंकशास्त्र और सामुद्रिक शास्त्र का पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद ज्योतिष के विशेष अध्ययन में जुटे हैं, उनके दूसरे भाई अन्य भारतीय कलाओं और विज्ञान की महान शिक्षा ले रहे हैं।

१७ वर्षीय समकित और १९ वर्षीय श्रेयस भारतीय संगीत (गायन-वादन दोनों) का ज्ञान पा रहे हैं, उनकी बहन काजल न्याय यानि तर्कशास्त्र का कोर्स जल्द ही पूरा करने वाली है। उनके लिए शाह ने भारतीय ज्ञान की पीठ रही काशी से प्राचीन भारतीय तर्कशास्त्र के प्रकांड पंडित कल्याणजी को

१५,००० रू. मासिक पर रखा।

इन बच्चों के छात्रकाल में होने के बावजूद उनसे सलाह के लिए भीड़ जुटने लगी है। अखिल की सटीक भविष्यवाणियों के चलते लोग उनके पीछे दौड़ पड़े हैं। वास्तु और शिल्पशास्त्र के अध्येता उनके २२ वर्षीय भाई आशिष अपनी विद्या में माहिर हो गए हैं, मध्यवर्गीय भारतीयों में वास्तुशास्त्र की बढ़ती लोकप्रियता के मद्देनजर शहरों-कस्बों के तमाम लोग निर्माण सन्बन्धी डिजाइनों को लेकर महाजनम् के सामने कतारबद्ध होने लगे हैं, लेकिन अखिल की तरह आशिष भी अपने को विशेषज्ञ घोषित करने से पूर्व और अध्ययन करना चाहते हैं।

शालीनता इन शाह बंधुओं की जीवनशैली बन गई है, 'और-और' की पाश्चात्य संस्कृति को 'विनाशकारी' बताते हुए उस पर प्रहार का कोई मौका न चूकने वाले अखिल कहते हैं, **'पूरे पेशेवर बनने के बाद भी हम एक सीधे-सादे जीवन की जरूरत का ही धन अर्जित करेंगे, हमारा उद्देश्य अधिकाधिक धनार्जन नहीं बल्कि अधिकाधिक भारतीयों के लिए ऐसी मिशाल पेश करना है कि वे पर्यावरण के न्यूनतम दोहन के साथ सादे जीवन की सीख पर आधारित प्राचीन भारतीय शिक्षा अपनाएँ।'**

गुरुकुल के दूसरे लोगों की राय उनसे भिन्न नहीं है, शाह परिवार के अलावा दूसरों को भी अपनी जड़ों की ओर लौटने में भला नजर आ रहा है। गुरुकुल की लायब्रेरी की सात आलमारियां प्राचीन भारतीय ज्ञान की पुस्तकों से भरी होने के कारण उनका काम आसान हो रहा है।

शाह कहते हैं, **'मेरा दावा है कि ये छात्र किसी भी आधुनिक बौद्धिक के साथ किसी भी विषय पर बहस में मुकाबला करने में सक्षम होंगे। है कोई चुनौती स्वीकार करने वाला?'**

भारतीय राजनैतिक स्वतंत्रता मिलने के बाद के इन ६५ वर्षों में हमारे प्रमाद एवं अर्द्धचेतना की स्थिति में हुए हमारे सांस्कृतिक क्षरण-पतन एवं पाश्चात्य अप-संस्कृतियों के अपमिश्रण की ही नहीं, अंग्रेजी गुलामी के उन डेढ सौ वर्षों की लूट-खसोट, वैचारिक मानमर्दन तथा दुर्दान्त विदेशी आक्रान्ताओं की लंबे ८०० वर्षों की आपा-धापी, राष्ट्रीय सांस्कृतिक क्षरण-पतन बर्बादी पर भी हमारी तत्व विवेचनी दृष्टि जानी चाहिए। इन तीनों अवधियों (६५ वर्ष १५० वर्ष और ८००) वर्ष कुल १०१५ वर्ष) में हुई हमारी गलतियों, भूलों, कमियों, कमजोरियों और दैव-दुर्विपाक से हमारा बहुत कुछ नष्ट, भ्रष्ट, पतित, विस्मृत, विकृत एवं क्षतिग्रस्त हुआ है, उसका पुनरोद्धार करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। कोई भी प्रकार का लोभ, लालच, पद, प्रतिष्ठा, प्रमाद, अविचार इसमें बाधक नहीं बने, इसका बुधिजनों, सुधिजनों, को जागरूकता पूर्वक ध्यान रखना होगा।

- डॉ. देवकरण शर्मा 'देव' उज्जैन

विनीत नारायणजी हिन्दी भाषा के वरिष्ठ पत्रकार हैं। उन्होंने 'गुरुकुलम्' का निरीक्षण करने के बाद दैनिक ''पंजाब केसरी'' में ९ नवम्बर-२०१५ के अंक में जो लेख लिखा है, वह यहां प्रस्तुत है।

आधुनिक शिक्षा को कडी चुनौती

- विनीत नारायण (वरिष्ठ पत्रकार)

अमरीका के हॉवर्ड विश्वविद्यालय से लेकर भारत के आई.आई.टी. तक में क्या कोई ऐसी शिक्षा दी जाती है कि छात्र की आंखों पर रूई रखकर पट्टी बांध दी जाए और उसे प्रकाश की किरण भी दिखाई न दे, फिर भी वह सामे रखी हर पुस्तक को पढ सकता हो ? है न चौंकाने वाली बात ? पर इसी भारत में किसी हिमालय की कंदरा में नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री के गृहराज्य गुजरात के महानगर अहमदाबाद में यह चमत्कार आज साक्षात् हो रहा है। तीन हफ्ते पहले मुझे इस चमत्कार को देखने का सुअवसर मिला। मेरे साथ अनेक वरिष्ठ लोग और थे। हम सबको अहमदाबाद के हेमचन्द्राचार्य संस्कृत गुरुकुल में विद्यार्थियों की अद्‌भुत मेधा शक्तियों का प्रदर्शन देखने के लिए बुलाया गया था। निमंत्रण देने वालों के ऐसे दावे पर यकीन नहीं हो रहा था। पर, वे आश्वस्त थे कि अगर एक बार हम अहमदाबाद चले जाएं, तो हमारे सब संदेह स्वतः दूर हो जाएंगे और वही हुआ। छोटे-छोटे बच्चे इस गुरुकुल में आधुनिकता से कोसों दूर पारंपरिक गुरुकुल शिक्षा पा रहे हैं। पर उनकी मेधा शक्ति किसी भी महंगे पब्लिक स्कूल के बच्चों की मेधा शक्ति को बहुत पीछे छोड चुकी है।

दूसरा नमूना उस बच्चे का है, जिसे आप दुनिया के इतिहास की कोई भी तारीख पूछो, तो वह सवाल खत्म होने से पहले उस तारीख को क्या दिन था, ये बता देता है। इतनी जल्दी तो कोई आधुनिक कम्प्यूटर भी जवाब नहीं दे पाता। तीसरा बच्चा गणित के ५० मुश्किल सवाल मात्र ढाई मिनट में हल कर देता है। यह विश्व रिकार्ड है। ये सब बच्चे संस्कृत में वार्ता करते हैं, शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, देशी गाय का दूध-घी खाते हैं। बाजारू सामानों से बचकर रहते हैं। यथासंभव प्राकृतिक जीवन जीते हैं और घुडसवारी, ज्योतिष, शास्त्रीय संगीत, चित्रकला आदि विषयों का इन्हें अध्ययन कराया जाता हैं। इस गुरुकुल में मात्र ९० बच्चे हैं , पर उनको पढाने के लिए १२० शिक्षक हैं। ये सब शिक्षक वैदिक पद्धति से पढाते हैं। बच्चों की अभिरुचि अनुसार उनका पाठ्यक्रम तय किया जाता है। परीक्षा की कोई निर्धारित पद्धति नहीं है। पढकर निकलने के बाद कोई डिग्री भी नहीं मिलती। यहां पढने वाले ज्यादातर बच्चे १५-१६ वर्ष से कम आयु के हैं और लगभग सभी बच्चे अत्यंत संपन्न परिवारों के हैं। इसलिए उन्हें नौकरी की चिंता भी नहीं है, घर के लंबे-चौडे कारोबार संभालने हैं। वैसे भी डिग्री लेने वालों को नौकरी कहां मिली रही है ? एक चपरासी की नौकरी के लिए ३.५ लाख पोस्ट ग्रेजुएट लोग आवेदन करते हैं। ये डिग्रियां तो अपना महत्व बहुत पहले खो चुकी हैं। इसलिए इस गुरुकुल के संस्थापक उत्तमभाई ने यह फैसला किया कि उन्हें योग्य, संस्कारवान, मेधावी व देशभक्त युवा तैयार करने हैं, जो जिस भी क्षेत्र में जाएं, अपनी योग्यता का लोहा मनवा दें और आज यह हो रहा है। दर्शक इन बच्चों की बहुआयामी प्रतिभाओं को देखकर दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं।

खुद डिग्रीविहीन उत्तम भाई का कहना है कि उन्होंने सारा ज्ञान स्वाध्याय और अनुभव से अर्जित किया है। उन्हें लगा कि भारत की मौजूदा शिक्षा प्रणाली, जो कि मैकाले की दे है, भारत को गुलाम बनाने के लिए लागू की गई थी। इसीलिए भारत गुलाम बना और आज तक बना हुआ है।

उत्तम भाई और उनके अन्य साथियों के पास देश को सुखी और समृद्ध बनाने के ऐसे ही अनेक कालजयी प्रस्ताव है जिन्हें अपने-अपने स्तर पर प्रयोग करने सिद्ध किया जा चुका है। पर, उन्हें चिंता है कि आधुनिक मीडिया, लोकतंत्र की नौटंकी, न्यायपालिका का आडंबर और तथाकथित आधुनिक शिक्षा इस विचार को पनपने नहीं देंगे। क्योंकि ये सारे ढांचे औपनिवेशिक भारत को झूठी आजादी देकर गुलाम बनाए रखने के लिए स्थापित किए गए थे। पर, वे उत्साहित हैं यह देखकर कि हम जैसे अनेक लोग, तो उनके गुरुकुल को देखकर आ रहे हैं, उन सबका विश्वास ऐसे विचारों की तरफ दृढ होता जा रहा है। समय की देर है, कभी भी ज्वालामुखी फट सकता है।

गुलामी की जंजीरें तब टूटेंगी, जब भारत का हर युवा प्राचीन गुरुकुल परंपरा से पढकर अपनी संस्कृति और अपनी परंपराओं पर गर्व करेगा। तब भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा, आज की तरह कंगाल नहीं।

पूरे भारत में शिक्षाविदों और प्रवासी भारतीयों के आकर्षण का केन्द्र बनी 'हेमचंद्राचार्य संस्कृत पाठशाला'

– मनोज भारत (शिरसा-हरियाणा)

आजादी के बाद भी भारत में वही मैकॉले शिक्षा व्यवस्था लागू रही और समय के साथ-साथ पीढी दर पीढी भारत की शिक्षा व्यवस्था एवं महापुरुषों का ज्ञान कम होता गया। आज वह विलुप्त होने की कगार पर है।

(स्वदेशी पत्रिका फरवरी २०१६ में से साभार)

भारत की बहुत बडी जनसंख्या यह तो जानती है कि भारत में ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में बहुत बड़े बड़े महापुरुष हुए हैं, जैसे सुश्रुत, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, नीलकण्ड, पतंजलि, चाणक्य और कणाद आदि अनेक नाम है। अगर सभी के नाम लिखे जाएं तो यह लेख नामों से ही भर जाएगा।

परन्तु अंग्रेजों से पहले की भारतीय शिक्षा व्यवस्था के बारे में अधिकतर भारतीय जानते ही नहीं और कुछ तो यह समझते हैं कि अंग्रेजों से पहले भारत में शिक्षा थी ही नहीं। भारत को १९४७ में मिली तथाकथित आजादी से पहले देश की जिन महान विभूतियों को प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में जानकारी थी और उन्हें विश्वास था कि आजादी मिलने के बाद भारत में वही शिक्षा व्यवस्था लौट आएगी। परन्तु ऐसा नहीं हुआ, आजादी के बाद भी भारत में वही मैकॉले शिक्षा व्यवस्था लागू रही और समय के साथ साथ पीढ़ी दर पीढ़ी वह ज्ञान कम होता गया।

भारत में धारना है कि जिस क्षेत्र में एक श्रेष्ठ व्यक्ति रहता है उसका प्रभाव युगों युगों तक उस क्षेत्र में रहता है। प्राचीन काल में अहमदाबाद में महर्षि दधिची का आश्रम रहा है, जिन्होंने न्यायसंगत युद्ध के लिए अपनी हड्डियों तक का दान दे दिया था। वहीं भारत की गुलामी के समय देशभक्तों ने अपनी जीवन को दाव पर लगाते हुए आजादी की लड़ाई के लिए अहमदाबाद को केन्द्र बनाया। आज इसी धारना को प्रबल करते हुए उसी अहमदाबाद को हेमचन्द्राचार्य संस्कृत – पाठशाला नामक गुरुकुल के संचालक उत्तमभाई ने भारत को प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के माध्यम से विश्वगुरु बनाने के संकल्प के साथ अपना केंद्र बनाया है।

आज भारत में पश्चिमी शिक्षा पद्धति का अनुसरण करने के लिए पूरा भारतीय समाज जहां दोड़ रहा है, वहीं भारत में हेमचन्द्राचार्य संस्कृत – पाठशाला में स्वदेशी शिक्षा पद्धति अर्थात् गुरुकुल व्यवस्था के अनुसार शिक्षा प्रदान की जा रही है। इस गुरुकुल की व्यवस्था पूरे भारत में चल रहे शिक्षण संस्थानों से अलग है। इस गुरुकल में कोई डिग्री, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट नहीं दिया जाता।

मैंने प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था की विशालता और श्रेष्ठता के बारे में कई महान लेखकों की पुस्तकों में पढ़ा था, लेकिन उस व्यवस्था को अपनी आंखों से देखने का मौका मुझे इसी गुरुकुल में मिला।

अहमदाबाद के गणपत विश्वविद्यालय में गुजरात के १५०० विद्यालयों के लगभग ३००० श्रेष्ठ विद्यार्थियों और इतने ही अध्यापकों के समारोह में मुझे शिरकत करने का मौका मिला।

आधुनिक शिक्षा बनाम गुरुकुल पद्धति

इस समारोह में हेमचन्द्राचार्य संस्कृत – पाठशाला के विद्यार्थियों को अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए बुलाया गया था।

इस कार्यक्रम में गुरुकुल के विद्यार्थिओं ने संगीत, नाटक, मलखम आदि कई क्षेत्रों में अपने जोहर दिखाए। इसके साथ ही आंखों पर पट्टी बांधकर पढ़ना और संस्कृत में वार्तालाप जैसी कलाएं भी हमें वहां देखने को मिली। **इस कार्यक्रम का जो आनन्द मैंने महसूस किया और दर्शकों ने भी तालियां से जो आनन्द दर्शाया वह शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता।**

इस पाठशाला को चलाने वाले उत्तमभाई ने बताया कि इस शाखा में ९० विद्यार्थी हैं और जिन्हें शिक्षा प्रदान करने के लिए ११० गुरुजी आते हैं। भारत में जब गुरुकुल व्यवस्था से शिक्षा प्रदान की जाती थी, तब भारत विश्वगुरु कहलाता था और भारत में विदेशों से शिक्षा ग्रहण करने के लिए विद्यार्थी आया करते थे।

लेकिन १८३५ में जबसे भारत में मेकॉलो शिक्षा पद्धति से शिक्षा दी जानी लगी तभी से शिक्षा का स्तर गिरना शुरु हो गया, जो आज पूरे समाज में बढ़ रहे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, महिलाओं के साथ होते अत्याचार आदि गंभीर समस्याओं के रूप में हमें नजर आ रहा है।

उन्होंने कहा कि आधुनिक विद्यालयों में शिक्षा नहीं दी जाती केवल अक्षरज्ञान दिया जाता है और शिक्षा के सम्बन्ध में गांधीजी

ने भी कहा था कि, "अक्षरज्ञान न तो शिक्षा का आरंभ है और न अंतिम लक्ष्य। वह तो उन अनेक उपायों में से एक है, जिनके द्वारा स्त्री-पुरुषों को शिक्षित किया जा सकता है। फिर सिर्फ अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना गलत है।"

भारतीय संस्कृति पर आधारित इस गुरुकुल में सुबह साढे चार बजे विद्यार्थिओं की दिनचर्या प्रारंभ हो जाती है और रात साढ़े नौ बजे तक जारी रहती है। अपनी दिनचर्या में विद्यार्थी शिक्षण के साथ साथ अपने पारम्परिक खेलों, नैतिक शिक्षा, न्याय, संस्कृत, आयुर्वेद, ज्योतिष शास्त्र, वास्तुशास्त्र और संगीत आदि का ज्ञान और आनंद प्राप्त करते हैं। इस गुरुकुल में भारत के साथ साथ विदेशों के समृद्ध परिवारों के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

गुरुकुल के एक छात्र के पिता, निशेद शाह, जो कि दुबई में रहते हैं, का कहना था कि आधुनिक शिक्षा प्रदान करने वाले विद्यालयों से बच्चे जब निकलते हैं तो ऐसा महसूस करते हैं जैसे जेल से छूटे हों और जब माता पिता उन्हें भेजते हैं तो ऐसे तैयार करते हैं जैसे युद्ध लडने जा रहे हो, लेकिन इस विद्यालय में बच्चों को घर जैसे माहौल में शिक्षा प्रदान की जाती है, जिससे बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने में ज्यादा आसानी होती है।

देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री कार्यकाल के दौरान इस गुरुकुल की सराहना भी की थी। उनके अतिरिक्त योगगुरु बाबा रामदेव, वरिष्ठ पत्रकार वेदप्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार विनीत नारायण, समाज सेवी अन्ना हजारे और विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष प्रवीण तोगड़िया आदि देश के अनेक प्रबुद्ध लोगों ने भी गुरुकुल का भ्रमण किया और साथ ही उत्तमभाई के इन प्रयासों की सराहना की।

इस गुरुकुल के एक विद्यार्थी ने अभी हाल ही में वैदिक गणित की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल करते हुए गोल्ड मैडल प्राप्त किया है। इस गुरुकुल के विद्यार्थी संस्कृत, हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी में बोलने और बात करने में बिल्कुल सहज महसूस कर रहे थे। हर व्यक्ति के मन में श्रेष्ठ शिक्षा का नाम आते ही दिमाग में उस शिक्षा के लिए होने वाले खर्च का विचार आता है।

उत्तमभाई ने इस सम्बन्धमें जो कहा वह सुनकर हम हैरान रह गए। उनका कहना था कि भारत में कभी शिक्षा बेची नहीं जाती थी, वह तो सुपात्र को दी जाती थी, और इसी आधार पर यह गुरुकुल चलता है। मुझे और मेरे साथियों को यह देखकर ओर भी आश्चर्य हुआ कि केवल शिक्षा ही नहीं इस गुरुकुल में रहने वाले विद्यार्थिओं को जैविक अनाज और गुरुकुल की ही गायों से प्राप्त दूध व घी आदि भी निःशुल्क दिया जाता है। हमने भी विद्यार्थिओं को दिए जाने वाले भोजन का आनन्द लिया। इतना गहरा अनुभव मैंने प्राप्त किया कि उसे इस लेख में पूरा कर पाना मुश्किल है, यह तो केवल उस गुरुकुल के भ्रमण से ही प्राप्त हो सकता है।

शिक्षितों में बढती अंग्रेज-परस्ती

मनोज ज्वाला (रांची, झारखंड)

मैकाले-पद्धति से सामान्य शिक्षित व्यक्तियों में से अधिकतर लोग अपनी शिक्षा के कारण ज्ञान-विज्ञान के मूल स्त्रोत-वेद, वेदांग, पुराण, उपनिषद, सांख्य, सूत्र तथा रामायण, महाभारत और गीता को काल्पनिक व दकियानुसी मान भारतीय रीति-नीति व भाषा-संस्कृति को नकारते हुए युरोपीय-अंग्रेजों एवं अमेरिकी लोगों की प्रायः हर चीज-भाषा-भुषा ही नहीं, उनकी कुरीति-कुनीति, व असभ्यता-अपसंस्कृति भी अपना लेने को तत्पर है : तो विशेष शिक्षित लोग सर्वतो भावेन अंग्रेज ही बन जाने और भारत छोड कर इंग्लैण्ड अमेरिका आदि पश्चात्य देशों में ही बस जाने को उन्मुख हैं। मातृभाषा व मातृभूमि तथा अपनी संस्कृति व स्वधर्म के प्रति अस्वीकृति और पश्चिम के प्रति भक्ति व अंग्रेज-परस्ती इस शिक्षा-पद्धति की सबसे बडी विकृति है।

अंग्रेजी शिक्षण-पद्धति को आईना दिखाता

।। हेमचन्द्राचार्य गुरुकुलम् ।।

जहां

प्रतिभायें गढ़ी जा रही हैं

* ७२ कलाओं के प्रशिक्षण से -
* संस्कृत व्याकरण और भाषा शास्त्र के अध्ययन से -
* पदार्थ विज्ञान और अध्यात्म विज्ञान के सम्यक् विश्लेषण से -
* दुर्लभ वैदिक गणित के सूक्ष्म मंथन से -
* शुद्धातिशुद्ध अन्न-जल-दुग्ध-घृत युक्त नैसर्गिक भोजन से -
* शारीरिक-मानसिक-बौद्धिक पोषण के उत्कृष्ट नियमन से -
* आयुर्विज्ञान-सम्मत प्राकृतिक सह-जीवन से -

सिर्फ शिक्षण संस्थान भर नहीं; एक आन्दोलन है, आन्दोलन !

अर्थात्,

* अंग्रेजी-मैकोले शिक्षण-पद्धति की विसंगतियों के उन्मूलन का राष्ट्रीय आयोजन *
* इण्डिया की मार से आहत भारत के पुनर्जीवन हेतु नयी पीढी के निर्माण का अचूक उपक्रम *
* क्षरित होते सांस्कृतिक मूल्यों-संस्कारों और राष्ट्रीय आदर्शों की पुनर्स्थापना का श्रेष्ठ उद्यम *
* मानव शरीर-श्रम-प्रतिभा-पुरुषार्थ को अर्थ-धर्म-काम-मोक्षमार्गी बनाने का शैक्षणिक सरंजाम *

उत्तम भाई जवानमलजी शाह (बापुजी) के तप-त्याग व समर्पण से सम्पन्न हो रहा है भारत के पुनर्निर्माण का यह यज्ञीय प्रयोजन ।

आईए ! देखिए, समझिए और आप भी शामिल होइए इस राष्ट्रीय शैक्षिक महायज्ञ में ।

हेमचन्द्राचार्य गुरुकुलम्

हीरा जैन सोसायटी के निकट, रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद, गुजरात

दूरभाष :- (०७९) २७५०१९४४, ९०३३५४३५४३

निवेदक : मनोज ज्वाला, पत्रकार/लेखक - मो. ०९४३१३०८३६२ (झारखंड)

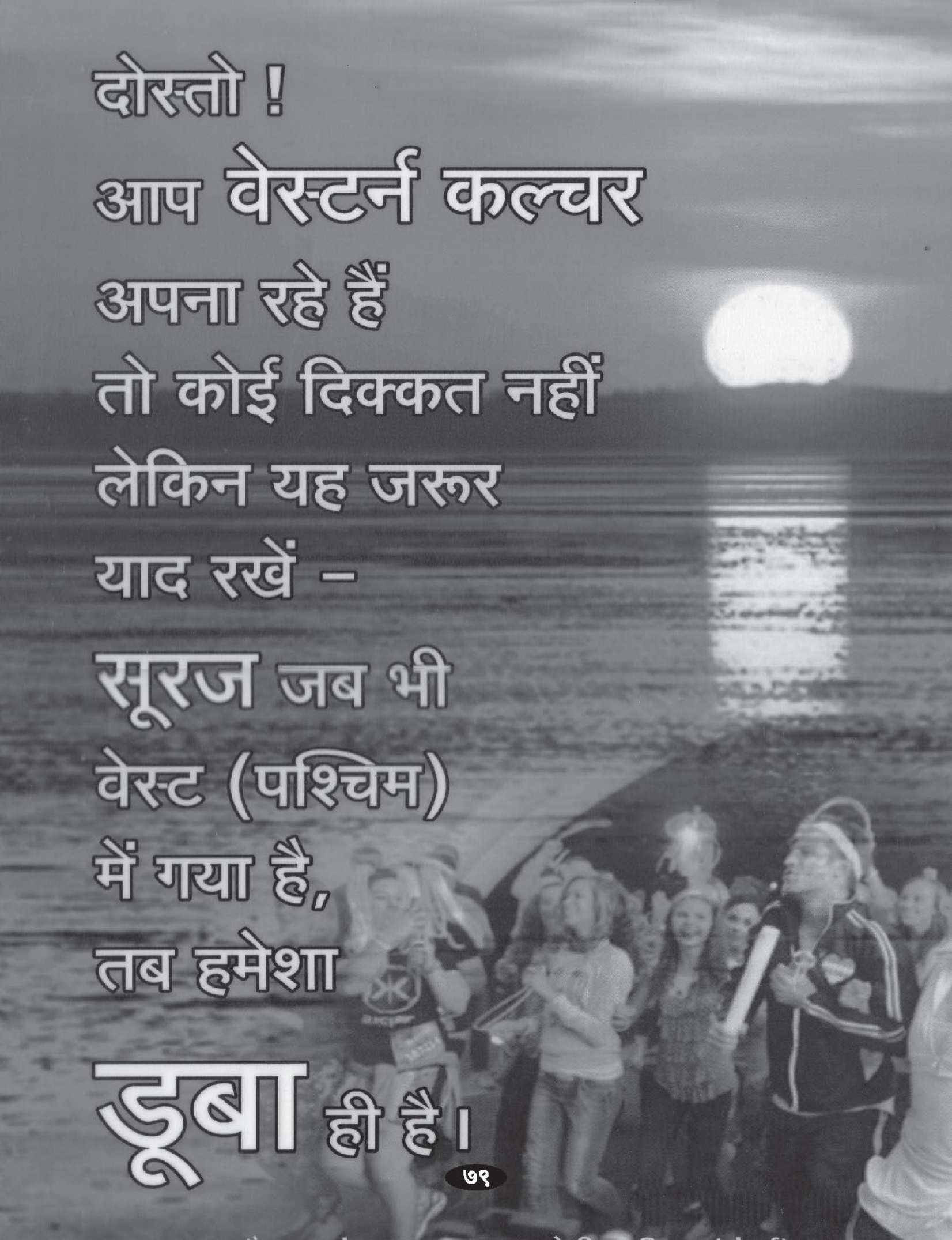
दोस्तो !
आप वेस्टर्न कल्चर
अपना रहे हैं
तो कोई दिक्कत नहीं
लेकिन यह जरूर
याद रखें –
सूरज जब भी
वेस्ट (पश्चिम)
में गया है,
तब हमेशा
डूबा ही है।

पढ़-लिख करके क्या करेगा ओ मूरख नादान

मैं इस देश के लोगों को आज तक समझ नहीं पाया। कोई काम सलीके से नहीं करते। एक चपरासी की नौकरी के लिए पाँच हजार स्नातक लाइन लगाकर खड़े हो जाते हैं। जिस देश ने शून्य का अविष्कार किया, उस देश के लोग झाड़ू लगाने के लिए मारकाट पर उतारू हो जाएँ, तो इससे बड़ा क्रूर मजाक और क्या हो सकता है?

हमारे यहाँ सरस्वती की पूजा होती है। हमारे पास दुर्लभ ज्ञान विज्ञान के खजाने हैं, उपलब्धियाँ गिनाने जाएं, तो खत्म होने का नाम न लें। जो देश सोने की चिड़िया कहलाने वाला था, वहाँ चपरासी की एक अदद नौकरी अराजकता के दृश्य पैदा कर दे तो विश्व बैंक वाले यकीनन हमें कर्ज देना बंद कर देंगे।

हर काम का एक सलीका होता है। अगर झाड़ू ही लगाना था, तो कॉलेज में पढ़ने ही क्यों गए? हैरत की बात तो यह है कि देश में एक भी विश्व विद्यालय ऐसा नहीं है, जहाँ एक कुशल चपरासी बनने के लिए कोई पाठ्यक्रम चलाया जाता हो। साहित्य में एम.ए. करने के बाद चपरासी की नौकरी करनी पड़े तो किस कदर अफरा-तफरी मच जाएगी, यह सोचकर ही मेरी रुह कांप जाती है। चपरासियों के रूतबे में कमी आएगी और साहित्य में चपरासियों की मोनोपोली हो जाएगी।

जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनका भविष्य उज्जवल है। आप पढ़े लिखे नहीं हैं तो फिल्मों में चले जाइए। किसी जमाने में ऐसी सीख दी जाती थी- 'पढ़-लिख कर के क्या करेगा, ओ मूरख नादान, अपनी किस्मत आजमा, जाके फिल्मिस्तान।।' या फिर आप राजनीति में चले जाइए। एक बिना पढ़ी-लिखी औरत बिहार की मुख्यमंत्री बन सकती है।

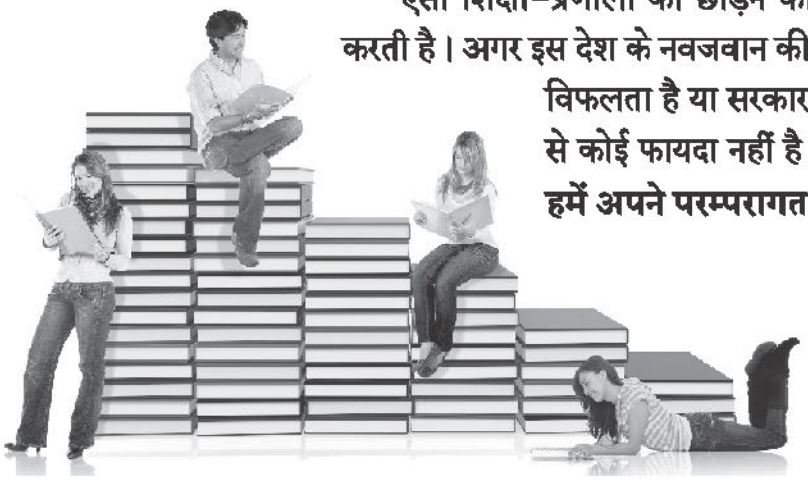

ऐसी शिक्षा-प्रणाली को छोड़ने का समय आ गया है, जो हर साल लाखों बेकारों को पैदा करती है। अगर इस देश के नवजवान की नियति चपरासी बनना है, तो यही सही। यह लोकतंत्र की विफलता है या सरकार की अक्षमता, इस पर ६८ सालों के बाद अब बहस करने से कोई फायदा नहीं है। **हाँ, यह कबूल करने का वक्त जरूर आ गया है कि हमें अपने परम्परागत हुनर वाले कामों को फिर से अपनाना है। स्वरोजगार के लिए सीबीएससी या आईसीएससी में दाखिला लेने की जरूरत नहीं।**

-ले. अक्षय जैन
('दाल-रोटी' में से साभार)

यह बच्चा आपका कैसे हो गया ?

जो बच्चा जन्म ले रहा है, वह आपका नहीं हो सकता। गर्भाधान से ही माँ को विलायती दवाईयाँ खानी पड़ती है। बच्चे को स्वस्थ रखने के लिए खाने-पीने का सारा सामान विदेशी कंपनियों का होता है। जूते फ्रांस से आए, खिलौने जापान के हों और कपड़े तो भई इंग्लैंड के बने हैं। वह जन्मदिन ही कैसा, जिसमें मोमबत्तियाँ न बुझाई जाए और अंडा से बना केक न काटा जाए। प्लेग्रुप और नर्सरी से शुरु होने वाली यह लिस्ट इतनी लम्बी है कि खत्म होने का नाम ही नहीं लेती। क्या अब भी आप यह कहने की हिम्मत करेंगे कि 'यह बच्चा आपका है ?' माँ-बाप भारतीय हो सकते हैं, लेकिन बच्चा भी भारतीय है, यह कौन कह सकता है ?

भाषा अंग्रेजों की ! शिक्षा अंग्रेजों की

अंग्रेजी राज में पिंडारिओं और ठगों ने मिलकर जितना हिन्दुस्तान लूटा होगा, उससे ज्यादा माल तो आज मात्र एक वर्ष में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी अपने मुनाफे के रूप में ले जाती है।

कौन कह सकता है कि अंग्रेज चले गए हैं ? हमारे उठने, बैठने, सांस लेने, जीने की हर गतिविधि में अंग्रेज मौजूद हैं। कोई ऐसे ही थोड़े चला जाता है, अपने को छोड़कर ?

कहाँ नहीं है अंग्रेज ? काला कोट पहन कर अदालत में मौजूद है। नीली वर्दी पहने हुए थाने में मौजूद हैं। लिप्टन की चुसकियाँ लेता हुआ हर दीवानखाने में मौजूद है।

मैंने हर बार उसे संसद में बजट पेश करते हुए देखा है। लंबा चोंगा पहन कर दीक्षांत-समारोहों में स्नातकों को डीग्रियाँ बाँटते हुए देखा है। सात-घोड़ों की बग्घी में सवार होकर गणतंत्र दिवस की परेड में सलामी लेते हुए देखा है।

घोड़ों की तरह हिनहिनाता हुआ रेसकोर्स में मौजूद है अंग्रेज । वह विल्स की नेम-प्लेट चिपकाए हवा में बल्ला लहराता हुआ क्रिकेट के मैदान में मौजूद है। इक्कत्तीस दिसंबर की रात को नशे में छुत कभी पॉप, कभी भांगड़ा करता हुआ हर सड़क पर मौजूद है।

अंग्रेज हर चुंगी नाके पर जजिया वसूल रहा है। फॉरेस्ट ऑफिसर की हैसियत से आदिवासियों पर लाठिय बरसा रहा है। मंदिरों को मस्जिदों से लड़ाता है। किंगफिशर की एक बोतल पर रॉक संगीत का कैसेट मुफ्त दे रहा है। बेटियों और बहनों को लेडी डायना की लाइफ स्टाइल परोस रहा है।

संविधान अंग्रेजों का, संसदीय लोकतंत्र अंग्रेजों का, कानून अंग्रेजों का, न्याय और प्रशासनिक व्यवस्था अंग्रेजों की, शिक्षा-प्रणाली अंग्रेजों की, भाषा अंग्रेजों की ! मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि इतिहास में एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब आपको असली और खानदानी अंग्रेजी सिर्फ हिन्दुस्तान में मिलेंगे, इंग्लैण्ड में नहीं।

– अक्षय जैन

ऐसे माँ-बाप, माँ-बाप कम दुश्मन ज्यादा होते हैं...

जीवन संस्कारों से सजता व संवरता है। पढ़ी हुई शिक्षा तो भूली जा सकती है, लेकिन संस्कार जीवन पर्यन्त के पाथेय होते हैं। संस्कारहीन व्यक्ति दरिद्र ही नहीं होता, वह जीवन भर दुःख और तकलीफ भी भोगता है। सुसंस्कार सुरक्षा कवच है, जो मनुष्य के यात्रापथ को निरापथ बनाता है। पालक और बालक यदि सुसंस्कृत, धार्मिक और सभ्य हैं, तो धर्म, समाज और राष्ट्र का बहुमुखी विकास अवश्यंभावी है। बालकों के संस्कार-निर्वाण में अभिवाचक भी कम जवाबदेह नहीं है। यदि माँ-बाप खुद संस्कारों के शिकार हैं, तो वे अपनी संतति से क्या अपेक्षा रख सकतें हैं ? ऐसे माँ-बाप, माँ-बाप कम, दुश्मन ज्यादा होते हैं। माँ-बाप का बेटे के प्रति कर्तव्य है कि वे अपनी संतान को इतना सुयोग्य बना दे कि सत्पुरुषों सज्जनों की सभा में वह अग्रिम पंक्ति में बैठने कि पात्रता रखें और बेटे का माँ-बाप के प्रति कर्तव्य यह है कि वह ऐसा जीवन जिये, जिससे हर आदमी उसके माँ-बाप से पूछे कि तुमने किस पुण्य कर्म के उदय से ऐसा सुपुत्र पाया है। माँ किसी बेटे कि जागीर नहीं होती और संस्कारों पर किसी का एकाधिकार नहीं होता। पुत्र को जन्म देने मात्र से स्त्री माँ नहीं हो जाती और कोई पुरुष बाप नहीं हो जाता। माँ-बाप को अपनी संतान के प्रति उनके क्या-क्या कर्तव्य और दायित्व हैं, यह ज्ञान भी होना चाहिए।

नाट्य कलाएं, संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य की विभन्न विद्याएँ, कला के अलग-अलग रूप हैं और कलाएँ इंसान को संस्कारित करती है, उसे संवारती है, उसे पशु होने से बचाती है, उसके जीवन में संतुलन रखती है। मगर कलाकर्म के इस मर्म को पीछे धकेल कर व्यवसाय कर्म से जोड़ दिया जाये, तो जो नतीजे आने चाहिए वे आज की कटु मगर चिंताजनक सच्चाई है।

– मुनि श्री प्रसन्न सागरजी

तूफान आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है...

आपके पास अपने बच्चों के लिए वक्त नहीं है। इससे ज्यादा खतरनाक बात यह है कि आपके बच्चों के पास बहुत ज्यादा वक्त है, जिसे आप अनदेखा कर रहे हैं। आपकी यह उदासीनता बरकरार रही, तो आपका और आपके परिवार का विनाश निश्चित है। तूफान आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है और उसकी दस्तक आप नहीं सुनना चाहते हैं तो फिर भगवान ही आपका मालिक है।

अतिरिक्त समय में आपके बच्चे क्या कर रहे हैं ? चॉकलेट खा कर दाँत बिगाड़ रहे हैं, घंटों इन्टरनेट के सामने बैठकर चेटिंग कर रहे हैं और अपनी आंखों की रोशनी गँवा रहे हैं।

आपके बच्चे मोबाईल पर संदेश भेजने के आदी हो चुके हैं। टाइम पास करने का यह जरिया उन्हें कैंसर दे सकता है। शहर में कितने डिस्को हैं, कौन-सा डिस्को रात कितनी देर तक खुला रहता है, इसकी उन्हें पूरी जानकारी है। दिन में खुले रहने वाले डिस्को में कम उम्र के लड़के-लड़कियों का जाना आम बात है, जिन्होंने अभी अपनी स्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं की।

फास्ट फूड, फिल्मी गॉसिप, फैशन शो, पुल, और वीडियो गेम्स पार्लर, क्रिकेट, धूम्रपान, ड्रग्स इत्यादि आपके बच्चों की जिन्दगी के अहम हिस्से बन चुके हैं। ये आपके बच्चों के सहज जीवन को समाप्त कर रहे हैं। रही-सही कसर टेलीविजन पूरा कर रहा है, जो चौबीसों घंटे आपके बच्चों के दिलो-दिमाग पर इस कदर छाया हुआ है कि वे एक तरह से टेलीविजन के दास बन गए हैं। आपके बच्चे वही खाएंगे जो टेलीविजन कहेगा, वही पहनेंगे जो टेलीविजन चाहेगा, वही सोचेंगे जो टेलीविजन बोलेगा।

पश्चिमी अर्थशास्त्र की मान्यता है कि किसी समाज पर कब्जा करना हो तो, पहले उस समाज के बच्चों पर काबिज हो जाओ। देश तो अपने आप गुलाम हो जाएगा।

बच्चों को संस्कार दीजिए, संपत्ति नहीं...

बच्चों को संस्कार दीजिए, संपत्ति नहीं। बच्चों को नैसर्गिक भारतीय जीवन शैली में ढालना ही इसका एकमात्र उपाय है। मंदिर बनवाने से ज्यादा जरुरी है, बच्चों को मंदिर में जाने की पात्रता देना। वर्ना जिस तरह आज जीन्स और टाई पहन कर कृष्ण कन्हैया की आरती उतारने के दृश्य देखे जा सकते हैं, कल हमारे बच्चे कोकोकोला पीकर और बर्गर खाकर उपवास करेंगे और प्रसाद में अल्कोहलिक चॉकलेट देना घर की इज्जत का प्रतीक बन जाएगा।

संपत्ति बच्चों को बिगाड़ती है, संस्कार उन्हें सहज और नैसर्गिक जीवन जीने की ऊर्जा देते हैं। संपत्ति को भोगने की एक सीमा है, संस्कारों के साथ जीवन जीने के सुख अनंत हैं !

– नंदकिशोर राजगढ़िया

आज तो जो विद्या की अर्थी उठा दे, वही विद्यार्थी...

बेरोजगारी का अंतिम पड़ाव अपराध है। अब तक यह माना जाता था कि अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे लोग ही अपराध की ओर मुड़ते हैं। आश्चर्यचकित करने वाली बात यह है कि आजकल पढ़े-लिखे लोगों का अपराध पर एकाधिकार हो गया है। फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने वाले माफिया गिरोहों में शामिल हो रहे हैं। सरकारी तंत्र का पढ़ा-लिखा तबका हर तरह के अपराध करने में सबसे आगे है।

हिन्दुस्तान का अंगूठा छाप आदमी आज भी ईमानदारी से जीना चाहता है। जितना मिल जाए, उसी में गुजर-बसर करने को तैयार है।

शिक्षा का अर्थ तो यह होना चाहिए कि दूसरों के होठों की मुस्कुराहट हमारी खुशी बने। हम विद्या और शिक्षा को पर्यायवाची न समझें। प्रशिक्षित तो हम पशु को भी कर सकते हैं, पर हम उसमें विवेक नहीं जगा सकते। यह विवेक ही मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ बनाता है। विद्या जानना है जबकि शिक्षा सीखना। शिक्षा ली जाती है, विद्या अर्जित की जाती है। हमें आज के विद्यार्थियों को विद्या के साथ-साथ शिक्षा भी देनी है। आज तो जो विद्या की अर्थी उठा दे, वही विद्यार्थी।

–अनंत श्रीमाली (कवि, व्यंग्यकार और मंच संचालक)

न्यूयार्क का अब्राहम लिंकन स्कूल

आज समस्त भारतीयों की नजर यूरोप-अमरीका की तरफ है। उनकी हर बात हम आंखें मुंद कर अपनाने को तैयार है। जिस प्रकार कस्तुरी मृग की नाभि में होती है, फिर भी मृग अज्ञानता के कारण उसे पाने के लिए इधर-उधर भटकता है, उसी प्रकार सारी व्यवस्थाएँ हमारी संस्कृति में मौजूद है, पर आँखें मूंद कर हम विदेशों की नकल करने में लगे हैं। मद्य, मांस, सेक्स, हिंसा के कुपरिणामों से त्रस्त होकर यूरोप-अमरीका के लोग शाकाहार, योग, अहिंसा, ध्यान आदि का मूल्य समझ कर उन्हें अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। दुःख की बात यह है कि इन देशों के लोग जिन दुष्परिणामों को भुगत रहे हैं, उन्हीं सारी बातों को फैशन के नाम पर हम अपनाने में गौरव अनुभव कर रहे हैं।

प्राचीन काल में हमारे यहाँ नालंदा-तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे। संसार के अनेक देशों के लोग हमारे यहाँ आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या (ज्ञान) वह है, जो हमें बंधनों से छुड़ा कर मुक्ति की ओर ले जाये। इस सुनहरे सूत्र पर हमारी शिक्षा आधारित थी। शिक्षा द्वारा व्यक्ति को संस्कार, करुणा, नैतिकता आदि प्राप्त होते है। आज शिक्षा द्वारा बड़ी-बड़ी डीग्रियाँ पाकर मानव डॉक्टर, वकील, इंजीनियर बन गया है। **लेकिन उसमें मानवता नदारद है।** जीवन के अमूल्य १५ या १८ वर्ष शिक्षा के पीछे लगाकर जब वह शिक्षित बनता है, तब शिक्षा अर्थउपार्जन में कितनी उपयोगी होती है, यह सोचनेवाली बात है। वर्तमान शिक्षा ने हमारे सांस्कृतिक पर्यावरण को खूब विकृत किया है। आज मानवता ऑक्सिजन पर आखिरी सांस ले रही है। सरस्वती मंदिर आज अनाचार व दुराचार के अड्डे बन गये हैं। **हमारी प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था एवं उसमें प्रदान की जाने वाली शिक्षा का त्याग कर हम नौकरी व अर्थ के लालच में अंग्रेजी बाबू बनने के चक्कर में पड़ गये हैं।** शिक्षा-शास्त्रियों का स्पष्ट मत है कि बच्चे की बुद्धि का विकास मातृभाषा में शिक्षा के माध्यम से जितना अधिक हो सकता है, उतना अन्य भाषा के माध्यम से संभव नहीं है। फिर भी हम मातृभाषा को छोड़कर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा की अंधी दौड़ में शामिल हो रहे हैं। इसके दुष्परिणाम सामने आने लग गये हैं। अभी भविष्य की कल्पना तो और अधिक भयावह है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि न्यूयोर्क (अमरीका) में अब्राहम लिंकन स्कूल प्रारंभ किया गया है, जिसका मुख्य कार्यालय लंदन में है। अन्य अनेक देशों में भी उसकी शाखाएँ प्रारंभ की गई हैं। वहाँ हमारी देवभाषा संस्कृत, प्राचीन गणित एवं तत्वज्ञान की शिक्षा दी जाती है। स्कूल- प्रबंधनने पांच वर्ष या उससे बड़ी उम्र के बच्चों को इस स्कूल में भेजने के लिए जनता से आग्रह किया है। उन्होंने कहा है कि अपने बच्चों को श्रेष्ठ, आदर्श स्वच्छ व प्रामाणिक नागरिक बनने के लिए हमारे स्कूल में भेजिए। वहाँ पढ़ाये जाने वाले विषयों की समय-सारिणी इस प्रकार है :

८.३० पर उपस्थित, ८.४५ पर समूह संगीत, ९.५५ पर तत्वज्ञान, ९.४५ पर गणित, १०.१५ पर नाश्ता, १०.३० पर वाचन, ११.०० पर लेखन, ११.३० पर (विद्यार्थियों को) पढ़ कर सुनाना, १२.०० भोजन, १२.३० पर शारीरिक शिक्षा, २.०० पर शास्त्रकला, प्रकृतिज्ञान, २.४५ पर नाश्ता, ३.०० पर छुट्टी। (भोजन-नाश्ता शाकाहारी दिया जाता है।)

तत्सम्बधी अपील में शिक्षा व शिक्षक की उपयोगिता के विषय में भी कई बातें लिखी गयी हैं। १२ सितंबर १९९४ को सुबह ८.३० बजे से प्रारंभ इस स्कूल का पता इस प्रकार है - **अब्रहाम लिंकन स्कूल**, १२ ईस्ट, ७९ वीं स्ट्रीट, न्यू(न्यूयोर्क- NY-11021). फोन - (२११)-७४४-७३००

तत्सम्बधी हमारा ध्यान इस ओर कब जायेगा, जब हम अपनी पुरानी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की ओर लौटेंगे। कम-से-कम अब न्यूयोर्क के अब्राहम लिंकन स्कूल को देखकर तो हमें कुछ सोचना ही चाहिए। जितनी जल्दी हम इस ओर ध्यान दे पायेंगे, उतना ही लाभप्रद होगा।

- जे. के. संघवी

स्कूल में बाजार...

अब वक्त आ गया है, जब हमें अपने बारे में सोचना चाहिए। क्या अपने समय का थोड़ा हिस्सा हर रोज अपने बारे में सोचने के लिए नहीं निकाल सकते ? क्या हमें इस बात पर नहीं सोचना चाहिए कि हमारे बच्चों के साथ स्कूलों में क्या हो रहा है ?

आईस्क्रीम बनाने वाली एक कंपनी स्कूलों में एक इनामी प्रतियोगिता आयोजित करती है। जो बच्चा प्रमोटर कंपनी की आइस्क्रीम के ज्यादा से ज्यादा रैपर इकट्ठा कर सकता है, उसे कैमरा या कॉमिक्स इनाम में दिया जाता है। मुंबई के किसी मशहूर रेस्टोरेंट में किसी प्रसिद्ध कार्टून चरित्र के साथ लंच या डिनर का इंतजाम भी है।

टूथपेस्ट बनाने वाली एक कंपनी स्कूलों में एक फिल्म दिखाती है। बच्चों को बताया जाता है कि दाँत कैसे खराब होते हैं। फिर यह बताया जाता है कि उनके द्वारा बनाई हुई टुथपेस्ट से दांत कितने सुरक्षित रहते हैं। कितने ज्यादा मजबूत हो जाते हैं। हर बच्चे को कोलगेट की एक ट्यूब मुफ्त में दी जाती है।

बाजार की गिरफ्त से अब तक स्कूल बचे थे। अब वे भी इस बाजार की लपेट में आ गये हैं। बाजार पर कब्जा मल्टिनेशनल कंपनियों का है। मकसद और निष्कर्ष दोनों साफ हैं। बच्चों को एक ऐसी दुनिया में धकेला जा रहा है , जिसमें वे कुछ खास उत्पादों के आदी और गुलाम हो जाएं।

कालेज डे मल्टीनेशनल कंपनियाँ स्पोंसर कर रही हैं। आईस्क्रीम, टूथपेस्ट से लेकर कोल्ड ड्रिंक्स नूडल्स और पिज्जा की मार्केटिंग के लिए बच्चों को टारगेट बनाया जा रहा है। जंक फूड को मासूमों के कंधों पर लादने के लिए मल्टीनेशनल कंपनियाँ उनके क्लास रूँम तक पीछा कर रही हैं। हेपेटाइटिस के टीके से लेकर फन पार्क या 'जेल पेन' के प्रचार के लिए हमारे मासूम बच्चे इस्तेमाल किये जा रहे हैं।

अगर बच्चे आपके हाथ से निकल गए, तो समझिए आपका सब कुछ नष्ट हो गया।

इसीलिए में कहता हूँ कि थोड़ा सा समय निकालिए और ठंडे दिमाग से सोचिए। स्कूलों के संचालकों और प्रधानाचार्यों पर मुकदमा ठोकिए, मानवाधिकार आयोग में शिकायत दर्ज कराईये या अखबारों में विरोध करिए। आपके बच्चों की परवरिश का अधिकार आपका है। आप बच्चों की पढ़ाई की फीस अदा करते हैं। यह आपका हक बनता है कि स्कूलों में आपके बच्चों के साथ खिलवाड़ न हो।

जिस देश में गुरुकुल की परम्परा रही हो, विद्यालयों को ज्ञान मंदिर माना जाता रहा हो, सरस्वती की पूजा की जाती हो, वहाँ कारपोरेट जगत के दलालों के प्रवेश पर पांबदी लगनी चाहिए। कालेजों और स्कूलों के प्रबंधको को इस बात की चेतावनी दी जानी चाहिए कि वे चंद पैसों की खातिर बच्चों के स्वास्थ्य और भविष्य को दांव पर नहीं लगा सकते।

बाजार आपकी जिन्दगी को बेहतर नहीं बना सकता, तो यह कोशिश जरुर कीजिए कि बाजार आपको अपना गुलाम भी न बना सके। अगर बच्चे आपके हाथ से निकल गए, तो समझिए आपका सब कुछ नष्ट हो गया।

अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा लूट मचाने वाली मल्टीनेशनल कंपनियों के लिए सेल्समैन तैयार कर रही है।

वैश्वीकरण और बेहिसाब आयात के कारण लाखों छोटे और मध्यम दर्जे के उद्योग एवं कारखाने बंद हो गए हैं। न तो नौकरियाँ हैं और न ही रोजगार के अवसर। स्वास्थ्य आम आदमी के हाथ से निकल गया है।

यह कहना कि अंग्रेजी जानने से सुबह उठते ही नौकरी मिल जाएगी या रोजगार में आप हेनरी फोर्ड का दर्जा हासिल कर लेंगे, आत्मछलना के सिवा कुछ नहीं है। जिस देश की आधी आबादी गरीबी रेखा के नीचे रहती हो, वहाँ इन्फोसिस की सफलता को आदर्श के रूप में पेश करना मानसिक दिवालियापन का सबूत है। सिर्फ अंग्रेजी के सहारे न तो आप चुनाव जीत सकते हैं और न ही फिल्मों या सिरियल में कामयाब हो सकते हैं।

हिन्दुस्तान के अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में क्या हो रहा है ? मल्टीनेशनल कम्पनियाँ बच्चों को मुफ्त केडबरी खिला रही है, जिसमें कीड़ा होता है। बच्चों को फिल्म दिखाकर आदी बनाया जा रहा है कि कोलगेट इस्तेमाल नहीं करोगे, तो मुँह के सारे दाँत गिर जाएँगे। अब यह बताना जरुरी नहीं है कि कोलगेट में जानवरों की हड्डियों का चूर्ण मिलाया जाता है। हद तो तब हो गई जब एक विदेशी कंपनी द्वारा लड़कियों में नेपकिन बाँटे गए।

पूरी प्राथमिक शिक्षा विश्व बैंक चला रही है

आप जब अपने बच्चे को अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में भेजते हैं, तो उसे विदेशी संस्कृति का गुलाम बना देते हैं। वह बाईबल के बारे में ज्यादा जानता है, मैक्डोनाल्ड में जाने के लिए बैचेन रहता है और डनहिल के कश लगाना अपनी शान समझता है। थोड़ा बड़ा होने पर शुरू होते हैं – इंटरनेट पर चेटिंग, दिन में खुले रहने वाले डिस्को में मस्ती, मांसाहारी खान–पान की ओर झुकाव। आप अनजाने में अपने बच्चों पर एक ऐसी लाईफ स्टाइल थोप देते हैं, जो नैसर्गिक नियमों के खिलाफ है।

अपनी भाषा को छोड़ने का अर्थ है– अपने धर्म, अपनी परम्पराओं और अपने नैसर्गिक जीवन से विमुख होना। एक दिलचस्प उदाहरण देना चाहूँगा। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वाला बच्चा दिन में कम–से–कम बीस बार एक शब्द जरूर बोलता है– 'ओह, शीट !' (OH SHIT) शीट् का अर्थ होता है विष्ठा, यानी टट्टी। हद तो तब हो गई जब मंदिर में टाइट पेंट पहने एक लड़की अर्चना के लिए झुक नहीं पाई तो उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा – 'ओह, शीट् !!'

बुनियादी सवाल मौजूदा व्यवस्था को बदलने का है।

अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा प्रणाली, दो अलग–अलग चीजे हैं। कोई अंग्रेजी सीख कर कंप्यूटर पर महारत हासिल करना चाहता है, तो यह उसका निजी चुनाव है। शिक्षा का जिस तरह से व्यापारीकरण हो रहा है, उससे यह स्पष्ट है कि यूरोप और अमेरिका को भारत के बाजार पर कब्जा जमाने के लिए नए दलालों और गुलामों की सख्त जरूरत है। अंग्रेजी माध्यम की तालीम लूट मचाने वाली मल्टीनेशनल कम्पनियों के लिए सैल्समैन तैयार कर रही है। पूरी प्राथमिक शिक्षा को विश्व बैंक चला रही है। बुनियादी सवाल मौजूदा व्यवस्था को बदलने का है।

आई. आई. टी., प्रोफेशनल्स के एक ग्रुप ने मुझे भाषण देने के लिए आमंत्रित किया था। क्वालिटी के मुद्दे पर मेरा कहना था – 'हमारे बच्चों के मुकाबले यूरोप के बच्चे बेहद खूबसूरत, गोरे – चिट्टे और हष्ट–पुष्ट होते हैं। क्या अपने बच्चों की क्वालिटी सुधारने के लिए युरोप के मर्दों को हम बुलाना पसंद करेंगे ? ऐसी स्पर्धा में शामिल होने का क्या तुक है, जो हमें हमारी पहचान से बेदखल कर दे?'

अंग्रेजी सीखने वाला बच्चा स्मार्ट इंटेलीजेन्ट और एक्टिव होता है, ऐसी मान्यता धोखाधड़ी का पर्याय है। हमें अपनी औकात से रूबरू होना चाहिए। हम जैसे हैं, उसे स्वीकार करना ही हमारे जीवन का आनंद है। जिसे अपनी भाषा और रीति–रिवाजों और अपने पुरखों से मिले जीवन–मूल्यों पर गर्व होगा, वही स्वाभिमान से जी सकता है। अपने बच्चों को अमेरिकन या यूरोपीयन बनाने के मोह से बचिए।

– अक्षय जैन

(दाल–रोटी से साभार)

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां (MNCs) तोड़ रही भारत की शिक्षा व्यवस्था

Right To Recall Against Corruption

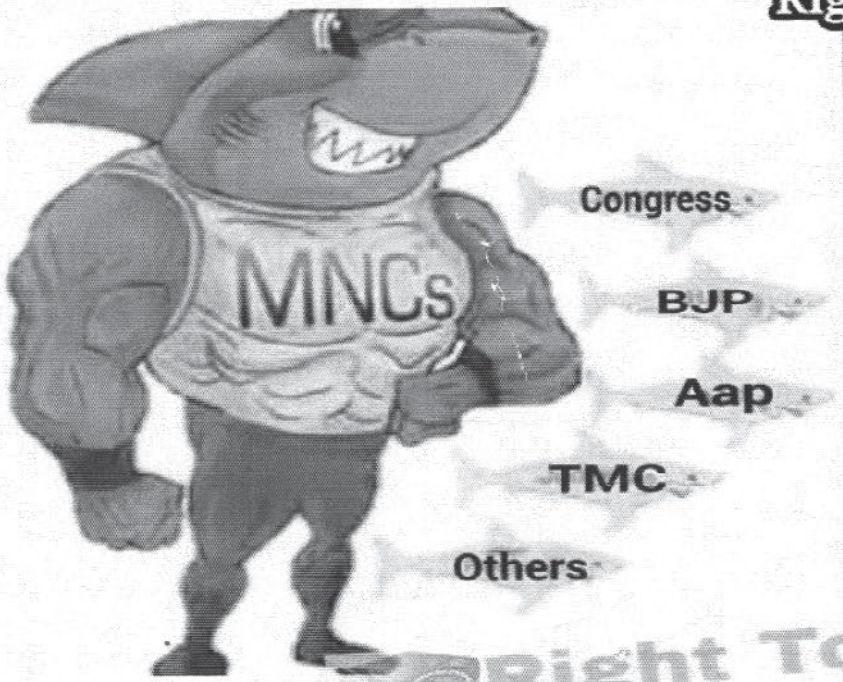

बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जिस भी देश में जाती है वहां गणित और विज्ञान का आधारभूत ढांचा तोड़ने के प्रयास करती है साथ ही मंत्रियो को घूस देकर ऐसे कानून लागू करवाती है जिससे सरकारी स्कूलों की स्थिति बदतर हो जाए

Www.Righttorecall.Info

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का मिशनरीज से गठजोड़ होने के कारण मिशनरीज को इनसे सीएसआर के माध्यम से अनुदान प्राप्त होते है और वे पिछड़े हुए इलाको में स्कूल और अस्पतालो की माध्यम से धर्मान्तरण करते है

अभिभावक अपने विधायक से यह मांग करे कि जिला शिक्षा अधिकारी को नौकरी से निकालने का अधिकार अभिभावकों को दिया जाए

मेक्वेले-शिक्षा 'बेरोजगारी' का उत्पत्ति स्थान: क्या और सबूत अभी भी चाहिए ?

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

dainikbhaskar.com | राष्ट्रीय संस्करण, नई दिल्ली | बुधवार, 16 सितंबर, 2015, भाद्रपद, शुक्ल पक्ष - तृतीया, 2072

उत्तरप्रदेश में प्यून के 368 पदों के लिए 23 लाख आवेदन; दावेदारों में दो लाख से ज्यादा बीटेक-ग्रेजुएट, 255 पीएचडी

दावेदारों के लिए दो शर्त- 5वीं पास हो और साइकिल चलानी आती हो

प्यून के एक पद के लिए औसतन 6250 दावेदार। इनमें 5वीं पास सिर्फ 53000

- आवेदन की दलील- बेरोजगार से प्यून भला
- मंत्री बोले- इससे भेदभाव और बढ़ेगा

आधुनिक शिक्षा से शिक्षित युवकों : आत्म हत्या की शर्त में... बताईए : मेक्वेले-शिक्षा ने क्या सिखलाया ?

पत्रिका | सिटी पत्रिका | patrika.com/city P-3

आत्महत्या करने वालों में 48% युवा

जरूरत है मनोबल बढ़ाने की, 6 महीने में 296 आत्हत्याएं, इसमें से लगभग आधे युवा

इंदौर में सबसे ज्यादा

142 दवा झूठे जिंदगी

गंभीर है आत्महत्या के मामले

मनोवैज्ञानिक सेंटर की आवश्यकता

गुजरात वैभव | १९-४-२०१६ | पेज नं. ९

कॉलेज में रातभर हुई शराब पार्टी, सुबह तक नशे में पड़े रहे लड़के-लड़कियां

जोधपुर

जोधपुर की नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में गत रात को जूनियर स्टूडेंट्स ने सीनियर्स स्टूडेंट्स को फेयरवेल पार्टी दी। कैंपस में हुई इस पार्टी में छात्र–छात्राओं ने जमकर शराब पी और रविवार सुबह तक खूब धमाल मचाया। मामले पर यूनिवर्सिटी प्रशासन अनजान बना हुआ है। मैनेजमेंट का कहना है कि फेयरवेल में शराब परोसे जाने की कोई जानकारी नहीं है। दरअसल, एनएलयू के जूनियर स्टूडेंट्स ने इस वर्ष के पासआउट स्टूडेंट्स को गत रात फेयरवेल पार्टी दी। इसमें रात करीब 12 बजे तक केवल नाच–गाना और खाना चला। इसके बाद जब फैकल्टी चली गई तो स्टूडेंट्स ने शराब का सेवन शुरू कर दिया। मंच पर स्टूडेंट्स बोतल लेकर नाच–गाना करते रहे। एनएलयू के कुलसचिव सोहनलाल शर्मा ने मामले पर कहा कि शराब के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है। जूनियर स्टूडेंट्स सीनियर्स को हर साल फेयरवेल पार्टी देते हैं। पार्टी में लगाए गए स्टाफ से शराब पिए जाने की जानकारी ली जाएगी। यदि वास्तव में ऐसा है तो उनके खिलाफ कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

स्वाभिमान और समृद्धि की कुंजी है स्थानीय संसाधन और स्थानीय कौशल

– अतुल जैन

(लेखक दीनदयाल शोध संस्थान के सचिव हैं, लेकिन इस लेख में उनके विचार निजी हैं।)

पूरे विश्व में इस समय हाहाकार मचा है, मंदी का एक भयंकर दौर चल रहा है, पश्चिम की सभी अर्थव्यवस्थाएँ एक–एक कर इस दल–दल में धंसती चली जा रही है। अपना देश अगर अभी तक इस भयानक परिस्थिति से बचा हुआ है तो सिर्फ इसलिए कि वैश्वीकरण की चकाचौंध के बावजूद उसका एक बहुत बड़ा वर्ग अभी अपनी जड़ों से जुड़ा हुआ है। और, इसके अधिष्ठान में है, हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारी परिवार व्यवस्था और परंपराओं में हमारी आस्था व उनके प्रति हमारा प्रेम। ये परम्पराएं सिर्फ सामाजिक स्तर पर ही नहीं, आर्थिक रूप से भी हमें मजबूत बनाए हुए हैं।

शहरों ने, शहरीकरण की प्रवृति ने परंपराओं को तोड़ने की कोशिश जरूर की है, लेकिन हमारी सामाजिक व्यवस्थाओं ने कम से कम गांवों में तो उन्हें अभी थामे रखा है। इसका हमें गर्व होना चाहिए, परंतु यह भी सच है कि गाँवों से बड़ी तादाद में शहरों की तरफ पलायन हो रहा है, हजारों की संख्या में बेरोजगार युवक नौकरी की तलाश में रोज़ाना शहरों की ओर कूच करने लगे हैं, इसके लिए सरकारी नीतियाँ जिम्मेदार हैं, तो हम स्वयं भी उतने ही जिम्मेदार हैं, समाज ने अपनी आवश्यकताएं, पसंद–नापसंद, इच्छाएँ–अनिच्छाएँ, सभी शहरों के समान ढालने शुरु कर दिए, अपने संसाधनों की अनदेखी कर, अपने कौशल को तुच्छ समझ कर हम नौकरी पर आश्रित होने लग गए हैं।

गाँव के लोहार का बेटा अगर स्कूली पढ़ाई के साथ–साथ अपने दादा और पिता से उनके हुनर के कुछ राज समझता है, उन्हें काम करते हुए देखता है, उन्हें सुनता है और कभी –कभी हाथ बंटाता है तो यह कोई तथाकथित बाल–श्रम के कानून में नहीं आता, यह तो वांछित है, होना ही चाहिए, गलीचे बनाने वाले किसी परिवार के बच्चे अगर उस खानदानी पेशे में शुरु से ही दिलचस्पी लेने लगते हैं तो क्या वे वर्तमान, दिशाहीन स्कूली शिक्षा से बेहतर शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहे होते ? क्या उनका

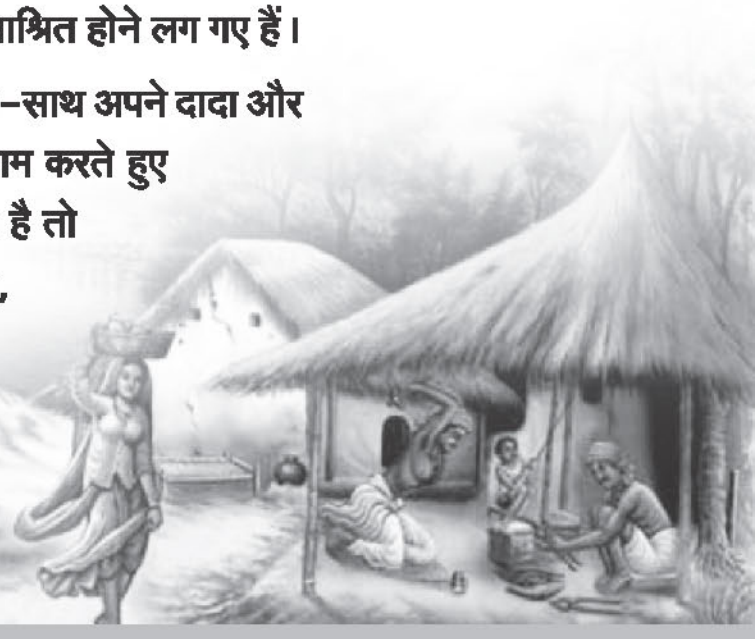

● चरखा स्वयं एक कीमती मशीन है, हाथ कताई ही दरिद्रता को भगाने का और धन के अभाव को असंभव बनाने का एक मात्र सुलभ उपाय है। - गांधीजी

कौशल दिनों–दिन श्रेष्ठ नहीं होने लगता ? हमारे तथाकथित प्रगतिशील बुद्धिजीवियों ने ऐसे बालकों को जबरदस्ती स्कूल भेजने और उन्हें ए.बी.सी. जैसी अर्थहीन पढ़ाई करवाने के लिए एक तरफ तो सरकार को बाध्य किया, दूसरी तरफ समाज में ऐसा वातावरण बनाया कि जो बच्चा स्कूल न जाए और अपने पारिवारिक धंधे में अपने माँ–बाप की मदद करे, उनसे सीखे, अपने कौशल को निखारे, वह अनपढ़ !

आज अगर खेती के परंपरागत औजर नहीं मिलते, तो उसका कारण है कि उन्हें बनाने वाले हाथ शहरों में कारखानों में बनने वाले ऐसे औजारों को सिर पर ढोने और ट्रकों तक पहुँचाने को मजबूर हैं । वहाँ वे अपने घर से, अपनी मां, अपने परिवार से सैंकड़ों किलोमीटर दूर नर्क की जिंदगी जीने को शापित हैं, क्योंकि उन्हें न उस लकड़ी का ज्ञान रह गया है जो उन्हें पड़ोस के जंगल से मिल जाया करती थी और जिससे उनके पिता हल बनाया करते थे, न ही उन्हें उस लकड़ी को बचाने व उसके संवर्धन की आवश्यकता महसूस हो रही है। इससे यहाँ स्थानीय कौशल लुप्त होता जा रहा है, वहीँ स्थानीय संसाधनों के प्रबंधन में स्थानीय लोगों के भूमिका भी समाप्त होती जा रही है।

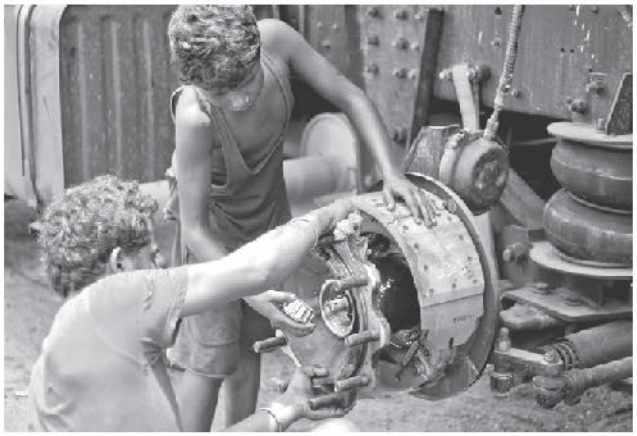

स्थानीय संसाधनों व स्थानीय कौशल की वकालत करते हुए इस लेख का उद्देश्य विकास के चक्र को वापिस घुमाना नहीं है। उसे युगानुकूल बनाते हुए भी, उसकी देशानुकूलता बनाए रखना है, हमारा समाज स्वभाव से ही उद्यमी रहा है, अब तक की सरकारी नीतियाँ व तथाकथित प्रगतिवादियों द्वारा बनाए वातावरण के कारण उसकी उद्यमिता को जबरदस्त धक्का पहुँचा है। अगर ट्रैक्टर ने हल और बैलगाड़ी को बेमानी बना दिया है, तो इसलिए क्योंकि हमारी परंपरागत उद्यमिता कहीं उनके शोर में दब कर रह गई है। आज आवश्यकता है, हमें अपने कारीगरी कौशल को फिर समझने की, उस पर गर्व करने की, कारीगर बंधु अपने भीतर छिपे हनुमान की शक्ति को स्वयं पहचानें, उसे जगाने के लिए किसी जाम्बवंत का इन्तजार न करें।

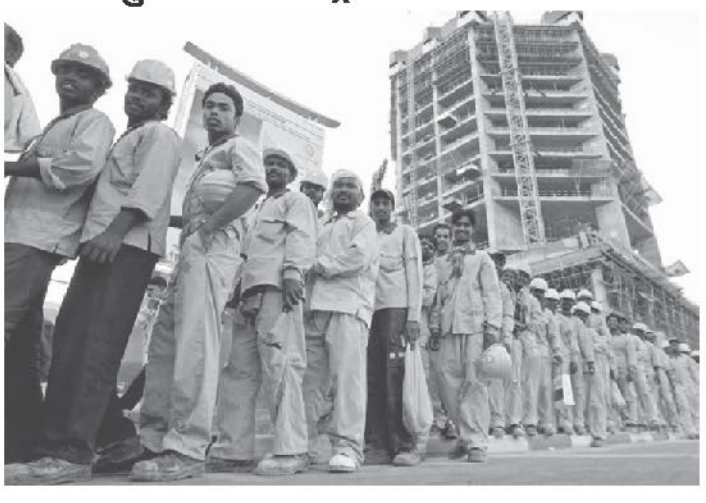

आज की आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने विविध डीग्रिओं के धारक व्यक्तियों का निर्माण किया है । पर एक अच्छे मानवसमूह का निर्माण करने में वह असमर्थ रही है ।

बापूजी का गुरुकुलम् सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनोरवी पहचान बनायेगा

आदित्यप्रसाद वीरमोहन साव (सौन्दा बस्ती, झारखण्ड)

मैं ने तथा हमारे बड़े भाई साहब श्री रामकिशोर प्रसादजी ने, अपने छोटे भाई दशरथ प्रसाद को वास्तुशास्त्र अभियन्ता (आर्किटेक) की पढ़ाई बीजापुर से करवाई, जो अभी साउदीअरब में कार्यरत हैं, और अभी ६-७ लाख रूपए प्रति माह कमाता है। फिर भी मैं अपने दोनों पुत्रों, दीक्षित और एकलव्य को तथा हमारे भाई साहब अपने पुत्र भुवनकुमार को **हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला,** रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद, गुजरात में दाखिला यह जानते हुए भी करवाया कि, यहाँ पढ़ाई पूरी होने पर किसी भी प्रकार का प्रमाण पत्र नहीं मिलेगा। मैंने चार माह तक हिन्दुस्तान के विभिन्न गुरुकुलों का भ्रमण किया, उसके बाद निर्णय कर बच्चों का दाखिला **हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला** में करवाया।

मैकॉले ने १८५३ ई. में अंग्रेजी भाषा का बिल पास करवाकर कानूनन गुरुकुलों को अवैध घोषित कर, बंद करवाकर कान्वेंट स्कूल चालू कर भारत की विद्याओं को ध्वस्त किया। आजादी के ६७ वर्षों के बाद भी भारत की वही स्थिति रहने का मुख्य कारण अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा इंग्लैंड सरकार को भेजे गये पत्रों के आधार पर 'ट्रांसफर ऑफ पावर अग्रीमेंट' (१९४५)तथा 'इंडियन एजूकेशन एक्ट' (०३-०७-१९४७) के द्वारा भारत को 'वेस्टर्न आरबिट' में बाँध कर आज तक रखा गया है।

परंतु २१वी सदी में भारत पुनः बहुत ही जल्द विश्वगुरु बनने की तैयारी में है। क्योंकि स्वामी विवेकानंद, नोस्ट्राडोमस तथा पंडित श्री राम शर्मा आचार्य ने अपनी अन्तः प्रेरणा के माध्यम से भविष्यवाणी की हैं कि, '२१वी सदी भारत की सदी होगी।' जिसके फलस्वरूप भारत पुनः आज से ५०० वर्ष पूर्व के भारत जैसा हो जाएगा। इसीलिए हम लोगों ने अपने-अपने बच्चों को हेमचंद्राचार्य संस्कृत गुरुकुल में दाखिल करवाया कि बच्चे संस्कृत की प्राचीन विद्याओं को पढ़कर पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार का काम करेंगे।

मैं बापूजी को शत-शत नमन इसलिए करता हूँ कि भारत में इस तरह का गुरुकुल, जहाँ पुरुषों के लिए ७२ कलाओं तथा स्त्रियों के लिए ६४ कलाओं पर आधारित श्रेष्ठ शिक्षा दिलवाने के क्षेत्र में विश्व में प्रथम अजूबा और सराहनीय गुरुकुल को स्थापित कर पूरे विश्व में पुनः संस्कृत भाषा को स्थापित करने तथा संस्कृत ग्रंथों में छुपी बेशकीमती खजानों को कुरेद कर विश्व कल्याण के लिए अजूबा कदम उठायें हैं। मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि, बापूजी का गुरुकुल सम्पूर्ण विश्व में अपनी अनोखी पहचान बनायेगा।

भारतवर्ष में गुरुकुल कैसे खत्म हो गए ?

कॉन्वेन्ट स्कूलों ने किया बर्बाद १८५८ में Indian Education Act बनाया गया। इसकी ड्राफ्टिंग लोर्ड मैकोले ने की थी। लेकिन उसके पहले उसने यहाँ (भारत) के शिक्षा व्यवस्था का सर्वेक्षण कराया था, उसके पहले भी कई अंग्रेजों ने भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में अपनी रिपोर्ट दी थी। अंग्रेजों का एक अधिकारी था G. W. Litnar और दूसरा था Thomas Munro दोनों ने अलग अलग इलाकों का अलग अलग समय सरवे किया था। १८२३ के आस-पास की बात है। Litnar जिसने उत्तर भारत का सर्वे किया था, उसने लिखा था कि यहाँ ९७% साक्षरता है और Munro, जिसने दक्षिण भारत का सर्वे किया था उसने लिखा कि यहाँ तो १००% साक्षरता है। और उस समय जब भारत में इतनी साक्षरता थी और मैकोले का स्पष्ट कहना था कि भारत को हमेशा-हमेशा के लिए अगर गुलाम बनाना है तो इसकी 'देशी और सांस्कृतिक शिक्षा व्यवस्था' को पूरी तरह से ध्वस्त करना होगा और उसकी जगह 'अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था' लानी होगी और तभी इस देश में शरीर से हिन्दुस्तानी लेकिन दिमाग से अंग्रेज पैदा होंगे और जब इस देश की यूनिवर्सिटी से निकलेंगे तो हमारे हित में काम करेंगे और मैकोले एक मुहावरा इस्तेमाल कर रहा है - 'जैसे किसी खेत में कोई फसल लगाने के पहले पूरी तरह जोत दिया जाता है वैसे ही इसे जोतना होगा और अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था लानी होगी।' इसलिए उसने सबसे पहले गुरुकुलों को गैरकानूनी घोषित किया, जब गुरुकुल गैरकानूनी हो गए तो उनको मिलने वाली सहायता, जो समाज की तरफ से होती थी, वो गैरकानूनी हो गयी, फिर संस्कृत को गैरकानूनी घोषित किया और इस देश के गुरुकुलों को घूम-घूम कर खत्म कर दिया, उनमें आग लगा दी, उसमें पढाने वाले गुरुओं को उसने मारा-पीटा, जेल में डाला।

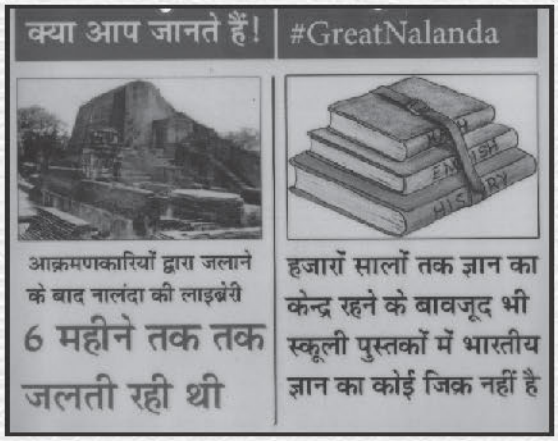

१८५० तक इस देश में ७ लाख ३२ हजार गुरुकुल हुआ करते थे और उस समय इस देश में गाँव थे '७ लाख ५० हजार, मतलब हर गाँव में औसतन एक गुरुकुल और ये जो गुरुकुल होते थे वो सब के सब आज की भाषा में 'Higher Learning Institute' हुआ करते थे। और ये गुरुकुल समाज के लोग मिलकर चलाते थे, न कि राजा, महाराजा। और इन गुरुकुलों में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। किन्तु सारे गुरुकुलों को खत्म किया गया और फिर अंग्रेजी शिक्षा को कानूनी घोषित किया गया और कलकत्ता में पहला कॉन्वेन्ट स्कूल खोला गया, उस समय इसे 'फ्री स्कूल' कहा जाता था। इसी कानून के तहत भारत में कलकत्ता यूनिवर्सिटी, बम्बई यूनिवर्सिटी, मद्रास यूनिवर्सिटी बनाई गयी और ये तीनों गुलामी के जमाने के यूनिवर्सिटी आज भी इस देश में है। और मैकोले ने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी थी, बहुत मशहूर चिट्ठी है वो। उसमें वो लिखता है कि, 'इन कॉन्वेन्ट स्कूलों से ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे और इन्हें अपने देश के बारे में, अपनी संस्कृति के बारे में, अपनी परम्पराओं के बारे में कुछ पता नहीं होगा, इनको अपने मुहावरे नही मालूम होंगे। जब ऐसे बच्चे होंगे इस देश में और, तो अंग्रेज भले ही चले जाएँ इस देश से अंग्रेजियत नहीं जाएगी।' उस समय लिखी चिट्ठी की सच्चाई इस देश में अब साफ-साफ दिखाई दे रही है और उस एक्ट की महिमा देखिये कि हमें अपनी भाषा बोलने में शर्म आती है, अंग्रेजी में बोलते हैं कि दूसरों पर रोब पड़ेगा, अरे ! हम तो खुद हीन हो गए हैं जिसे अपनी भाषा बोलने में शर्म आ रही है, दूसरों पर रोब क्या पड़ेगा। लोगों का तर्क है कि अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है किन्तु दुनिया में २०४ देश हैं और अंग्रेजी सिर्फ ११ देशों में बोली, पढ़ी और समझी जाती है; फिर यह कैसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा है ? शब्दों के मामले में भी अंग्रेजी समृद्ध नहीं, दरिद्र भाषा है। इन अंग्रेजों की जो बाईबल है वो भी अंग्रेजी में नहीं थी और ईशा मसीह अंग्रेजी नहीं बोलते थे। ईशा मसीह की भाषा और बाइबल की भाषा अरमेक थी। अरमेक भाषा की लिपि जो थी, वो हमारे बंगला भाषा से मिलती जुलती थी। समय के कालचक्र में वो भाषा विलुप्त हो गयी। संयुक्त राष्ट्र संघ जो अमेरिका में है, वहाँ कि भाषा अंग्रेजी नहीं है, वहाँ का सारा काम फ्रेंच में होता है। जो समाज अपनी मातृभाषा से कट जाता है, उसका कभी भला नहीं होता और यही मैकोले की रणनीति थी।

कम पढ़े तो गाँव छोड़ दे, ज्यादा पढ़े तो देश छोड़ दे।

अमेरिका से लौटते समय पत्रकारों ने स्वामी विवेकानंद से पूछा – 'अमेरिका की अमीरी देखने के बाद गरीबी से त्रस्त भारत के बारे में आप क्या सोचते हैं?' स्वामीजी का जवाब इतिहास में अंकित हो गया – 'अब तक मैं अपने देश की इज्जत करता था, लेकिन अब पूजा करूँगा।'

गुरुकुल की शिक्षा जीवन–विज्ञान से जुड़ी थी। या यूं कहें कि मात्र जीवन का वैज्ञानिक स्वरूप ही विद्यार्थियों को सिखाया जाता था। राजपुत्रों से लेकर सामान्य परिवारों की संतानों के साथ प्रशिक्षण और अनुशासन पालन में कोई भेदभाव नहीं होता था। खेती करना, गाय पालना, अपना भोजन स्वयं तैयार करना, जंगलों से लकड़ियाँ काट कर लाना, कुटिया लीपना या धोती–दुपट्टा पहन कर नंगे पैर घूमना, सूर्य नमस्कार करना, शिक्षा की बुनियादी बातें थी। इस शिक्षा ने अभिमन्यु, लव–कुश, श्रवणकुमार और चाणक्य पैदा किए। महावीर और गौतमबुद्ध दिए। विवेकानंद और दयानंद सरस्वती बनाए।

आज तो यह हाल है कि जो कम पढ़–लिख लेता है, वह गाँव छोड़ देता है, ज्यादा पढ़–लिख लेता है, वह देश छोड़ देता है।

आज का लाड़ला बच्चा...

पहले समय पर उठते थे,
बड़ों को नमन करते थे।
मुख से राम–राम कहते थे,
पढ़ते भी थे और
खेतों खलियानों और घरों में
खट के काम करते थे।
समय पर खाते थे, खेलते थे
और समय पर आराम करते थे।
अब उठते हैं देर से
उठते ही शिकवे करते हैं ढेर से।
'प्रणाम' की जगह
'हाय' और 'गुडमोर्निंग' कहते हैं।
आंखे मसलते उबासी लेते,
बिना मुंह धोये ही
रामू को जोर से चिल्लाकर
चाय का आर्डर देते हैं।
काम करना तो हीनता है,
अखबार के पन्ने पलटते पलटते
कितने घंटे बीत गए गिनता है।
फिर दोस्तो से बातें करने
फोन की लाईन मिलाएँ
स्कूल से ही कौन सी पिक्चर जाएं
फिर कौन से होटल में खाएं
कहाँ–कहाँ घूमने जाएँ।
मार्केट से क्या–क्या खरीद कर लाएँ,
इन्हीं सब कामों की सूची बनाएं।
जब इस तरह की दिनचर्या में
पलता है भारत का भावी कर्णधार
भारत का होनहार
आज का लाडला बच्चा।
तो इस पीढ़ी की जब निकलेगी जमात
जिससे बनेगा भावी भारत का समाज
देश कितना करेगा तरक्की
सोचकर सिहर जाता हूँ।
हे भगवान्! इनको कहीं पीसने न पड़े
फिर किसी फिरंगी की चक्की।
मेरा दर्द कह उठता है।
वतन को फिर कहीं गिरवी न रख देना नादानों!
शहीदों ने बड़ी मुश्कील से ये कर्ज चुकाए हैं,
अपनी जिन्दगी के चिराग बुझा कर
हमारे घरों के दीप जलाए हैं।

वेंटीलेटर पर हिन्दी

हिन्दी आई.सी. यू. में भर्ती है। जब भी सितम्बर में हिन्दी दिवस आता है, उसे वेंटीलेटर पर रख दिया जाता है, ताकि सरकार जनता को यह एहसास करा सके कि हिन्दी अभी जिंदा है, हिन्दी मरी नहीं है। आत्म छलना का यह सालाना जश्न पिछले साठ सालों से जारी है।

उसे क्या कहा जाए? राष्ट्रीय शर्म या अंग्रेंजों की गुलामी ?

- यदि मैं तानाशाह होता तो आज ही विदेशी भाषा में शिक्षा दिया जाना बंद कर देता। सारे अध्यापकों को स्वदेशी भाषाएँ अपनाने को मजबूर कर देता। जो आनाकानी करते उन्हें बरखास्त कर देता।

  – गांधीजी

- मुझे लगता है कि जब हमारी संसद बनेगी, तब हमें फोजदारी कानून में एक धारा जुड़वाने का आन्दोलन करना पड़ेगा। यदि दो व्यक्ति भारत की एक भाषा जानते हों और इस पर भी उनमें से कोई दूसरे को अंग्रेजी में पत्र लिखे या एक–दूसरे से अंग्रेजी में बोले तो उसे कम से कम छः महीने की सख्त सजा दी जाएगी।

  – गांधीजी

  ('स्वभाषा लाओ, अंग्रेजी हटाओ' पुस्तक से साभार)

- जो शिक्षा हमें अच्छे–बुरे का भेद करना और अच्छे को ग्रहण करना तथा बुरे का त्याग करना नहीं सिखाती, वह शिक्षा सच्ची शिक्षा नहीं है।

  – गांधीजी

- जब मैं राष्ट्रपति बनकर यहाँ आया तो हिंदी, उर्दू और गुरुमुखी के अखबार पढने की इच्छा हुई, लेकिन ये अखबार मुझे नहीं मिले। मुझसे यह कहा गया कि राष्ट्रपति भवन में केवल अंग्रेजी के अखबार आते हैं। मुझे बहुत तकलीफ हुई। आजाद भारत में राष्ट्रपति भवन में जब भारतीय भाषाओं का कोई स्थान नहीं तो देश की एकता कैसे रह सकती है?

  – पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

सुराज्य के महाअभियान में शामिल होइए

यह एक प्रमाणित तथ्य है कि कुछ सौ वर्ष पूर्व यह देश संसार का शिरमोर था। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, संगीत, कला, तकनीक, अर्थव्यवस्था, प्रशासन आदि सभी दृष्टिओं से हम अग्रणी थे। इस देश की सम्पूर्ण धरोहर को विदेशी आक्रांताओं द्वारा बार-बार बुरी तरह रौंद दिये जाने की भरसक कोशिशों के बाद भी मेहरौली का सीना ताने खड़ा बिना जंग लगा लौह स्तंभ, देश के कोने-कोने में बिखरे पड़े वास्तु कला के उत्कृष्ट नमूने, चरक-सुश्रुत में वर्णित आधुनिक चिकित्सा विज्ञान को भी चुनौती देने वाला शल्य-क्रिया विज्ञान, आज भी जहाँ-तहाँ दिख जाने वाला लोककलाओं का अद्‌भुत संसार, ढाका के मलमल सरीखे वस्त्रों की बानगी-आदि अनगिनत एतिहासिक-तथ्य अगर आज भी अपनी गौरवगाथा सुनाते दिख रहे हैं, तो कल्पना कीजिए कि विदेशी आक्रमणों से पूर्व भारत का अतीत कितना वैभवशाली रहा होगा।

हॉर्न धीरे बजाएं देश सो रहा है

लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि विदेशी लुटेरों के चलते महादानीयों का यह देश भिखारी बन चुका है। खास बात यह है कि लूट के लंबे इतिहास में भी हमारी सबसे ज्यादा लूट अंग्रेजों ने की। अंग्रेजों की गुलामी के दौर में सम्पत्ति-संसाधनों के साथ-साथ हमारी संस्कृति को भी तबाह करने की साजिश रची गई। अपने साम्राज्य की जड़ें मजबूत करने के लिए अंग्रेजों ने भारत की सारी व्यवस्थाओं को ही अपने अनुसार बदलने की मुहिम चलायी। इस मुहिम में वे काफी हद तक सफल भी रहे। अगर कुछ कसर बाकी रह गया था, तो आजादी के बाद अंग्रेजी मानसिकता में रचे-बसे हमारे रहनुमाओं ने उसे अब पूरा कर दिया है। ऐसा लगता है जैसे- अंग्रेजों के मानसपुत्रों ने आजादी के दीवानों के लाखों बलिदानों को बेमानी बना दिया हो।

कटु सत्य यह है कि हम आजादी के भ्रम में जी रहे हैं। अंग्रेज चाहते थे कि हम मानसिक रूप से गुलाम हो जाएँ, तो उन्हें बंदूकों-तोपों की भाषा न बोलनी पड़े, सो अब वही हो गया है। हमारा शासन-प्रशासन और विकास का संपूर्ण ढाँचा अब भी लगभग जस-का-तस है। इसी का नतीजा है कि आज हम कहीं ज्यादा बड़ी लूट के शिकार हो रहे हैं। जब हम एक ईस्ट इंडिया कंपनी की जेब अनिच्छा के बावजूद अंग्रेजी कोड़ों-बंदूकों के डर से भरते थे, पर अब मानसिक गुलामी के वशीभूत हम हजारों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की जेब स्वेच्छा से भर रहे हैं।

देश लगातार कंगाल हो रहा है और नतीजे के रूप में बेरोजगारी-भुखमरी का भयावह दृश्य सामने है। विकास के पश्चिमी तौर-तरीके के चलते

संस्कृति का संकट भी अब भयानक रूप में दिखने लगा है। हिंसा, भ्रष्टाचार, बलात्कार, देश–समाज के प्रति संवेदनहीनता जैसी ढेरों समस्याएँ इसी की अनिवार्य परिणतियाँ है।

सवाल यह है कि क्या इस देश के वजूद को तिल–तिल कर समाप्त होते हुए हम देखते रहेंगे ? संसाधनों के अकूत भंडार से समृद्ध भारत की धरती पर रहते हुए और मेहनत कश होते हुए भी क्या इस देश की एक बड़ी आबादी फुटपाथों पर जिंदगी गुजारने और भूख से पेट मरोड़ने को ही हमेशा अभिशप्त रहेगी? ऋषि–मुनिओं के इस देश में क्या अब माइकल जैक्सनों और मेडोनाओं के कार्टून ही तैयार होते रहेंगे?

अगर आप देश की इस वर्तमान दिशा और दशा से संतुष्ट हैं तो हमें आपसे कुछ नहीं कहना है। लेकिन यदि आप भी हमारी तरह चाहते हैं कि यह राष्ट्र स्वावलम्बी बनें, यहाँ का समाज खुशहाल हो, हर तरफ अमन–चैन हो, दया–करुणा–ईमानदारी–संयम का सांस्कृतिक प्रवाह इस देश में फिर कायम हो, तो हमें आपकी जरूरत है। हमारी अपील है कि आप भी सच्चे सुराज्य के लिए चल रहे इस महायज्ञ में शामिल होइए।

मुल्ला नसरुद्दीन एक जहाज में सफर कर रहे थे। जहाज में छेद हो गया। भगदड़ मच गयी। लेकिन मुल्ला ऐश फरमा रहे थे। जब उनसे कहा गया कि जहाज डूब रहा है, तो मुल्लाजी ने कहा कि जहाज कल डूबता हो, तो आज डूब जाए। जहाज कौन–सा मेरे बाप का है ?

यह रवैया भारत में रहने वाले लगभग हर नागरिक का है। ऐन उनकी आँखों के सामने देश डूब रहा है। लेकिन वह मुल्ला नसरुद्दीन की तरह अपनी दुनिया में खोया हुआ है।

यदि भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि–व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य–व्यवस्था तथा न्याय–व्यवस्था का सम्पूर्ण स्वदेशीकरण हो जाए तो यह देश स्वावलंबी बन जाएगा, बेरोजगारी की समस्या नहीं रहेगी और सच्चे अर्थों में हमें स्वराज्य प्राप्त होगा। इस देश के विकास का ढाँचा, इस देश के सांस्कृतिक मूल्यों भौगोलिक परिस्थितियों, संसाधनों और यहाँ की जनता की समझ व जरूरतों को ध्यान में रखकर ही बनाया जाना चाहिए, तभी अनगिनत समस्याओं से मुक्ति मिल पाएगी और एक बार फिर हम दुनिया के मार्गदर्शक की भूमिका में आ सकेंगे।

जिनमें अकेले चलने के हौंसले होते हैं ;
उनके पीछे एक दिन काफिले होते हैं।

✦✦✦

❖ संपर्क सूत्र ❖

मुंबई

विजयभाई बाबुलालजी शाह

जे.बी एन्ड ब्रधर्स प्रा.लि.

भारत डायमंड बुर्स FC-3011/12, तीसरी मंजील

ब्रान्द्रा कुर्ला कोम्पलेक्ष, ब्रान्द्रा (पूर्व) - मुंबई 400 051

(022) 40342222 98200 31848

सुरत

राजेशभाई दलपतभाई शाह

स्टार रेईस

शिवम चेम्बर्स, खांड बाजार वराछा रोड, सुरत - 395006

(0261) - 255 4444, 9824101711

चेन्नई

विमलचंदजी त्रिकमचंदजी तलावत

तलावट एन्टरप्राईझ

10, नारायण मुडालीलेन चैन्नई-79

(044) - 25387136, 9790747421

वडोदरा

भरतकुमार मनसुखलाल शाह

102, आगम फ्लेट,

मेहुल जैन सोसोयटी के पास

सुभानपुरा, वडोदरा - ३९००२३

(0265) - 2291544, 93750 99975

भावनगर

सुनिलभाई रमणीकलाल दोशी

104, अखंड आनंद फ्लेट

शशीप्रभु चोक, रुपाणी सर्कल,

भावनगर - 364002

9428995699, 7016167168

अहमदाबाद

अखिलभाई उत्तमभाई शाह - 7874846715

संचालक - हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला (गुरुकुलम्)

हीराजैन सोसायटी के पास, रामनगर, साबरमती अहमदाबाद - ५,

कार्यालय - 079- 27501944, 9033543543, 8866020402

संस्थापक कुलपति

उत्तमभाई जवानमलजी शाह

हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला ॥ गुरुकुलम ॥ साबरमती

સપ્તક સમારોહની તેરમી અને અંતિમ સૂરરાત્રિ

સંગીત કળા છે, અનુરાગ છે, સમર્પણ છેઃ એ મિલકત નથી- પં.રાજન-સાજન મિશ્રા

ધન્ય છે શિષ્યો, વાલીગણ અને મશાલચી જેવા ગુરુઓ!

સપ્તક સંગીત સમારોહમાં વિવિધ વાદ્ય-પ્રસ્તુતિ કરતા 'ગુરુકુલમ્'ના વિદ્યાર્થીઓ

જાતિ એટલે જેમાંથી રાગ જન્મે તે-જાતિ આધારિત રાગ. જાતિઓમાં પુનઃ જાગરણ થાય એ હેતુથી વિવિધ વાદ્યોનો પરિચય ઉત્સુકોને કરાવવા માટે શાળાના કિશોરોએ તીનતાલ અને આદિતાલમાં સમૂહવાદન કર્યું. ભારતીય પરંપરાને સાચવવાના મનસૂબા સાથે યશપાલ મહેતા સિતાર સાથે, ઋષભ શાહ સંતૂર સાથે, મિત શાહ વાંસળી સાથે, વત્સલ શાહ વાયોલિન સાથે, તીર્થ શાહ કાંસ્ય જલતરંગ સાથે, રાજ શાહ પખાવજ સાથે અને કુશલ શાહ તબલાં સાથે ઉપસ્થિત થયા અને સ-રસ, ધમાકેદાર પ્રસ્તુતિ કરી. અનુક્રમે તેમના ગુરુજીઓ નામ લેવાં જ પડને! ગુરુ સર્વશ્રી મહેમૂદ ખાન, જયંતિભાઈ શર્મા, કેયુરભાઈ સોની, ગૌરવભાઈ પાઠક, હેમદીપભાઈ શર્મા, હેમંતભાઈ ભટ્ટ અને જાજ્વલ્યભાઈ શુકલ.

સપ્તક સંગીત સમારોહમાં ઉસ્તાદ ઝાકીર હૂસેન અને પંડિત રાહુલ શર્મા સાથે મંચસ્થ ગુરુકુલમ્‌ના વિદ્યાર્થીઓ

शुभेच्छक

शाहीबाग, गीरधरनगर के सान्निध्यमें

2 & 3 BHK Lavish Apartments

JAY MANGAL RESIDENCY

PROJECT BY

JAY MANGAL REALITIES

MUDRA MUDRAGROUP

Booking Contact :
+91 74059 10493

स्थल : जय मंगल रेसीडेन्सी
गीरधरनगर सोसायटी के पास,
ओरचीड ग्रीन के सामने,
शाहीबाग, अहमदाबाद - ४

Drop off Zone	Indoor Games	Jain Temple	Multipurpose Hall	Garden
Children Play Area	Yoga	Senior Citizen Seating	Water Fountain	Walk Way
Library	Gym	Panchakarma Center	Multipurpose Court	Gazebo

आयुष्कामीय®
Desire for healthy life

Vaidya Aditya Parekh
(B.A.M.S)

Treatments available for :

- Panchkarma
- Arthritis
- Asthma
- Migraine
- Depression
- Skin Diseases
- Diabetes
- Infertility
- Cancer
- Diabetes
- Herpes
- Kidney Stone
- Garbh Sanskar
- Blood Pressure
- Liver Problem
- Obesity
- Gynec Problem
- Gastric Problem

Ayushkamiya Ayurvedic Consultancy

A- 111, Sopan Complex, Nr. ICICI Bank, New C. G Road,Chandkheda, A'bad.
C : 07923290020, 7405040020 E : info@ayushkamiya.in W : www.ayushkamiya.in

शुभेच्छक

हाथ से बने हुए कांसे के बर्तन आदी ।

कांस्यम् बुद्धिवर्धकम् : भावप्रकाश: ।। अर्थात् कांसे बर्तन में खाने से बुद्धि का विकास होता है । कांसे के बर्तनो में भोजन करना आरोग्यप्रद, अंक्रमण, रक्त तथा त्वचा रोंगो से बचाव करने वाला बताया गया है। कब्ज और अम्लपित्त की स्थिति में इनमें खाना फायदेमंद होता है । इन पात्रों में खाद्य पदार्थों का सेवन करना रुचि, बुद्धि, मेघा वर्धक और सौभाग्य प्रदाता कहा गया है तथा यकृत, प्लीहा के रोगो में फायदेमंद है। **प्राचीन समय में निर्माण :** आयुर्वेद के रस शास्त्रे के ग्रंथो में लगभग आठ भाग ताम्र तथा दो भाग रांगा को मिलाकर कांस्य बनाया जाता था। **कांस्य का आयुर्वेद के प्रमुख ग्रंथो चरक संहिता, सुश्रुत :** सहिता एवं अष्टांग ह्दय में बर्तन, घंटी, मूर्तियो के साथ रस शास्त्र में औषध के रुप में अनेक जगह उल्लेख है । इस शास्त्र के आयुर्वेद प्रकाश ग्रंथ में कांस्य का निर्माण, प्रकार, शोधन, गुण तथा औशथ बनाने के बारे में बताया गया है।

सामाजिक महत्व : कांसे के पात्रो का समाजिक समारोहों व समुदायों में काफी महत्व है। शादी–विवाह के मौके पर आज भी कन्या पक्ष की और से वर पक्ष को कांस्य के पात्र में धन, धान्य आदि भरकर सम्मानपूर्वक भेट करना शुभ माना जाता है। **कांस्य के गुण :** चिकित्सा के रुप में कृमि रोग, चर्म रोग, कुष्ट रोग, तथा नेत्र रोगों में गुणकारी माना गया है।

कांस्य का धार्मिक महत्व : कांस्य का उल्लेख धार्मिक कार्यो में प्राचीन काल से मिलता है। मंदिर की घंटिया एवं बडे घंट कांस्य से बनाए जाते रहे है । पूजा पाठ एवं धार्मिक कार्यों में कांसे की थाली, लोटे आदि का प्रयोग करना शुभ माना जाता है ।

तांबे के बर्तन : डॉक्टर्स व वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित हुआ है की हर मानव शरीरमें करीब १००–१५० मी.ग्रा. तांबा है, जिसमें से ६५ मी.ग्रा. मांसपेशियों और २३ मी.ग्रा. हड्डीमें स्थित है, बाकी यकृत व सिरम में वृद्धि होती है। शरीर में तांबे की कमी के कारण कई बीमारियां होती है । तांबे के बर्तनों मे जमा हुआ पानी जीवन के लीए अमृत समान है।

(हाथ से कांसा बनाने की प्रक्रिया देखने हेतु पधारे....)

100% शुद्ध चांदी के सिक्के व बर्तन एवं 92.5% शुद्धता वाले हाथ नकशी की कलात्मक चीजों के उत्पादक

विरल अमीत शाह नी पेढी

VIRAL AMIT SHAH NI PEDHI

Copper Utensils, Bronze Kitchenware & Silver Hand-carved Articles

1,2,3 Mahalaxmi Muni. Market, Between Parimal Underbridge
& Mahalaxmi Cross Roads, SBI Bank Lane, Paldi, Ahmedabad-380007.

PHONE : +91-79-2665 1166 / 2665 1633, CELL : 98248 22933, 94260 20333

Email : vasnp123@gmail.com **Website :** www.vasnphandicraft.com

(Dealers invited from all over India)

शुभेच्छक

STAR RAYS

delighting you since 1980

www.starrays.com

SIZE
0.30cts To 5.00cts above

COLOR
D E F G H I J K L M N O-P

CLARITY
FL IF VVS1 VVS2 VS1 VS2 SI1 SI2 SI3 I1 I2 I3

SHAPE
Round, Marquise, Princess, Heart, Pear, Ova, Emerald, Radiant, Ascher, Cushion, Trilliant

SIGHTHOLDER
OF THE DE BEERS GROUP OF COMPANIES

Certified Member
0000 0551
responsiblejewellery.com

CANADAMARK
Approved Manufacturer

DOMINION DIAMOND CORPORATION

भारत के वर्तमान पंतप्रधान श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने, जब वे गुजरात राज्य के मुख्य–प्रधान थे, तब 'गुरुकुलम् ट्रस्ट' को जो पत्र गुजराती भाषा में लिखा था, उसका मूल स्वरूप यहाँ प्रकाशित है और उसी का हिन्दी–रूपांतरण हिन्दी भाषी सुज्ञजनों के लिये प्रस्तुत है।

सत्यमेव जयते

સંદેશ

માનવીને માનવ બનાવે તે શિક્ષણ.

કેળવે તે કેળવણી.

ભારતીય શિક્ષણ પ્રણાલીનુ આ ધ્યેયબિન્દુ છે.

ગુરૂકુલમ શિક્ષણ પધ્ધતિએ આ ઉદ્દેશને હાર્દરૂપ સ્વીકારેલો છે.

ગુલામીકાળમાં આપણે આ શૈક્ષણિક પથથી ચલિત થઈ ગયા.

પરિણામે આપણી શિક્ષણ પ્રણાલીમાં વિકૃત્તિઓનો પ્રભાવ અને આપણાં જ સંતાનોના સંસ્કાર ઘડતરની સમસ્યાથી સમાજ પીડાઈ રહ્યો છે. આનો શ્રેષ્ઠ વિકલ્પ અપનાવવા સમાજહિત ચિન્તકો અને શિક્ષણ શ્રેયાર્થીઓમાં સ્વાન્ત:સુખાય જાગૃતિ આવી રહી છે, તે ભાવિ પેઢી માટે સુખદ સંકેત સમાન છે.

આ સંદર્ભમાં,

અમદાવાદ-સાબરમતી વિસ્તારમાં **વિમુક્તિ વિશ્વવિદ્યાલય સંકુલ**નો સંકલ્પ **ગુરૂકુલમ્ ટ્રસ્ટ** દ્વારા સાકાર થયો છે તે જાણી મને અત્યંત આનંદ થયો.

૧૩મી નવેમ્બર ૦૫ રવિવારે યોજાઇ રહેલા ઉદ્‌ઘાટન સમારોહની સફળતા માટે મારી અનેક શુભકામના.

નરેન્દ્ર મોદી

પ્રતિ,
અધ્યક્ષશ્રી
વિમુક્તિ વિશ્વવિદ્યાલય
ગુરૂકુલમ ટ્રસ્ટ,
હીરાજૈન સોસાયટી પાસે,
રામનગર, સાબરમતી,
અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૫.

નરેન્દ્ર મોદી
મુખ્ય મંત્રી, ગુજરાત રાજ્ય

सत्यमेव जयते

संदेश

मनुष्य को मनुष्य बनाऐ उसी का नाम है शिक्षा।
जो शिक्षा दे उसी का नाम है शिक्षक।
भारतीय शिक्षा प्रणाली का ध्येय बिन्दु यही है।

गुरुकुलम् शिक्षा–पद्धति ने इसी उद्देश्य को हार्द के रूप में स्वीकार किया है। अंग्रेजों के शासन काल में हम इस शैक्षणिक–पथ से विचलित हो गए थे।

परिणामतः हमारी शिक्षा–प्रणाली में विकृतिओं का प्रभाव पड़ा और हमारे बच्चों में संस्कार–प्रदान की समस्या से समाज आज पीड़ित है। इस का श्रेष्ठ विकल्प तैयार करने हेतु समाज–हित चिन्तक एवं शिक्षाविदों में स्वान्तः सुखाय जागृति आ रही है। वह नई पीढ़ी के लिए सुखदायी संकेत है।

इसी सन्दर्भ में ...

अहमदाबाद – साबरमती में विमुक्ति विश्व–विद्यालय–संकुल का संकल्प 'गुरुकुलम् ट्रस्ट' द्वारा साकार हुआ है, यह जानकर मुझे अत्यंत आनंद हुआ।

१३ नवेम्बर २००५ रविवार के दिन आयोजित उद्‌घाटन समारोह की सफलता हेतु मेरी ओर से ढेर सारी शुभकामनाएँ...।

नरेन्द्र मोदी

प्रति, अध्यक्ष श्री
विमुक्ति विश्व विद्यालय
'गुरुकुलम् ट्रस्ट'
हीरा जैन सोसायटी के पास में,
रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद –३८०००५

Rajendra Graphics, Thane- 07738408740

दाल-रोटी : जुलाई, सितम्बर-२०१६

प्राचीन भारत के पुनर्जागरण का शंखनाद !

।। गुरुकुलम् ।।

जहाँ गढ़ी जा रही हैं, भारत के पुनर्निर्माण की प्रतिभाएँ!

प्रकाशक : अखिल उत्तमभाई शाह - 7874846715
संचालक - श्री हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला गुरुकुलम्,
रामनगर साबरमती, अहमदाबाद - ३८०००५